खण्ड - 'च' (व्याकरण)

1 अनुवाद

(8 अंक)

एक भाषा को दूसरी भाषा में परिवर्तित करना अनुवाद कहलाता है। संस्कृत में वाक्यों के संगठन के लिए कोई निश्चित नियम नहीं है। जैसे – 'रामः गृहं गच्छति' वाक्य ठीक है तथा गृहं गच्छति रामः भी सही है, किन्तु सरलता के लिए क्रमशः कर्त्ता, कर्म और तब अन्त में क्रिया रखी जाती है। इसलिए किसी भी वाक्य का अनुवाद करते समय उसके कर्त्ता, कर्म और क्रिया तथा अन्य कारकों को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।

संस्कृत में कोई भी शब्द विभक्ति चिह्नरहित नहीं प्रयुक्त होता है तथा इसकी क्रियाओं में लिंग-भेद नहीं होता, तीनों लिंगों में क्रिया समान हो सकती है।

अनुवाद के नियम

(1) हिन्दी में एकवचन और बहुवचन ये दो ही वचन होते हैं, किन्तु संस्कृत में एकवचन, द्विवचन और बहुवचन– ये तीन वचन होते हैं।

(2) हिन्दी की तरह संस्कृत में भी कर्त्ता और क्रिया प्रथम पुरुष (अन्य पुरुष), मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष के होते हैं।

(3) संस्कृत में तीन वचनों के कारण तीनों पुरुषों में प्रत्येक क्रिया के प्रत्येक काल में $3 \times 3 = 9$ रूप होते हैं। जैसे लिख, (लिखना), वर्तमान काल (लट् लकार) में लिखति, लिखतः, लिखन्ति, लिखसि, लिखथः, लिखथ, लिखामि, लिखावः, लिखामः, ये नौ रूप हैं।

(4) हिन्दी की तरह संस्कृत में भी कर्त्ता, कर्म, करण आदि सात कारक होते हैं, किन्तु उन्हें प्रथमा, द्वितीया, तृतीया आदि कहा जाता है। संस्कृत में कारकों को विभक्ति कहते हैं। नीचे की तालिका में उन्हें इस प्रकार देखा जा सकता है–

विभक्ति	**कारक**	**चिह्न**
प्रथम	कर्त्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से, द्वारा (सहायता)
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए (को)
पंचमी	अपादान	से (अलग होना)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, की, के, रा, री, रे
सप्तमी	अधिकरण	में, पर
सम्बोधन	सम्बोधन	हे, ओ, अरे, ए आदि।

(5) संस्कृत में तीनों पुरुषों में कर्त्ता के ये नौ रूप होते हैं–

पुरुष	**एक वचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	सः (वह)	तौ (वे दोनों)	ते (वे सब, लोग)
मध्यम पुरुष	त्वम् (तू तुम)	युवाम् (तुम दोनों)	यूयम् (तुम सब लोग)
उत्तम पुरुष	अहम् (मैं)	आवाम् (हम दोनों)	वयम् (हम सब, लोग)

ये नौ कर्त्ता के रूप में आते हैं। इन्हीं के आधार पर प्रत्येक काल की क्रिया के नौ रूपों का प्रयोग किया जाता है।

(6) कर्तृवाच्य वाक्य में क्रिया का प्रयोग कर्त्ता के अनुसार होता है अर्थात् कर्त्ता जिस पुरुष और जिस वचन का होगा, क्रिया भी उसी पुरुष और वचन में होगी। क्रिया जिस काल की हो, उसी काल का रूप लिखा जाता है। जैसे-वह जाता है–यहाँ कर्त्ता 'वह' (सः) प्रथम पुरुष एकवचन का है, अतः उसके अनुसार क्रिया प्रथम पुरुष एकवचन की होगी। 'जाता है' क्रिया वर्तमान काल (लट् लकार) की है। अतः 'गम्' धातु के 'लट्' लकार (वर्तमान काल) का रूप प्रयुक्त होगा, 'गम्' धातु के लट् लकार (वर्तमान काल) के प्रथम पुरुष एकवचन का रूप होता है–गच्छति। इसलिए अनुवाद होगा 'सः गच्छति' (वह जाता है)। इसी तरह अन्य वाक्यों को समझना चाहिए।

(7) संस्कृत में क्रिया के काल को व्यक्त करने के लिए निम्नलिखित लकारों का प्रयोग होता है–

1. वर्तमान काल-लट् लकार। 2. भूतकाल-लङ् लकार।
3. भविष्यत् काल-लृट् लकार। 4. आज्ञासूचक-लोट् लकार।
5. विधिसूचक-विधिलिङ् लकार।

वर्तमान, भूत, भविष्य आदि कालों को सूचित करने के लिए, प्रयुक्त लकारों का रूप इस प्रकार होता है– जैसे-पठ् (पढ़ना) लट्लकार (वर्तमानकाल)।

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

इसी प्रकार वद् (बोलना), रक्ष् (रक्षा करना), हस् (हंसना), खाद् (भोजन करना), नम् (प्रणाम करना), गम् (जाना), पच् (पकाना), आदि धातुओं के रूप होते हैं।

ऊपर बताये गये 9 कर्त्ता और प्रत्येक काल की क्रिया के 9 रूपों का प्रयोग इस प्रकार देखा जा सकता है–

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	सः पठति	तौ पठतः	ते पठन्ति
	(वह पढ़ता है)	(वे दोनों पढ़ते हैं)	(वे लोग, पढ़ते हैं)
मध्यम पुरुष	त्वं पठसि	युवां पठथः	यूयं पठथ
	(तुम पढ़ते हो)	(तुम दोनों पढ़ते हो)	(तुम सब लोग पढ़ते हो)
उत्तम पुरुष	अहं पठामि	आवां पठावः	वयं पठामः
	(मैं पढ़ता हूँ)	(हम दोनों पढ़ते हैं)	(हम सब लोग पढ़ते हैं)

(8) ऊपर कहे गये मध्यम पुरुष तथा उत्तम पुरुष के 6 कर्त्ताओं को छोड़कर शेष जितने कर्त्ता होते हैं उनके साथ प्रथम पुरुष की क्रिया का प्रयोग होता है। जैसे छात्रः पठसि (छात्र पढ़ता है) कृष्णः पठति (कृष्ण पढ़ता है), बालकः पठन्ति (लड़के पढ़ते हैं), भवान् पठसि (आप पढ़ते हैं), कः पठति (कौन पढ़ता है), गजः गच्छति (हाथी जाता है) आदि।

इस प्रकार कर्त्ता और क्रिया को जोड़ा जाता है। इनके अतिरिक्त वाक्य में जितने शब्द आते हैं उनका प्रयोग उनके कारकों के अनुसार होता है।

(9) अनुवाद करते समय सबसे पहले वाक्य का कर्त्ता खोजना चाहिए। कर्तृवाच्य में क्रिया के पहले कौन लगाने से उत्तर में आनेवाली वस्तु 'कर्त्ता' होती है। फिर कर्त्ता यदि एकवचन हो तो प्रथमा विभक्ति के एकवचन का रूप, द्विवचन हो तो 'प्रथमा' के द्विवचन का रूप और बहुवचन हो तो प्रथमा के बहुवचन का रूप निश्चित करना चाहिए। इसके बाद कर्त्ता के पुरुष पर ध्यान देना चाहिए। कर्त्ता के पुरुष और वचन जान लेने पर क्रिया के काल का निश्चय करना चाहिए। इसके बाद क्रिया के उस काल के रूपों में से कर्त्ता के पुरुष तथा वचन वाला एक रूप छाँटकर लिख देना चाहिए। इसके बाद वाक्य के अन्य शब्दों के कारक तथा वचनों के अनुसार रूप भी यथास्थान लिख देना चाहिए।

(10) क्रिया का सामान्य रूप 'धातु' कहलाता है, यथा–गच्छति, पठसि, अपठत्, पठेत् आदि क्रियाओं में गच्छ, (गम्), पठ्, धातु हैं। ये सब धातु तीन प्रकार की होती हैं—परस्मैपद, आत्मनेपद तथा उभयपद। परस्मैपद धातुओं में तिप्, तस्, झि। सिप्, थस्, थ। मिप्, वस्, मस् प्रत्ययों का तथा आत्मनेपद धातुओं में त, आताम्, झ। थास्, आथाम्, ध्वम्, इट्, दहिङ्, महिङ्, प्रत्ययों

का प्रयोग होता है। विशेष नियमानुसार इन प्रत्ययों के स्वरूप में भी कुछ परिवर्तन होता है। भिन्न-भिन्न प्रत्ययों के जोड़ने से धातु के विविध रूप बनते हैं।

लकारों के आधार पर अनुवाद के नियम

1. लट् लकार (वर्तमान काल)

नियम 1. वर्तमान काल में कर्तृवाच्य के कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है और उसी के अनुसार क्रिया प्रयुक्त होती है। यथा–

(1) श्याम पुस्तक पढ़ता है। श्यामः पुस्तकं पठति।
(2) सभी छात्र विद्यालय जाते हैं। सर्वे छात्राः विद्यालयं गच्छन्ति।
(3) तुम नगर कब जाते हो? त्वं नगरम् कदा गच्छसि?
(4) हम दोनों गर्म जल पीते हैं। आवाम् उष्णं जलं पिबावः।
(5) मैं विद्यालय क्यों जाता हूँ? अहं विद्यालयं किं गच्छामि?

नियम 2. जब वाक्य में दो कर्त्ता होते हैं और 'च' से जुड़े होते हैं तो क्रिया द्विवचन की होती है। यथा–

(1) राम और श्याम बाजार जाते हैं। रामः श्यामश्च आपणं गच्छतः।
(2) सीता और गीता खाना खाती हैं। सीता गीता च भोजनं खादतः।

नियम 3. जब वाक्य में दो कर्त्ता 'वा' (अथवा) से जुड़े होते हैं तो क्रिया द्विवचन की न होकर एकवचन की होती है। यथा–

राम अथवा मोहन बाजार जाता है। रामः मोहनः वा आपणं गच्छति।

नियम 4. यदि मध्यम पुरुष के साथ प्रथम पुरुष का कर्त्ता हो तो क्रिया मध्यम पुरुष द्विवचनान्त होती है और यदि एक से अधिक कर्त्ता हों तो क्रिया मध्यम पुरुष बहुवचनान्त होती है। यथा–

(1) तुम और श्याम जाते हो। त्वं श्यामः च गच्छथः।
(2) दिनेश और तुम दोनों जाते हो। दिनेशः युवां च गच्छथ।

इसी प्रकार यदि उत्तम पुरुष के कर्त्ता के साथ प्रथम पुरुष एवं मध्यम पुरुष के कर्त्ता हों तो क्रिया उत्तम पुरुष की वचनानुसार होगी। यथा–

(1) मैं और राम जाते हैं। अहं रामश्च गच्छावः।
(2) सुरेश, तुम और मैं जाते हैं। सुरेशः त्वं अहं च गच्छामः।
(3) मैं, तुम और वे सब पढ़ते हैं। अहं त्वं ते च पठामः।

नियम 5. यदि कई कर्त्ता 'वा' अथवा 'या' से जुड़े होते हैं, तो क्रिया अपने सबसे निकट कर्त्ता के पुरुष तथा वचन के अनुसार होती है— यथा

(1) सोहन अथवा तुम जाते हो। सोहनः त्वं वा गच्छसि।
(2) तुम अथवा मोहन जाते हो। त्वं मोहनः वा गच्छति।
(3) मैं अथवा तुम जाते हो। अहं त्वं वा गच्छसि।

नियम 6. संस्कृत में आप प्रथम पुरुष का कर्त्ता है। भवान् (आप) भवन्तौ (आप दोनों) भवन्तः (आप सब) प्रथम पुरुष पुँल्लिंग के कर्त्ता हैं, जबकि भवति (आप) भवत्यौ (आप दोनों) भवत्यः (आप सब) प्रथम पुरुष स्त्रीलिंग के कर्त्ता हैं। जैसे– आप सब जाते हैं = भवन्तः गच्छन्ति। आप सब जाती हैं = भवत्यः गच्छन्ति।

नियम 7. अव्यय या विकाररहित शब्दों के योग में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे – कृष्णः इति प्रसिद्धः। यहाँ पर इति अव्यय के कारण कृष्णः में प्रथमा विभक्ति है।

आदर्श वाक्य

1. त्वं पठसि – तुम पढ़ते हो, पढ़ती हो।
2. युवां पठथः – तुम दोनों पढ़ते हो, पढ़ती हो।

3. यूयं पठथ	–	तुम सब या तुम लोग पढ़ते हो, पढ़ती हो।
4. त्वं रामश्च गच्छथः	–	तुम और राम जाते हो।
5. युवां रामः हरिश्च गच्छथ	–	तुम, राम और हरि जाते हो।
6. यूयं महेशः सुरेशश्च गच्छथ	–	तुम लोग, महेश और सुरेश जाते हो।
7. रामः कृष्णाश्च पठतः	–	राम और कृष्ण पढ़ते हैं।

2. लङ् लकार (भूतकाल)

नियम 1. जो काम बीते हुए समय में हो चुका है, उस काल (समय) को भूतकाल कहते हैं। भूतकाल के लिए संस्कृत में लङ् लकार का प्रयोग होता है।

नियम 2. कभी-कभी वर्तमान काल के प्रथम पुरुष की क्रिया में 'स्म' जोड़कर भूतकाल व्यक्त किया जाता है। यह प्रायः 'था' के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे – पठसि स्म = पढ़ रहा था। हसति स्म = हँसता था।

आदर्श वाक्य

1. छात्रः अगच्छत्	- छात्र चला गया	(पुंल्लिङ्ग)।
2. छात्रा अगच्छत्	- छात्रा चली गयी	(स्त्रीलिङ्ग)।
3. फलम् अपतत्	- फल गिरा	(नपुंसकलिङ्ग)।
4. सः अपश्यत्	- उसने देखा	(पुंल्लिङ्ग)।
5. यूयम् अपतत्	- तुम लोग गिर गये	

3. लृट्लकार (भविष्यत्काल)

नियम 1. जब कोई काम आगे आने वाले समय में होता है, तब वह भविष्य काल में होता है और भविष्यकाल में ल्रट्लकार का प्रयोग होता है? इसके रूप लट्लकार के समान होते हैं केवल 'ति' 'त' आदि प्रत्ययों के पहले 'स्य' जुड़ जाता है। जैसे– पठति-पठिष्यति।

आदर्श वाक्य

1. सः पठिष्यति	- वह पढ़ेगा।	(पुंल्लिङ्ग)।
2. सा पठिष्यति	- वह पढ़ेगी।	(स्त्रीलिङ्ग)।
3. फलं पतिष्यति	- फल गिरेगा।	(नपुंसकलिङ्ग)।
4. रामः श्यामश्च गमिष्यतः	- राम और श्याम जायेंगे।	
5. श्यामः हरिः, वा भक्षयिष्यति	- श्याम या हरि खायेगा।	

4. लोट्लकार (आज्ञार्थक)

नियम 1. लोट्लकार का प्रयोग आज्ञा, इच्छा, प्रार्थना, अनुमति आशीर्वाद आदि अर्थों में होता है।

नियम 2. प्रथम पुरुष में इस लकार का प्रयोग प्रायः इच्छा प्रार्थना अर्थ में होता है।

नियम 3. मध्यम पुरुष में इसका प्रयोग आज्ञा, आशीर्वाद अर्थ में होता है। कभी-कभी आज्ञा में 'तुम' कर्ता छिपा रहता है। ऐसी दशा में क्रिया छिपे हुए कर्त्ता के अनुसार मध्यम पुरुष की होती है।

नियम 4. उत्तम पुरुष में इसका प्रयोग इच्छा और प्रश्न अर्थ में होता है।

आदर्श वाक्य

1. सः लिखतु	–	वह लिखे	(पुंल्लिङ्ग)।
2. सा पठतु	–	वह पढ़े	(स्त्रीलिङ्ग)।

3. भवान् आगच्छत्	–	आप आयें	(प्रार्थना)।
4. त्वं पठ	–	तुम पढ़ो	(आज्ञा)।
5. चिरंजीवीभव	–	दीर्घायु हो	(आशीर्वाद)।

5. विधिलिङ् (चाहिए के अर्थ में)

नियम 1. विधिवाक्य (जिसमें 'चाहिए' शब्द का प्रयोग होता है)। इच्छा प्रकट करना, अनुमति, प्रार्थना, सम्भावना, सामर्थ्य प्रकट करना इत्यादि अर्थों में तथा यदि के साथ विधिलिङ् का प्रयोग होता है।

विशेष – इन अर्थों में कहीं-कहीं लोट्लकार का भी प्रयोग किया जाता है। 'चाहिए' से युक्त वाक्यों में कर्त्ता में 'को' का चिह्न लगा रहता है उसे कर्म का चिह्न न समझना चाहिए।

आदर्श वाक्य

1. बालकः पठेत्	– लड़के को पढ़ना चाहिए या लड़का पढ़े। (पुंल्लिङ्ग)
2. बालिका पठेत्	– लड़की को पढ़ना चाहिए या लड़की पढ़े। (स्त्रीलिङ्ग)
3. बालकाः पठेयुः	– लड़कों को पढ़ना चाहिए या लड़के पढ़े। (पुंल्लिङ्ग)
4. छात्रः तत्र पठेत्	– छात्र वहाँ पढ़ें। (विधि)
5. बालकः किं कुर्यात्	– लड़का क्या करें? (प्रश्न)

कारकों के आधार पर अनुवाद के नियम

1. कर्त्ता कारक (प्रथमा विभक्ति)

नियम 1. क्रिया करने वाले को कर्त्ता कहते हैं और कर्तृवाच्य के कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है। इसका चिह्न (पहचान) 'ने' है। यह कहीं-कहीं छिपा रहता है। जैसे– राम लिखता – रामः लिखति (कर्तृवाच्य) में 'ने' छिपा है और रामः प्रथमा विभक्ति का शब्द है।

नियम 2. संस्कृत में बिना विभक्ति लगाये शब्द निरर्थक होते हैं। अतः अर्थ बनाने के लिए संज्ञा शब्दों में प्रथमा विभक्ति आती है। जैसे रामः-राम। गजः-हाथी, शुकः-तोता आदि।

नियम 3. पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग बनाने के लिए भी प्रथमा विभक्ति आती है। जैसे–तटः (पुंल्लिङ्ग) तटी (स्त्रीलिङ्ग) तटम् (नपुंसकलिङ्ग)- किनारा आदि।

नियम 4. अव्ययों के साथ तथा केवल नाम के कथन में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे गांधी 'बापू' इति प्रसिद्धः अस्ति-गांधी बापू इस (नाम से) प्रसिद्ध हैं। नेहरू नाम एक एव महापुरुषः असीत् – नेहरू नाम के एक ही महापुरुष थे।

आदर्श वाक्य

1. बालकः बालिका च पठतः	– लड़का और लड़की पढ़ रही है।
2. भानुः शशिः वा गच्छति	– भानु या शशि जाता है।
3. शुकः एकः पक्षी अस्ति	– तोता एक चिड़िया है।
4. इदम् एकं नगरम् अस्ति	– यह एक नगर है।
5. इयम् एका नगरी अस्ति	– यह एक नगरी है।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. अशोक प्रियदर्शी इस नाम से प्रसिद्ध था। 2. राम और लक्ष्मण भाई थे। 3. गीता और रेखा चली गयीं। 4. सीता या रीता नहीं आवेगी। 5. यह एक सुन्दर उपवन हैं। 6. हम और तुम वहाँ कब चलेंगे। 7. सीता सती नारी थी। 8. वे लोग वहाँ जायें। 9. तुम्हें सदा हँसना चाहिए। 10. यह विशाल भवन है।

सहायक शब्द – इस नाम से-इति। भाई-भ्रातरौ।

2. कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति)

नियम 1. किसी वाक्य में प्रयोग किये गये पदार्थों में से कर्त्ता जिसको सबसे अधिक चाहता है, उसे कर्म कहते हैं, अर्थात् जिस पर क्रिया का फल समाप्त होता है (पड़ता) है, उसे कर्म कहते हैं। कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे–बालकः वानरं ताडयति-लड़का बन्दर को मारता है। यहाँ 'ताडयति' क्रिया का फल वानर पर पड़ता है, अतः उसमें द्वितीया विभक्ति हुई है।

विशेष – क्रिया के पहले 'किसको' अथवा 'क्या' लगाने से जो उत्तर में आता है वह कर्म होता हैं। हिन्दी में 'कर्म' का चिह्न 'को' है। यह कहीं-कहीं छिपा भी रहता हैं। जैसे- रामः पुस्तकं पठति – राम पुस्तक पढ़ता है। यहाँ कर्म का चिह्न 'को' छिपा है। यहाँ वाक्य में 'क्या' लगाने से 'क्या' पढ़ता है उत्तर में 'पुस्तक' आती है, अतः उसमें द्वितीया विभक्ति होगी।

वाक्य में यदि कर्म एक होता है तो उसमें एकवचन, दो हों तो द्विवचन और दो से अधिक हों तो बहुवचन होता है। जैसे– अहं गणेशं नमामि-मैं गणेश को प्रणाम करता हूँ। 2. बालकः फलानि खादन्ति- लड़के फल खाते हैं आदि।

आदर्श वाक्य

1. बालकाः नाटकम् अपश्यन्	– लड़कों ने नाटक देखा।
2. बालिकाः गीतं गायन्ति	– लड़कियाँ गीत गाती हैं।
3. अहं सूर्यं पश्यामि	– मैं सूर्य को देखता हूँ।
4. शिक्षकः छात्रान् ताडयति	– अध्यापक छात्रों को पीटता है।
5. त्वं बालकौ कुत्र अपश्यः	– तुमने दो लड़कों को कहाँ देखा।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. राम ने रावण को मारा था। 2. छात्र एक निबन्ध लिख रहे हैं। 3. हमने एक गीत गाया। 4. वे शिक्षक को प्रणाम करते हैं। 5. मैं एक कहानी कहूँगा। 6. वे लोग फल खायेंगे। 7. रमेश पुस्तकें लाता है। 8. वे चित्र देखेंगे। 9. हम दोनों ने एक पत्र लिखा। 10. मैंने दो गायों को देखा।

सहायक शब्द – मारा था = अहन्। लाता है = आनयति। गाया = अगायम्।

3. कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति उपपद के रूप में)

जब सामान्य नियम के स्थान पर किसी विशेष नियम के अनुसार कोई विभक्ति हो जाती है, तब उसे उपपद विभक्ति कहते हैं।

नियम 1. याच् (माँगना), पच् (पकाना), प्रच्छ् (पूछना), ब्रू (बोलना), नी (ले जाना), हृ (चुराना), आदि और इनके अर्थवाली अन्य धातुओं के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे–

गुरुः छात्रं प्रश्नं पृच्छति– गुरु जी छात्र से प्रश्न पूछते हैं। यहाँ 'छात्र से' कर्म कारक नहीं है किन्तु इस विशेष नियम से 'छात्र' में द्वितीया विभक्ति हो गयी है।

नियम 2. गमानार्थक धातु के योग में (जहाँ जाया जाता है उसमें) द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे-बालकः गृहं गच्छति-लड़का घर में जाता है।

नियम 3. शी (सोना) स्था (ठहरना) तथा आस् (बैठना) धातु से पहले यदि 'अधि' उपसर्ग लगा हो तो इनके आधार में द्वितीया विभक्ति हो जाती है। जैसे- रामाः शिलाम् अधि रोते-राम शिला पर रोता है।

नियम 4. अभितः (सब तरफ) परितः-चारों तरफ। सर्वतः (सब तरफ) उभयतः (दोनों ओर), हा, धिक्, प्रति बिना आदि के योग में (इन शब्दों की जिससे निकटता प्रतीत होती है, उसमें द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे मम ग्रामं परितः अभितः सर्वतः वा वृक्षा सन्ति – मेरे गाँव के चारों ओर या सब तरफ पेड़ हैं।

आदर्श वाक्य

1. कपिः वृक्षम् आरोहति	– बन्दर पेड़ पर चढ़ता है।
2. सिंहः वनम् अटति	– सिंह वन में घूमता है।

3. राजा सिंहासनम् अधितिष्ठति – राजा सिंहासन पर स्थित है।
4. विद्यालयम् उभयतः एका नदी वहति – विद्यालय के दोनों ओर एक नदी बहती है।
5. व्याधः मृगं प्रति अपश्यत् – बहेलिये ने हिरन की ओर देखा।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. सड़क के दोनों ओर पेड़ हैं। 2. विद्यार्थी गुरु के चारों ओर बैठे हैं। 3. तुम्हारे प्रति कोई ध्यान करेगा। 4. लंका के चारों ओर समुद्र है। 5. अर्जुन रथ पर चढ़ते हैं। 6. लड़कियाँ कक्षा में प्रवेश करती हैं। 7. छात्र आसन पर बैठते हैं। 8. किसान गाँव में रहते हैं। 9. तुम्हें कक्षा में जाना चाहिए। 10. मेरे घर के चारों ओर पानी था।

सहायक शब्द – सड़क = राजमार्गम्, चढ़ता है = आरोहति, रहते हैं –अधिवसन्ति।

4. करण कारक (तृतीया विभक्ति)

नियम 1. जिसकी सहायता से कर्त्ता अपना कार्य पूरा करता है उसे करण कहते हैं। करण में तृतीया विभक्ति होती है। उसकी पहचान से या द्वारा है। जैसे – छात्रः मुखेन खादति– छात्र मुख से खाता है। यहाँ कर्ता छात्र मुख से अपना काम पूरा कर रहा है, अतः वह करण कारक है और उसमें तृतीया विभक्ति मुखेन हुई।

विशेष– आँख, कान, हाथ, पैर प्रत्येक आदमी के दो होते हैं। अतः जब एक के लिए इसका प्रयोग होता है, तब ये सदा द्विवचन में ही आते है। जैसे– **अहं नेत्राभ्यां पश्यामि –** मैं आँख से देखता हूँ।

जहाँ इनका प्रयोग एक से अधिक के लिए होता है, वहाँ इनमें द्विवचन और बहुवचन दोनों ही हो सकते हैं। जैसे– **वयं कर्णाभ्याम्** (द्विवचन) अथवा कर्णैः (बहुवचन) शृणुमः – हम लोग कान से सुनते हैं। यहाँ द्विवचन या बहुवचन दोनों हो सकता है।

आदर्श वाक्य

1. रामः बाणेन बालिम् अहन् – राम ने बाण से बालि को मारा।
2. यूयं स्व हस्ताभ्याम् (हस्तैः) कार्यं कुरुत – तुम लोग अपने हाथ से काम करो।
3. बालकः हस्ताभ्याम् लिखति – लड़का हाथ से लिखता है।
4. परिश्रमेण कार्यं सिद्ध्यति – मेहनत से काम सिद्ध होता है।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. तुम लोग परिश्रम से पढ़ो। 2. किसान हल से खेत जोतते हैं। 3. हम लोग रोज गेंद से खेलते हैं। 4. वे पानी से पेड़ों को सींच रहे हैं। 5. लड़कियाँ स्वर से गाती हैं। 6. वे कान से कथा सुनते हैं। 7. लड़के पैरों से गेंद को मार रहे हैं। 8. परिश्रम से धन और धन से सुख होता है। 9. भीम ने गदा से दुर्योधन को मारा। 10. वह ध्यान से अपना पाठ याद करेगा।

सहायक शब्द – रोज = नित्यम्। गेंद से = कन्दुकेन। खेत = क्षेत्रम्। जोतते हैं = कर्षन्ति। सींचते हैं = सिञ्चन्ति। मार रहे हैं = ताडयन्ति। याद करेगा = स्मरिष्यति।

5. करण कारक (उपपद विभक्ति के रूप में)

नियम 1. साथ अर्थवाले 'सह सम्म्, साकम्' के योग में, (जिसके साथ काम किया जाता है उसमें), तृतीया विभक्ति होती है। जैसे– **पिता पुत्रेण सह गच्छति**-पिता पुत्र के साथ जाता है।

नियम 2. जिस अंग के द्वारा शरीर में कोई विकार प्रतीत हो, उसमें तृतीया विभक्ति होती है। जैसे– **सः कर्णेन बधिरः अस्ति–** वह कान का बहरा है।

नियम 3. पृथक् बिना नाना शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे– **कलमेन बिना कथं लिखिष्यामि–** कलम के बिना मैं कैसे लिखूँगा।

आदर्श वाक्य

1. सः अध्यापकेन सह गृहं गमिष्यति – वह अध्यापक के साथ घर जायेगा।
2. अयं बालकःपादेन खञ्जः अस्ति – यह लड़का पैर का लँगड़ा है।
3. पुस्तकेन बिना अहं किं पठामि – पुस्तक के बिना मैं क्या पढ़ूँ?

संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

1. मैं मोहन के साथ घर जाऊँगा। 2. दुष्टों के साथ विवाद मत करो। 3. राम के साथ लक्ष्मण भी वन गये। 4. सत्य बोलने से सम्मान होता है। 5. यह भिखारी आँख का अन्धा है। 6. हम लोग नाव से विहार करेंगे। 7. पत्नी के बिना घर सूना होता है। 8. विद्या के बिना बुद्धि नहीं होती है। 9. तुम लोगों को परिश्रम से पढ़ना चाहिए। 10. वह स्वभाव से दुष्ट है।

सहायक शब्दः – बोलने से = भाषणेन। भिखारी = भिक्षुकः। नाव से = नौकया। सूना = शून्यम्। पढ़ना चाहिए = पठत।

6. सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति)

नियम 1. जिसे कोई वस्तु दी जाती है या जिसके लिए कोई काम किया जाता है, उसे सम्प्रदान कहते हैं। सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। इसका चिह्न (पहचान) के लिए अथवा 'को' हैं। जैसे–**राजा ब्राह्मणाय गां ददाति** राजा ब्राह्मण को गाय देता है। इस वाक्य में 'ब्राह्मण' को गाय देने का वर्णन है, अतः उसमें चतुर्थी विभक्ति हुई।

विशेषः– 'को' कर्मकारक (द्वितीया विभक्ति) का चिह्न है किन्तु सम्प्रदान कारक में भी 'को' का प्रयोग केवल देने के अर्थ में होता है। जैसे– **शिक्षकः छात्राय पुरस्कारं ददाति –** शिक्षक छात्र को इनाम देता है।

2. जब कोई वस्तु सदा के लिए दे दी जाती है तब वहाँ चतुर्थी विभक्ति होती है।

3. जहाँ कोई थोड़े समय के लिए दी जाती है और देनेवाले का उस पर से अधिकार समाप्त नहीं होता, वहाँ चतुर्थी विभक्ति नहीं होती, बल्कि षष्ठी विभक्ति होती हैं। जैसे – **सः रजकस्य वस्त्राणि ददाति–** वह धोबी को कपड़े देता है।

आदर्श वाक्य

1. राजा निर्धनाय वस्त्रं ददाति	– राजा गरीब को कपड़ा देता है।
2. त्वं बालकाय फलम् आनय	– तुम लड़के के लिए फल लाओ।
3. वृक्षाः परोपकाराय फलन्ति	– पेड़ परोपकार के लिए फलते हैं।
4. सः कस्मै भोजनं दास्यति	– वह किसे भोजन देगा?

संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

1. तुम मोहन को पुस्तक दो। 2. भूखे को भोजन देना चाहिए। 3. नौकर स्वामी के लिए फल लाता है। 4. किसान अन्न के लिए खेत सींचता है। 5. मन्त्री सैनिक को पुरस्कार देता है। 6. तुम मुझे अपनी पुस्तक दो। 7. पिता के लिए फल लाया। 8. वे प्यासे को पानी देंगे। 9. लोग ज्ञान के लिए अध्ययन करते हैं। 10. वे लोग धोबी को कपड़ा नहीं देंगे।

सहायक शब्द – भूखे को = बुभुक्षिताया। नौकर = सेवक। प्यासे को = पिपासिताय, तृषिताय। धोबी को = रजकस्य।

7. चतुर्थी विभक्ति (उपपद के रूप में)

नियम 1. 'रूच' धातु के योग में जिसे कोई चीज अच्छी लगती है उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे– **बालकाय मिष्टान्नं रोचते** – लड़के को मिठाई अच्छी लगती है।

नियम 2. क्रुध् (गुस्सा करना) द्रुह् (शत्रुता करना) ईर्ष्य् (डाह करना) असूय् (निन्दा करना) आदि धातुओं तथा इनकी समानार्थक धातुओं के योग में जिस पर क्रोध आदि किया जाता है, उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे– **अध्यापकः छात्राय क्रुध्यति** – अध्यापक छात्र पर क्रोध करता है।

नियम 3. नमः स्वस्ति (कल्याण) स्वाहा, स्वधा, अलम (समर्थ, पर्याप्त) आदि के योग में जिसे नमस्कार आदि किया जाता है उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे– **रामाय नमः** –राम को नमस्कार है।

विशेष – जब 'नमः' के साथ कृ धातु का प्रयोग होता है, तब द्वितीया विभक्ति नहीं होती है। जैसे– **देवं नमस्करोमि –** देवता को नमस्कार करता हूँ।

1. बालकाय पठनं रोचते – लड़के को पढ़ना अच्छा लगता है।

2. रामः श्यामाय क्रुध्यति – राम श्याम पर क्रोध करता है।
3. कंसः कृष्णाय अद्रुह्यत् – कंस कृष्ण से द्रोह करता था।
4. छात्राः अध्यापकाय असूयन्ति – छात्र अध्यापक की निन्दा करता है।
5. श्री गणेशाय नमः – श्री गणेश जी को नमस्कार है।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

1. दुष्ट सज्जनों से ईर्ष्या करते हैं। 2. तुम लड़कों से द्रोह करते हो। 3. कौरव पाण्डवों पर क्रोध करते थे। 4. इस समय छात्रों को पढ़ना अच्छा नहीं लगता। 5. सज्जनों को विवाद अच्छा नहीं लगता। 6. भगवान् शिव को नमस्कार है। 7. शाम को टहलना सबको अच्छा लगता है। 8. रावण राम से सदा द्रोह करता था। 9. तुम्हारा कल्याण हो। 10. छात्र अध्यापक को नमस्कार करते हैं।

सहायक शब्द – सज्जनों से = सज्जनेभ्यः। द्रोह करते हो = द्रुहयसि। पढ़ना = पठनम्,अध्ययनम्। अच्छा नहीं लगता = न रोचते। टहलना = भ्रमणम्। नमस्कार करते हैं = नमस्कुर्वन्ति।

8. अपादान कारक (पंचमी विभक्ति)

नियम – जिसमें किसी वस्तु का प्रत्यक्ष अथवा कल्पित रूप से अलग होना प्रकट होता है उसे अपादान कारक कहते हैं। अपादान में पंचमी विभक्ति होती है। इसकी पहचान (चिह्न) 'से' है। जैसे – **हरि अश्वासत् अपतत्**– हरि घोड़े से गिर पड़ा। इस वाक्य में 'घोड़े से' हरि अलग हो गया है, अतः अश्व में पंचमी विभक्ति हुई।

आदर्श वाक्य

1. मम हस्तात् पुस्तकम् अपतत् – मेरे हाथ से किताब गिर गयी।
2. छात्राः गृहात् आगच्छन्ति – छात्र घर से आते हैं।
3. अशोकः वृक्षात् अवतरति – अशोक पेड़ से उतरता है।
4. वृक्षात् पत्राणि पतन्ति – पेड़ से पत्तियाँ गिरती हैं।
5. कूपात् जलम् आनय – कुएँ से पानी लाओ।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. मैं घर से स्कूल जाऊँगा। 2. लड़का पेड़ से गिर पड़ा। 3. वे पुस्तकालय से पुस्तकें लाते हैं। 4. हम लोग बाजार से फल लायेंगे। 5. लड़कियाँ विद्यालय से घर जा रही हैं। 6. तुम लोग कक्षा से बाहर मत जाओ। 8. मैं तालाब से पानी लाऊँगी। 9. घुड़सवार घोड़े से गिर पड़ा। 10. तुम लोग जंगल से बाहर जाओ।

सहायक शब्द– लाते हैं = आयन्ति। बाजार से = आपणात्। बाहर = बहिः। घुड़सवार = अश्वारोही।

9. अपादान कारक (उपपद विभक्ति के रूप में)

नियम 1. जिससे डरा जाता है या रक्षा की जाती है, उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे– **सः चौरात् विभेति –** वह चोर से डरता है। **पिता पुत्रं पापात् त्रायते–** पिता पुत्र को पाप से बचाता है।

नियम 2. जिससे कोई वस्तु हटायी जाती है उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे – गुरुः शिष्यं कुमार्गात् निवारयति– गुरु शिष्य को कुमार्ग से रोकता है।

नियम 3. जिससे नियमपूर्वक पढ़ा जाता है, उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे अहं गुरोः व्याकरणं पठामि। मैं गुरु जी से व्याकरण पढ़ता हूँ।

नियम 4. अन्य (सिवाय) दूर, इतर (दूसरा) ऋते (बिना) दिशावाचक तथा कालवाचक शब्दों के योग में पंचमी होती हैं। जैसे– **ग्रामात् पूर्व नदी बहति–** गाँव से पूर्व में नदी बहती है।

आदर्श वाक्य

1. जनाः सिंहात् बिभ्यति – लोग सिंह से डरते हैं।
2. त्वं चौरात् बालं रक्ष – तुम चोर से बालक को बचाओ।

3. कृषकाः क्षेत्रात् पशून् निवारयन्ति – किसान खेत से पशुओं को रोकते हैं।
4. बालकाः अध्यापकात् गणितं पठन्ति – लड़के अध्यापक से गणित पढ़ते हैं।
5. ज्ञानात् ऋते न मुक्तिः – ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती।
6. गंगा हिमालयात् प्रभवति – गंगा हिमालय से निकलती है।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

1. आजकल विद्यार्थी अध्यापक से नहीं डरते हैं। 2. चूहे बिल्ली से डरते हैं। 3. तालाब में कमल पैदा होते हैं। 4. मैं अपने मित्र के साथ पढ़ता हूँ। 5. माली बाग से जानवरों को निकालता है। 6. चैत के पहले फागुन आता है। 7. कृष्ण के सिवाय मेरी रक्षा कौन करेगा? 8. मेरे गाँव से दूर एक पहाड़ है। 9. धन के बिना सुख नहीं होता है। 10. पेड़ों से पत्तियाँ उत्पन्न होती हैं।

सहायक शब्द – आजकल = इदानीम्। चूहे = मूषकाः। बिल्ली = मार्जार, डालः। पैदा होते हैं = प्रभवन्ति। आता है = आयाति। कृष्ण के सिवाय = कृष्णात् अन्यः।

10. सम्बन्ध कारक (षष्ठी विभक्ति)

नियम 1. जब किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द का दूसरे शब्द से सम्बन्ध प्रकट होता है, तब जिसका सम्बन्ध होता है उसमें षष्ठी विभक्ति होती है। इसकी पहचान का, की, के, रा, री, रे, ना, नी, ने है। जैसे– अभिमन्युः अर्जुनस्य पुत्रं आसीत्– अभिमन्यु अर्जुन पुत्र था। यहाँ अर्जुन तथा पुत्र में सम्बन्ध दिखाया गया है, अतः 'अर्जुन स्य' में षष्ठी विभक्ति हुई है।

नियम 2. समान (बराबर)। अर्थ रखने वाले तुल्य, सदृश, सम आदि के योग में जिससे तुलना की जाती है, उसमें षष्ठी या तृतीया विभक्ति होती है। जैसे– रामस्य रामेण वा समः कोऽपि नास्ति– राम के समान कोई भी नहीं है।

आदर्श वाक्य

1. कूपस्य जलं शीतलं भवति – कुएं का पानी ठंडा होता है।
2. रामस्य माता कौशल्या आसीत् – राम की माता कौशल्या थीं।
3. तव गृहं कुत्र अस्ति – तुम्हारा घर कहाँ है?
4. स्वस्थ वचनं पालय – अपने वचन का पालन करो।
5. सः अध्ययनस्य हेतोः काश्यां वसति – वह अध्ययन के हेतु काशी में रहता है।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

1. कंस कृष्ण का शत्रु था। 2. कालिदास संस्कृत के कवि हैं। 3. दुष्टों की संगति नहीं करनी चाहिए। 4. मैंने अपना सब धन दान कर दिया। 5. तुम्हारा भाई यहाँ कब आवेगा। 6. तुलसीदास रामायण के रचयिता थे। 7. भक्त ईश्वर का स्मरण करता है। 8. कर्ण के समान कोई न था। 9. नदी का पानी धीरे-धीरे बहता है। 10. उसका नाम सदा अमर है।

सहायक शब्द – धीरे-धीरे = शनैः-शनैः। अपना = स्वस्य।

11. अधिकरण कारक (सप्तमी विभक्ति)

नियम 1. जिस स्थान या वस्तु में कोई कार्य होता है, उसे अधिकरण कहते हैं। अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है। इसकी पहचान (चिह्न) 'में' या पर है। जैसे– अहं विद्यालये पठामि– मैं विद्यालय में पढ़ता हूँ। यहाँ पढ़ने का कार्य विद्यालय में हो रहा है, अतः विद्यालय में सप्तमी विभक्ति हुई है।

नियम 2. जिस के लिए स्नेह, आसक्ति एवं सम्मान प्रदर्शित किया जाता है, उसमें सप्तमी विभक्ति होती है।

नियम 3. समुदायवाचक शब्द में तथा जिस समय या स्थान में कोई काम किया जाता है उसमें सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे– **कविषु कालिदासः श्रेष्ठः आसीत्** – कवियों में कालिदास श्रेष्ठ थे। प्रथमे दिवसे सः आगमिष्यति– पहले दिन वह यहाँ आवेगा।

आदर्श वाक्य

1. सरोवरे कमलानि विकसन्ति – तालाब में कमल खिलते हैं।

2. वयं नद्यां स्नानं कुर्मः – हम लोग नदी स्नान करते हैं।
3. मम पिता मयि स्निहयति – मेरे पिता जी मुझ पर स्नेह रखते हैं।
4. गुरौ भक्तिः कुर्यात् – गुरु जी पर भक्ति रखनी चाहिए।
5. अस्मिन् समये वयं पठिष्यामः – इस समय हम लोग पढ़ेंगे।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

1. पेड़ों पर चिड़ियाँ बोलती हैं। 2. काशी में विश्वनाथ का मन्दिर है। 3. अध्यापक छात्रों पर स्नेह रखते हैं। 4. फूलों पर भौंरे गूँज रहे हैं। 5. कृष्ण का जन्म जेल में हुआ था। 6. मैं अपने भाइयों में बड़ा हूँ। 7. काव्यों में नाटक सुन्दर होता है। 8. आज मेरे घर में उत्सव होगा। 9. धर्म में प्रेम रखना चाहिए। 10. वह दूसरे दिन आवेगा।

सहायक शब्द – बोलती हैं = कूजन्ति। गूँज रहे हैं = गुञ्जन्ति। बड़ा = ज्येष्ठ। सुन्दर = रम्यम्। प्रेम = रतिः। रखना चाहिए = कुर्यात्।

12. सम्बोधन

नियम 1. जिसे पुकारा जाता है उसमें सम्बोधन होता है। सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है। इसका चिह्न है, अरे, ऐ, आदि हैं। ये चिह्न शब्द से पहले लगते हैं। जैसे– हे राम! भो बालक! हे राम, अरे लड़के आदि।

नियम 2. संस्कृत में सम्बोधन के एक वचन में रूप बदलता है, शेष में कर्त्ता कारक के समान होता है।

विशेष – सर्वनाम शब्दों में सम्बोधन नहीं होता है।

आदर्श वाक्य

1. भो पुत्र! त्वं कुत्र गच्छसि – अरे बेटा! तुम कहाँ जा रहे हो?
2. बालकाः प्रतिदिनं प्रातः उद्यानं भ्रमत – लड़कों प्रतिदिन सबेरे बगीचे में भ्रमण करो।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. छात्रो! परिश्रम से पढ़ो। 2. गुरुदेव! चित्र में क्या है? 3. हे राम मेरी रक्षा करो। 4. महर्षि! आप सब कुछ जानते हैं। 5. विद्यार्थियों! अपने आसन पर बैठ जाओ।

विभिन्न प्रयोगों के आधार पर अनुवाद के नियम

1. सर्वनामों का प्रयोग

1. **युष्माकं** गृहं कुत्र अस्ति? – तुम्हारा घर कहाँ है?
2. **तस्य** बालकस्य किं नाम अस्ति? – उस लड़के का नाम क्या है?
3. **यस्य** चित्ते दया भवति, सः साधुः भवति – जिसके चित्त में दया होती है, वह साधु होता है।
4. **तस्मै** बालकाय दुग्धं वितर – उस बालक के लिए दूध बाँटो।
5. **एतानि** पुस्तकानि मह्यं यच्छ – इन पुस्तकों को मुझे दो।
6. **तस्यां** नगर्यां कः अवसत्? – उस नगरी में कौन रहता था?
7. **कस्मिंश्चिद्** नगरे एकः ब्राह्मणः वसति स्म – किसी नगर में एक ब्राह्मण रहता था।
8. **कस्यचिद्** नृपस्य हस्ती मरणासन्नः आसीत् – किसी राजा का हाथी मरणासन्न था।
9. **सः तस्मै** विप्राय धेनुं ददाति – वह उस ब्राह्मण के लिए गाय देता है।
10. **कस्यचित्** बालिकायै फलं यच्छ – किसी लड़की को फल दो।

नियम 1. युष्मद् (तू), अस्मद् (मैं), तद् (वह), एतद् (यह), इदम् (यह), अहम् (मैं), किम्, (कौन, किस) यद् (जो), सर्व (सब) आदि सर्वनाम हैं। इनके रूप पहले लिखे जा चुके हैं।

नियम 2. सर्वनामों का प्रयोग संज्ञाओं के स्थान पर होता है, अतः इनके कारक और वचन पहले कहे हुए नियमों के अनुसार

ही होते हैं। जैसे–

वाक्य 1 'तुम्हारा' में युष्मद् शब्द का षष्ठी बहुवचन होने से इसकी संस्कृत 'युष्माकम्' है। इसी प्रकार वाक्य 3 में 'यस्य' षष्ठी एकवचन है।

नियम 3. सर्वनामों का प्रयोग विशेषणों की भाँति भी होता है। जहाँ ये विशेषणों की तरह काम में आते हैं वहाँ इनके लिङ्ग, विभक्ति तथा वचन अपने विशेष्य की तरह होते हैं। जैसे– वाक्य 2 में 'उस' सर्वनाम 'लड़के का' की विशेषता प्रकट कर रहा है। इसकी संस्कृत बालकस्य में पुंल्लिङ्ग की षष्ठी का एकवचन है, अतः 'उसकी' संस्कृत 'तद' का भी पुंल्लिङ्ग षष्ठी एकवचन का रूप 'तस्य' है।

इसी प्रकार वाक्य 5 में 'पुस्तकानि' के नपुंसकलिङ्ग द्वितीया बहुवचन होने के कारण 'इन' की संस्कृत 'एतत्' का नपुंसकलिङ्ग द्वितीया बहुवचन का रूप 'एतानि' प्रयोग में लाया गया है।

इसी प्रकार वाक्य 6 में 'नगर्याम्' के स्त्रीलिङ्ग सप्तमी एकवचन होने के कारण 'तस्याम्' भी 'तद्' का स्त्रीलिङ्ग सप्तमी एकवचन का रूप प्रयोग में आया है।

नियम 4. किस की संस्कृत 'किम्' शब्द के रूपों में 'चित्' जोड़ने से बनती है, किन्तु ऐसे स्थान पर 'किम्' शब्द के विशेष्य से लिङ्ग, विभक्ति तथा वचन के अनुसार चलाकर 'चित्' जोड़ा जाता है और आवश्यकतानुसार सन्धि भी करनी पड़ती है। जैसे– वाक्य 7 में किसी 'नगरे' का विशेषण है। नगरे में नपुंसकलिङ्ग सप्तमी एकवचन है, अतः किम् शब्द का नपुंसकलिङ्ग एकवचन के रूप 'कस्मिन्' में 'चित्' जोड़कर सन्धि करने से 'कस्मिंश्चिद्' रूप प्रयोग में आया है।

इसी प्रकार वाक्य 8 में 'नृपस्य' के पुंल्लिङ्ग षष्ठी एकवचन होने के कारण किम् के पुंल्लिङ्ग षष्ठी एकवचन का 'कस्य' में 'चित्त' जोड़कर ' कस्यचित्' का रूप प्रयोग में आया है।

इसी प्रकार वाक्य 10 में 'बालिकायै' के स्त्रीलिङ्ग चतुर्थी एकवचन होने के कारण 'कि' के स्त्रीलिंङ्ग चतुर्थी एकवचन का रूप, 'कस्यै' में 'चित्त' जोड़कर 'कस्यैचित्' रूप प्रयुक्त हुआ।

2. विशेषणों का प्रयोग

1. विशेषणों के विभक्ति, वचन और लिङ्ग अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं।

2. 'मुझ जैसा' और 'तुझ जैसा' आदि की संस्कृत बनाने के लिए इनके वाचक सर्वनाम शब्दों में 'दृश्' जोड़ दिया जाता है। इनके लिङ्ग, विभक्ति, वचन भी अपने विशेष्य के अनुसार प्रयोग किये जाते हैं।

आदर्श वाक्य

1. मैं सफेद घोड़ा देखता हूँ। – अहं श्वेतम् अश्वं पश्यामि।
2. यह जल पवित्र है। – एतत् जलं पवित्रम् अस्ति।
3. पथिक वृक्ष की शीतल छाया में बैठता है। – पथिकः वृक्षस्य शीतलायां छायाः तिष्ठति।
4. मैं गर्म जल से मुँह धोता हूँ। – अहम् उष्णेन जलेन मुखं प्रक्षालयामि।
5. वे निर्बल पुरुषों की रक्षा करते हैं। – ते निर्बलान् पुरुषान् रक्षन्ति।
6. भीम सबसे बलवान् थे। – भीमः बलवत्तमः आसीत्।
7. रमा एक श्रेष्ठ स्त्री है। – रमा एका श्रेष्ठा नारी आसीत्।
8. विपिन उत्तम छात्र है। – विपिनः उत्तमः छात्रः अस्ति।
9. वीर पुरुषों की प्रशंसा सब जगह होती है। – वीराणां पुरुषाणां प्रशंसा सर्वत्र भवति।
10. राम भरत से बड़े थे। – रामः भरतात् ज्येष्ठतरः आसीत्।

3. उपसर्ग युक्त धातुओं का प्रयोग

नियम 1. उपसर्ग धातु से पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं जैसे– हृ (हर) धातु का अर्थ हरण करना, चुराना है, किन्तु इसके पहले **'वि'** उपसर्ग जुड़ जाने से विहरति (प्रथम पुरुष एकवचन) रूप बनता है। उसका विहार करता है घूमना है, हो जाता है।

नियम 2. लङ्लकार (भूतकाल) में धातु से पहले 'अ' जुड़ता है किन्तु यह 'आ' मूल धातु से पहले जुड़ता है, उपसर्ग से पहले नहीं। अतः भूतकाल के रूप से पहले उपसर्ग जोड़ कर सन्धि करके उपसर्ग युक्त क्रिया बनायी जाती है। जैसे– गम् धातु का भूतकाल (लङ्लकार) से रूप अगचत् होता है। उसके पहले उपसर्ग '**निर्**' जोड़ने से उसका रूप निर्गच्छत् (निकला) बनेगा इसी तरह अनु + अभवत् = अन्वभवत् (अनुभव किया) आदि होता है।

विशेष – इसका विस्तृत विवरण उपसर्ग अंश में पढ़िये। यहाँ अनुवाद में केवल उनका प्रयोग दिया गया है।

आदर्श वाक्य

1. सैनिकाः बाणैः शत्रून् प्रहरन्ति – सैनिक बाण से शत्रुओं को मारते रहे।
2. लक्ष्मणः रामम् अन्वगच्छत् – लक्ष्मण राम के पीछे गया।
3. बालकः गृहात् वहिः निर्गच्छत् – लड़का घर से बाहर निकला।
4. अहं प्रसन्नताम् अनुभविष्यामि – मैं प्रसन्नता का अनुभव करूँगा।

4. कृदन्त प्रयोग

क्त्वा तथा ल्यप् प्रत्यय (पूर्वकालिक क्रिया)

नियम 1. मुख्य क्रिया को करने से पहले जो काम किया जाता है, उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं। हिन्दी में ऐसी क्रिया के बाद में 'कर' या 'करके' जुड़े रहते हैं।

संस्कृत में इसे धातुओं के आगे क्त्वा (त्वा) प्रत्यय जोड़ कर बनाते हैं। जैसे – पठ् + क्त्वा = पठित्वा–पढ़कर आदि।

2. धातुओं से पूर्व निषेधार्थक 'अ' अथवा 'न' को छोड़कर यदि कोई उपसर्ग 'प्र, परा, अप, सम आदि) होता है, तो क्त्वा के स्थान में ल्यप् हो जाता है। ल्यप् में 'य' शेष रहता हैं। जैसे – उप + विश् + क्त्वा (ल्यप्)– उपविश्य – बैठकर।

3. क्त्वा प्रत्यय से युक्त शब्द अव्यय होते हैं, अतः इनके रूप नहीं चलते।

आदर्श वाक्य

1. बालकः पठित्वा गृहं गमिष्यति – लड़का पढ़कर घर जाएगा।
2. सः गुरुं प्रणम्य उपविशति – वह गुरु को प्रणाम कर बैठता है।
3. हस्तौ प्रक्षाल्य भोजनं कुर्यात् – हाथ धोकर भोजन करना चाहिए।
4. अहं कार्यम् अकृत्वा गृहं न गमिष्यामि – मैं काम किये बिना घर नहीं जाऊँगा।

तुमुन् प्रत्यय (उत्तरकालिक क्रिया)

नियम 1. 'के लिए' आदि द्वारा निमित्त या प्रयोजन सूचित करने के लिए धातु के आगे तुम् (तुमुन् प्रत्यय) का प्रयोग होता है। जैसे – दा + तुमुन् = दातुम् – देने के लिए। पठ् + तुमुन् = पठितुम् – पढ़ने के लिए, आदि।

नियम 2. तुमुन् (तुम) प्रत्यय से युक्त शब्द अव्यय होते हैं, अतः इनके रूप नहीं चलते।

नियम 3. तुमुन् प्रत्यय वहीं होता है, जहाँ दोनों क्रियाओं का कर्त्ता एक ही हो। भिन्न कर्त्ता होने पर तुमुन्, प्रत्यय नहीं होता।

नियम 4. यत् (यत्न करना) शक् (सकना) लभ् (पाना) विद् (जानना) इष् (इच्छा करना) आदि धातुओं के योग में 'तुमुन् प्रत्यय होता है। जैसे– सः गृहं गन्तुम् इच्छति–वह स्नातुं (स्नानाय) गच्छति– वह नहाने जाता है।

आदर्श वाक्य

1. बालकः लेखितुं यतते – लड़का लिखने का प्रयत्न करता है।
2. अहं गृहं गन्तुम् इच्छामि – मैं घर जाना चाहता हूँ।
3. अयं विद्यालयं गन्तुं समयः अस्ति – यह विद्यालय जाने का समय है।
4. सः पठितुं, पठनाय वा विद्यालयं गच्छति – वह पढ़ने के लिए स्कूल जाता है।

शतृ, शानच् प्रत्यय (वर्तमान कालिक कृदन्त)

नियम 1. हिन्दी के 'जाता हुआ, खाता हुआ, आदि अर्थों में परस्मैपदी धातुओं से' शतृ (अन्) और आत्मनेपदी धातुओं से शानच् (आन्) प्रत्यय होते हैं।

नियम 2. इन प्रत्ययों से बने शब्द विशेषणों की तरह प्रयुक्त होते हैं। अतः उनके लिङ्ग, वचन, विभक्ति अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं।

विषय – शतृ और शानच् प्रत्ययों को विशेषणात्मक कृदन्त भी कहते हैं। ये भविष्यकाल की क्रिया के साथ भी लगते हैं।

आदर्श वाक्य

1. बालकः पठन् गच्छति – लड़का पढ़ता हुआ जा रहा है।
2. हसन्तीम् बालिकां पश्य – हँसती हुई लड़की को देखो।
3. वृक्षात् पतत् फलं पश्य – पेड़ से गिरते हुए फल को देखो।
4. शयानः पुरुषः तिष्ठति – सोता आदमी भी बैठा है।
5. अहं कम्पमानां बालिकाम् अपश्यम – मैंने काँपती हुई लड़की को देखा।

क्त और क्तवतु प्रत्यय (भूतकालिक कृदन्त)

नियम 1. भूतकाल में (काम के पूर्णतया समाप्त हो जाने पर) धातु से क्त और क्तवतु प्रत्यय होते हैं। इनमें 'क्त' में 'त' और 'क्तवतु' में 'तवत्' शेष रहता है।

नियम 2. 'क्त' प्रत्यय सकर्मक धातुओं से कर्मवाच्य में तथा अकर्मक धातुओं से भाववाच्य में होता है।

नियम 3. इन प्रत्ययों से बने शब्द विशेषण के समान प्रयुक्त होते हैं। अतः इनके लिङ्ग, वचन और विभक्ति आदि इनके विशेष्यों के अनुसार होते हैं।

नियम 4. क्त प्रत्ययान्त शब्दों के रूप अकारान्त शब्दों की तरह तीनों लिङ्गों में चलते हैं। जैसे– गतः त्युं। गता (स्त्री) गतम् (नपुं) आदि।

नियम 5. क्तवतु प्रत्यय भूतकाल में कर्तृवाच्य में प्रयुक्त होता है। इससे बने शब्दों के रूप में पुंल्लिङ्ग में 'भगवत्', स्त्रीलिङ्ग में ईकार जोड़कर 'नदी' और नपुंसकलिङ्ग 'जगत्' शब्द के समान होते हैं। जैसे– गतवान्, गतवन्तौ, गतवन्तः (पु0) गतवती, गतवत्यौ, गतवंत्यः (स्त्री) तथा गतवत् आदि नपुंसकलिङ्ग।

आदर्श वाक्य

1. रामेण रावणो हतः – राम ने रावण को मारा।
2. बालकेन पुस्तकं पठितम् – लड़के ने पुस्तक पढ़ा।
3. मया अद्य काशी दृष्टा – मैंने आज काशी देखी।
4. सः गतः अथवा तेन गतम् – वह गया।
5. रामः गृहं गतवान् – राम घर गया।

गत वर्ष की बोर्ड परीक्षाओं में पूछे गये वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद

[2011]

1.	नदी के दोनों ओर आम के पेड़ हैं।	(IB, 19 DF)	नदीम् उभयतः आम्रवृक्षाः सन्ति।
2.	अध्यापक छात्र से प्रश्न पूछता है।	(IB)	अध्यापकः छात्रं प्रश्नं पृच्छति।
3.	रमेश मामा के साथ बाजार गया।	(IB)	रमेशः मातुलेन सह हाटम् अगच्छत्।
4.	देवदत्त स्वभाव से मधुर है।	(ID)	देवदत्तः स्वभावेन मधुरः अस्ति।
5.	पर्वत के दोनों ओर नदियाँ हैं।	(ID, 19 CZ)	पर्वतम् उभयतः नद्याः सन्ति।
6.	गायों में काली गाय बहुत दूध देनेवाली होती है।	(ID)	गवेषु कृष्णाः धेनुः बहुक्षीराः भवन्ति।
7.	पिता पुत्र के साथ विद्यालय जाता है।	(HX)	पिता पुत्रेण सह विद्यालयं गच्छति।
8.	ग्राम के चारों ओर वन है।	(HX)	ग्रामं परितः वनम् अस्ति।
9.	भगवान वैकुण्ठ में रहते हैं।	(HX)	भगवान वैकुण्ठं अधिशेते।
10.	ग्राम के दोनों ओर नदी है।	(IC)	ग्रामं उभयतः नदी अस्ति।
11.	गुरु शिष्य के साथ पुस्तकालय जाता है।	(IC)	गुरुः शिष्येण सह पुस्तकालयं गच्छति।
12.	नदियों में गङ्गा सबसे अधिक पवित्र है।	(IC)	नदीषु गङ्गा सर्वासु पवित्रः अस्ति।
13.	गृहस्थ भिखारियों को धन देता है।	(IC)	गृहस्थः भिक्षुकेभ्यः धनं ददाति।
14.	मोहन राम के साथ विद्यालय जाता है।	(IA)	मोहनः रामेण सह विद्यालयं गच्छति।
15.	पिता पुत्र पर क्रोध करता है।	(IA, 19 DF)	पिता पुत्रवे क्रुध्यति।
16.	गङ्गा हिमालय से निकलती है।	(IA, 19 DE)	गङ्गा हिमालयात् निर्गच्छति।

[2012]

1.	मैं लिखता हूँ।	(HH)	अहं लिखामि।
2.	सुरेश आँख से काना है।	(HH)	सुरेशः अक्ष्णा काणः अस्ति।
3.	रमेश दौड़ता है।	(HH)	रमेशः धावति।
4.	हम दोनों कहाँ जाते हैं?	(HH)	आवां कुत्र गच्छावः?
5.	गाँव के समीप विद्यालय है।	(HH)	ग्रामं निकषा विद्यालयं अस्ति।
6.	हिमालय से नदी निकलती है।	(HH)	हिमालयात् नदी प्रभवति।
7.	गुरु शिष्य पर क्रोध करता है।	(HG)	गुरुः शिष्याय क्रुध्यति।
8.	हमारे विद्यालय के दोनों ओर नदी है।	(HG)	अस्माकं विद्यालयं उभयतः नदी अस्ति।
9.	सीता राम के साथ वन में जाती है।	(HG)	सीता रामेण सह वनं गच्छति।
10.	हिमालय से गंगा निकलती है।	(HG)	हिमालयात् गङ्गा प्रभवति।
11.	कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं।	(HG, 19 DA, DC)	कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।
12.	सुरेश राम से पुस्तक माँगता है।	(HG)	सुरेशः रामं पुस्तकं याचते।
13.	देवदत्त स्वभाव से दयालु है।	(HJ)	देवदत्तः स्वभावेन दयालुः अस्ति।
14.	तीर्थों में प्रयाग श्रेष्ठ है।	(HJ)	तीर्थेषु प्रयागः श्रेष्ठः अस्ति।

[2013]

1.	ग्वाला गाय से दूध दुहता है।	(BM)	ग्वालः गां दुग्धं दोग्धि।
2.	गाँव के दोनों ओर जलाशय है।	(BM)	ग्रामं उभयतः जलाशयः अस्ति।
3.	गंगा और यमुना के बीच में प्रयाग है।	(BM)	गङ्गा यमुना च मध्ये प्रयागः अस्ति।
4.	महेश एक आँख से काना है।	(BM)	महेशः एकं अक्ष्णा काणः अस्ति।
5.	कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं।	(BM)	कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।
6.	नदी एक कोस टेढ़ी-मेढ़ी है।	(BM)	एकं क्रोशं कुटिला नदी।
7.	राजा सिंहासन पर बैठता है।	(BM)	नृपः सिंहासने तिष्ठति।
8.	हमारे महाविद्यालय के दोनों ओर उद्यान हैं।	(BN)	अस्माकं महाविद्यालयं उभयतः उद्यानम् अस्ति।
9.	छात्रों में राम कुशल है।	(BN)	छात्रेषु रामः कुशलः।
10.	मुक्ति के लिए भक्त हरि को भजता है।	(BN)	मुक्ताय भक्तः हरिं भजति।
11.	तुम जल से मुख धोते हो।	(BN)	त्वं जलेन मुखं प्रक्षालयसि।
12.	विद्यालय के चारों ओर वन है।	(BJ)	विद्यालयं परितः वनं अस्ति।
13.	पेड़ से पत्ते गिरते हैं।	(BJ)	वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
14.	माधव लेखनी से लिखता है।	(BJ)	माधवः लेखन्या लिखति।

[2014]

1.	गाँव के दोनों ओर वृक्ष हैं।	(CS, 19 DE)	ग्रामम् उभयतः वृक्षाः सन्ति।
2.	राम ने रावण को बाण से मारा।	(CS, 19 DF)	रामः रावणं बाणेन अहनत्।
3.	मोहन पैर से लंगड़ा है।	(CS, 19 CZ)	मोहनः पादेन खञ्जः।
4.	देवदत्त को लड्डू अच्छे लगते हैं।	(CS)	देवदत्ताय मोदकं रोचते।
5.	घर के दोनों ओर बगीचा है।	(CT)	गृहम् उभयतः उद्यानम् अस्ति।
6.	बगीचे में सुन्दर पुष्प हैं।	(CT)	उद्यानेषु सुन्दरं पुष्पम् अस्ति।
7.	गणेशजी को लड्डू अच्छा लगता है।	(CT)	गणेशाय मोदकं रोचते।
8.	शिष्य गुरु से प्रश्न पूछता है।	(CU)	शिष्यः गुरुं प्रश्नं पृच्छति।
9.	वह जल से हाथ धोता है।	(CU)	सः जलेन हस्तं प्रक्षालयति।
10.	पिता पुत्र पर क्रोध करता है।	(CU)	पिता पुत्रवे क्रुध्यति।
11.	वह चोर से डरता है।	(CU)	सः चौरात् विभेति।
12.	भक्त हरि को भजता है।	(CV)	भक्तः हरिं भजति।
13.	वह महीने भर निरन्तर पढ़ता है।	(CV)	सः मासपर्यन्तं निरन्तरं पठति।
14.	राम श्याम के साथ जाता है।	(CV)	रामः श्यामेण सह गच्छति।
15.	बालक घोड़े से गिरता है।	(CV)	बालकः अश्वात् पतति।
16.	मन्दिर के चारों ओर पुष्प पादप है।	(CW)	मन्दिरं अभितः पुष्पाणि पादपानि सन्ति।
17.	विष्णु बलि से पृथ्वी माँगते हैं।	(CW)	विष्णु बलिं वसुधां यावते।
18.	देवदत्त दोनों नेत्रों से काना है।	(CW)	देवदत्तः नेत्राभ्यां काणः।
19.	हम दोनों माता-पिता के साथ बाजार गये।	(CW)	आवाम माता-पित्रेण सह आपणम् अगच्छताम्।
20.	लङ्का के चारों ओर समुद्र है।	(CX)	लङ्कां अभितः समुद्रः अस्ति।
21.	गाँव के निकट ही दो नदियाँ हैं।	(CX)	ग्रामं विकषा एव द्वौ नद्यौ स्तः।
22.	मित्रों के साथ पढ़ने जाओ।	(CX)	मित्रेण सह पठितुं गच्छ।
23.	विद्यालय के चारों ओर बाग है।	(CY)	विद्यालयं अभितः उद्यानम् अस्ति।
24.	वह घोड़े से गिर पड़ा।	(CY)	सः अश्वात् अपतत्।

[2015]

1.	ग्वाला गाय से दूध दुहता है।	(DT)	ग्वाला गां दुग्धं दोग्धि।
2.	देवदत्त चावलों से भात पकाता है।	(DT)	देवदत्तः तन्दुलान् ओदनं पचति।
3.	मन्दिर के चारों ओर वाटिका है।	(DT)	मन्दिरं परितः वाटिका अस्ति।
4.	वह मित्रों के साथ विद्यालय जाता है।	(DT)	सः मित्रेण सह विद्यालयं गच्छति।
5.	दुर्योधन पाण्डवों पर क्रोध करता है।	(DT)	दुर्योधनः पाण्डवेभ्यः क्रुध्यति।
6.	भीष्म वीरों में श्रेष्ठ थे।	(DT)	भीष्मः वीरेषु श्रेष्ठः आसीत्।
7.	वह निर्धनों को धन देता है।	(DT)	सः निर्धनेभ्यः धनं ददाति।
8.	विद्यालय के चारों ओर विशाल वृक्ष हैं।	(DU, 19 DA)	विद्यालयं परितः विशालवृक्षाः सन्ति।
9.	सिद्धार्थ कलम से लिखता है।	(DU)	सिद्धार्थः लेखन्या लिखति।
10.	गंगा हिमालय से निकलती हैं।	(DU, 19 CZ)	गंगा हिमालयात् निर्गच्छति।
11.	तीर्थस्थलों में लोग भूमि पर सोते हैं।	(DU)	तीर्थस्थलेषु जनाः भूमे शयनं कुर्वन्ति।
12.	कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं।	(DU)	कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।

[2016]

1.	राजाओं में राम श्रेष्ठ हैं।	(TM)	नृपेषु रामः श्रेष्ठः।
2.	छात्र अध्यापक से प्रश्न पूछता है।	(TM)	छात्रः अध्यापकं प्रश्नं पृच्छति।
3.	भगवान् को नमस्कार।	(TM)	भगवते नमः।
4.	नदी कोस भर टेढ़ी है।	(TM)	क्रोशं कुटिला नदी।
5.	राधा चोरों से डरती है।	(TM)	राधा चौरात् विभेति।
6.	मनुष्यों में परोपकारी ही प्रशंसनीय है।	(TK)	मानवेषु परोपकारी एव प्रशंसनीयः।
7.	ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती।	(TK)	ज्ञानेन बिना मुक्तिः न भवति।
8.	रमा पूजा के लिए फूल चुनती है।	(TK)	रमा पूजाय पुष्पं चिनोति।
9.	मेरा मित्र कानों से बहरा है।	(TK)	मम मित्र कर्णाभ्यां बधिरः अस्ति।
10.	छात्र अध्ययन के लिए विद्यालय जा रहे हैं।	(TK)	छात्राः अध्ययनस्य हेतोः विद्यालयं गच्छन्ति।
11.	तालाब के दोनों ओर बहुत पेड़ हैं।	(TO)	तडागम् उभयतः बहवः वृक्षाः सन्ति।
12.	हम लोग शाम को कुटी जाते हैं।	(TO)	वयं सायंकाले कुटीं गच्छामः।
13.	सबेरे घूमना स्वास्थ्य के लिए हितकर है।	(TO)	प्रातःकालीन भ्रमणः स्वास्थ्याय हितकरः अस्ति।
14.	हमारे शरीर में स्थित आलस्य हमारा परम शत्रु है।	(TO)	अस्माकं शरीरस्थितः आलस्य अस्माकं परमशत्रुः।
12.	वह कभी-कभी घोड़े से गिर जाता है।	(TO)	सः यदा-कदा अश्वात् पतति।

[2017]

1.	तीर्थराज प्रयाग एक प्रसिद्ध नगरी है।	(NJ)	तीर्थराज प्रयागः एकः प्रसिद्ध नगरी अस्ति।
2.	विद्यालय के दोनों ओर गंगा नदी बहती है।	(NJ)	विद्यालयं उभयतः गङ्गा नदी बहति।
3.	तुम लोग अपने हाथ से काम करो।	(NJ)	यूयं स्व हस्तेन कार्यं कुरुत।
4.	राम के साथ लक्ष्मण भी वन गये।	(NJ)	रामेण सह लक्ष्मणोऽपि वनम् अगमत्।
5.	पेड़ परोपकार के लिए फलते हैं।	(NJ)	वृक्षाः परोपकाराय फलन्ति।
6.	राम श्याम पर क्रोध करता है।	(NJ)	रामः श्यामाय क्रुध्यति।
7.	ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती।	(NJ, 19 DA)	ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः।
8.	कुएँ का पानी ठण्डा होता है।	(NJ, 19 CZ)	कूपस्य जलं शीतलं भवति।

9.	वह अध्ययन के लिए छात्रावास में निवास करता है।	(NK)	सः अध्ययनस्य हेतोः छात्रावासे निवसति।
10.	विद्यालय के दोनों ओर सुन्दर उद्यान हैं।	(NK)	विद्यालयं उभयतः सुन्दराणि उद्यानानि सन्ति।
11.	सभी पक्षियों में मोर अधिक सुन्दर है।	(NK)	सर्वेषु पक्षिषु मयूरः सुन्दरतमः अस्ति।
12.	विद्या विनय से शोभित होती है।	(NK)	विद्या विनयेन शोभते।
13.	मेरा मित्र कान से बहरा है।	(NK)	मम मित्रः कर्णाभ्यां बधिरः अस्ति।
14.	छात्रों में गुरु के प्रति श्रद्धा होनी चाहिए।	(NK)	छात्रेषु गुरुं प्रति श्रद्धा भवेत्।
15.	संस्कृत के कवियों में कालिदास सर्वश्रेष्ठ हैं।	(NK)	संस्कृत-कविषु कालिदासः सर्वश्रेष्ठः अस्ति।
16.	मैं पिता के साथ बाजार जाता हूँ।	(NK)	अहं पित्रा सह आपणं गच्छामि।
17.	बालिका चावल से खीर पकाती है।	(NK)	बालिका तण्डुलान् पायसम् पचति।
18.	नारी के बिना धर्म कार्य अधूरे होते हैं।	(NK)	स्त्रीम्, स्त्रिया, स्त्रियाः विना धर्म कार्यं पूर्णं न भवति।
19.	ग्राम के चारों ओर वृक्ष हैं।	(NL)	ग्रामं परितः वृक्षाः सन्ति।
20.	राम कान से बहरा है।	(NL)	रामः कर्णाभ्यां बधिरः अस्ति।
21.	मैं अपनी माता से फल माँगता हूँ।	(NM)	अहं स्व मात्रा फलम् याचामि।
22.	हमारे संस्कृत शिक्षक स्वभाव से सरल हैं।	(NM)	अस्माकं संस्कृत शिक्षकः स्वभावेन सरलः अस्ति।
23.	प्रयाग में भरद्वाज मुनि क आश्रम है।	(NM)	प्रयागे भरद्वाज मुनिना आश्रमः अस्ति।
24.	सभी छात्र समय से विद्यालय जाते हैं।	(NO)	सर्वे छात्राः समयेन विद्यालयं गच्छन्ति।
25.	महात्मा को नमस्कार।	(NP)	महात्मनो नमः।

[2018]

1.	सूर्यास्त के समय सूर्य किस दिशा में होता है।	(BK)	सूर्यास्तस्य कालं सूर्यः कस्मिन् दिशे भवति?
2.	देवों को सामग्री अर्पित करो।	(BK)	देवानां सामग्रीम् अर्पितं कुरु।
3.	स्काउट्स कभी आग से नहीं डरते।	(BK)	स्काउट्स कदापि वह्निना न बिभेति।
4.	छात्रों के द्वारा गृह कार्य किया गया।	(BK)	छात्रैः गृहकार्यम् अकुर्वन्।
5.	विद्यालय के चारों ओर सड़क है।	(BN)	विद्यालयं परितः मार्गाः सन्ति।
6.	मेरे साथ मेरा मित्र विद्यालय जाता है।	(BN)	मया सह मम मित्रं विद्यालयं गच्छति।

[2019]

1.	गाँव के दोनों ओर नदी बहती है।	(DA)	ग्रामम् उभयतः नदीं बहति।
2.	दुष्यन्त के साथ शकुन्तला जाती है।	(DA)	दुष्यन्तेन सह शकुन्तला गच्छति।
3.	सभी देवताओं को नमस्कार है।	(DA)	सर्वेभ्यः देवताभ्यः नमः।
4.	देवदत्त अध्ययन के लिए शहर में रहता है।	(DA)	देवदत्तः अध्ययनाय शहरे निवसति।
5.	छात्र पैर से लंगड़ा है।	(DA)	छात्रः पादेन खञ्जः।
6.	राम श्याम के साथ घर जाता है।	(DB)	रामः श्यामेण सह गृहं गच्छति।
7.	विद्यालय के दोनों ओर वृक्ष हैं।	(DB)	विद्यालयम् उभयतः वृक्षाः सन्ति।
8.	तुम लोग घर जाओ।	(DB)	त्वम् गृहं गच्छ।
9.	वह सिंह से डरता है।	(DB)	सः सिंहात् विभेत् ।
10.	मैं तुम्हारे साथ घर जाता हूँ।	(DC)	अहम् तया सह गृहं गच्छामि।
11.	घर के चारों ओर वृक्ष हैं।	(DC)	गृहं परितः वृक्षाः सन्ति।
12.	तुम लोग पत्र लिखोगे।	(DC)	यूयं पत्रं लेखिष्यथ।
13.	गाँव के चारों ओर तालाब है।	(DD)	ग्रामं परितः तडागः अस्ति।

14. गुरु को नमस्कार। (DD) गुरुवे नमः।
15. गणेश को लड्डू अच्छे लगते हैं। (DD) गणेशाय मोदकं रोचते।

[2020]

1. गाँव के समीप विद्यालय है। (ZU) ग्रामं निकषा विद्यालयम् अस्ति।
2. राम ने रावण को बाण से मारा। (ZU) रामः रावणं बाणेन अहनत्।
3. वह चोर से डरता है। (ZU) सः चौराद् विभेति।
4. वह मित्रो के साथ विद्यालय जाता है। (ZU) सः मित्रेण सह विद्यालयं गच्छति।
5. ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती है। (ZU) ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः।
6. मेरा मित्र कानों से बहरा है। (ZU) मम मित्रः कर्णाभ्यां बधिरः।
7. गुरु को नमस्कार है। (ZU) गुरवे नमः।

❖❖

2 कारक तथा विभक्ति

(3 अंक)

'क्रियान्वययित्वं कारकत्वम्' क्रिया से जिसका सम्बन्ध हो, उसे कारक कहते हैं अर्थात् कारक उस वस्तु को कहा जाता है जिसका अन्वय साक्षात् या असाक्षात् रूप से, वाक्य की क्रिया से हो। यथा– ''वन से आकर राम ने सीता के लिए लंका में रावण को बाण से मारा था।''

इस वाक्य में क्रिया को सम्पादित करनेवाला 'राम' 'कर्त्ता' है। क्रिया का प्रभाव जिस पर पड़ता है वह 'कर्म' है। 'मारना' क्रिया का प्रभाव 'रावण' पर पड़ता है वह 'कर्म' है। क्रिया के साधन में अत्यधिक सहायक 'करण' कहलाता है, यहाँ 'बाण' करण है। सीता के लिए 'रावण' मारा गया, अतः 'सीता' 'सम्प्रदान', 'वन' 'अपादान', लंका में क्रिया पूर्ण हुई थी, अतः लंका 'अधिकरण' कारक है। इस वाक्य में वन, राम, सीता, लंका, रावण इन सभी शब्दों का मारना क्रिया के सम्पादन में साक्षात् या असाक्षात् रूप से उपयोग है, अतः ये सभी कारक कहे जायँगे। इस प्रकार क्रिया के सम्पादन में ये छह सम्बन्ध होते हैं, इन्हीं सम्बन्धों को प्रकट करने के लिए कारकों का प्रयोग होता है तथा इन्हीं अर्थों में प्रथमा आदि विभक्तियाँ प्रयुक्त होती हैं।

➨ कारक के चिह्न

विभक्ति	कारक	चिह्न
प्रथमा	कर्त्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए
पंचमी	अपादान	से (अलग होना)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, की, के; रा, री, रे
सप्तमी	अधिकरण	में, पे, पर
प्रथमा	सम्बोधन	भो, हे, अरे

विभिन्न सूत्रों के आधार पर कारकों एवं विभक्तियों का ज्ञान

चतुर्थी विभक्ति (सम्प्रदान कारक)

नियम 1. कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् — कर्त्ता कर्म के द्वारा जिसे अभिप्रेत करता है अर्थात् कर्त्ता जिसे कुछ देता है या जिसके लिए कुछ करता है, वह सम्प्रदान कहलाता है।

नियम 2. चतुर्थी सम्प्रदाने — सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है; यथा—

नृपः ब्राह्मणाय गां ददाति	राजा ब्राह्मण को गाय देता है।
बालकेभ्यः फलानि यच्छति	बालकों को फल देता है।
उपाध्यायाय गां ददाति	उपाध्याय के लिए गाय देता है।
ब्राह्मणाय भूमिम् ददाति	ब्राह्मण के लिए भूमि देता है।

नियय 3. रुच्यर्थानां प्रीयमाणः — रुच् (अच्छा लगना, पसन्द आना) तथा इसी अर्थ की अन्य धातुओं के प्रयोग में जो अच्छी लगनेवाली वस्तु हो, उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती अर्थात् उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है; यथा—

हरये रोचते भक्तिः	हरि को भक्ति अच्छी लगती है।
सुरेशाय दुग्धं रोचते	सुरेश को दूध अच्छा लगता है।
मह्यं मोदकाः रोचन्ते	मुझे लड्डू पसन्द हैं।
मह्यं ओदनं रोचते	मुझे भात अच्छा लगता है।

नियम 4. क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रतिकोपः — क्रुध् (क्रोध करना), द्रुह् (द्रोह करना), ईर्ष्य् (ईर्ष्या करना), इन तीनों धातुओं तथा इन्हीं अर्थों की अन्य धातुओं के प्रयोग में भी जिसके प्रति क्रोध हो, उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है और उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है; यथा—

पिता पुत्राय क्रुध्यति	पिता पुत्र पर क्रोध करता है।
दुष्टाः सज्जनेभ्यः द्रुह्यन्ति	दुष्ट सज्जनों से द्रोह करते हैं।
देवः गोविन्दाय ईर्ष्यति	देव गोविन्द से ईर्ष्या करता है।
दैत्याः देवेभ्यः असूयन्ति	दैत्य देवों से जलते हैं।
सा मनोजाय क्रुध्यति।	वह मनोज पर क्रोध करती है।

नियम 5. स्पृहेरीप्सितः — स्पृह (चाह करना) धातु के प्रयोग में जिस वस्तु की चाह होती है, उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है; यथा—

पुरुषेभ्यः स्पृहयति	पुरुषों की चाह करती है।
रमा पुष्पेभ्यः स्पृहयति	रमा फूलों की चाह करती है।
बालिकाः फलेभ्यः स्पृहयन्ति	बालिकाएँ फलों की चाह करती हैं।

नियम 6. नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधालंवषड्योगाच्च — नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलं, वषट्— इन शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है; यथा—

विष्णवे नमः	विष्णु के लिए नमस्कार।
गणेशाय नमः [2011 HZ]	गणेश के लिए नमस्कार।
शिवाय नमः	शिव को नमस्कार।
देवेभ्यो नमः	देवो को नमस्कार।
स्वस्ति तुभ्यम्	तेरा कल्याण हो।
इन्द्राय स्वाहा	इन्द्र के लिए स्वाहा।
पितृभ्यःस्वधा	पितरों को स्वधा।
दैत्येभ्यः हरिः अलम्	दैत्यों के लिए हरि पर्याप्त हैं।
अग्नये स्वाहा	अग्नि के लिए स्वाहा।

पंचमी विभक्ति (अपादान कारक)

नियम 1. ध्रुवमपायेऽपादानम् — अपाय (विश्लेष—अलग होना) अर्थ में जो ध्रुव हो, जिससे अलग हो, उसे 'अपादान' कहते हैं। 'वृक्ष से पत्ता गिरता है।' इस वाक्य में पत्ता वृक्ष से अलग होता है, अतः वृक्ष अपादान है।

नियम 2. अपादाने पंचमी — अपादान में पंचमी विभक्ति होती है; यथा—

स ग्रामाद् गच्छति	वह गाँव से जाता है।
वृक्षात् पत्राणि पतन्ति	वृक्ष से पत्ते गिरते हैं।

महेशः आसनाद् उत्तिष्ठति	महेश आसन से उठता है।
सर्वे विमानात् अवतरन्ति	सभी विमान से उतरते हैं।
हिमालयात् गंगा प्रभवति	हिमालय से गंगा निकलती है।
सोपानात् पतति	सीढ़ी से गिरता है।

नियम 3. जुगुप्सा-विराम प्रमादार्थानामुपसंख्यानम् (वा0) — जुगुप्सा (घृणा), विराम (रुकना), प्रमाद (आलस्य) अर्थवाली धातुओं के प्रयोग में जिससे जुगुप्सा, विराम अथवा प्रमाद हो, उसमें पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है; यथा–

पापाज्जुगुप्सते	पाप से घृणा करता है।
स कार्याद्विरमति	वह कार्य से रुकता है।
स पठनात् प्रमाद्यति	वह पढ़ने से प्रमाद करता है।

नियम 4. भीत्रार्थानां भयहेतुः — भय और त्राण (रक्षा) अर्थवाली धातुओं के प्रयोग में भय के हेतु से पंचमी विभक्ति होती है; यथा–

सिंहात् पुत्रं रक्षति	शेर से पुत्र की रक्षा करता है।
माता पुत्रम् अग्नेः रक्षति	माता पुत्र की अग्नि से रक्षा करती है।
स पापात् त्रायते सुतम्	वह पाप से पुत्र का त्राण करता है।
वृकः सिंहात् विभेति	भेड़िया सिंह से डरता है।
शिशुः सर्पात् विभेति	बच्चा साँप से डरता है।
चौराद् विभेति	चोर से डरता है।

नियम 5. आख्यातोपयोगे च — [2011 IB] जिससे नियमपूर्वक विद्या पढ़ी जाय या कुछ सीखा जाय, उसमें पंचमी विभक्ति होती है; यथा—

उपाध्यायाद् अधीते	उपाध्याय से पढ़ता है।
उमा माधवात् संगीतं शिक्षते	उमा माधव से संगीत सीखती है।
रविः शिक्षकात् संस्कृतं पठति	रवि शिक्षक से संस्कृत पढ़ता है।
सः गुरोः कर्मकाण्डं जानाति	वह गुरु से कर्मकाण्ड का ज्ञान करता है।

षष्ठी विभक्ति

नियम 1. षष्ठी शेषे — कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान तथा अधिकरण अर्थों के अतिरिक्त स्वस्वामिभाव, सामीप्य आदि सम्बन्धों को प्रकट करने हेतु षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है; यथा—

राज्ञः पुरुषः	राजा का पुरुष।
गंगायाः जलम्	गंगा का जल।
दशरथस्य पुत्रः	दशरथ का पुत्र।
पाञ्चालानां भूमिः	पाञ्चालों की भूमि।

नियम 2. षष्ठी हेतुप्रयोग—यदि किसी वस्तु की हेतुता प्रकट करनी हो और हेतु शब्द का साक्षात् प्रयोग हो तो उस वस्तु तथा हेतु शब्द दोनों में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है; यथा—

स अन्नस्य हेतोः वसति	वह अन्न के कारण रहता है।
स धनस्य हेतोः सेवते	वह धन के हेतु सेवा करता है।
मोहनः गृहस्य हेतोः यतते	मोहन घर के हेतु यत्न करता है।
अध्ययनस्य हेतोः वसति	अध्ययन के कारण रहता है।

नियम 3. क्तस्य च वर्तमाने — वर्तमान अर्थ में होनेवाले 'क्त' प्रत्ययान्त शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है; यथा—

राज्ञां पूजितः विद्वान् — वह विद्वान्, जो राजाओं द्वारा पूजा जाता है।
सर्वेषामादृतः गुरुः — वह गुरु, जिसका सब आदर करते हैं।

नियम 4. षष्ठी चानादरे—अनादर अर्थ प्रकट करने के लिए षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है; यथा—

बालकानां चम्पकः चंचलः — बालकों में चम्पक चंचल है।
खगानां काकः धूर्तः — पक्षियों में कौआ धूर्त होता है।
पशूनां शृगालः मूर्खः — पशुओं में गीदड़ मूर्ख है।

सप्तमी विभक्ति (अधिकरण कारक)

नियम 1. आधारोऽधिकरणम् — आधार को 'अधिकरण' कहते हैं।

प्रत्येक वस्तु अथवा कार्य किसी-न-किसी काल में और किसी-न-किसी स्थान में होता है। यह काल या स्थान उस वस्तु या कार्य का आधार होता है; जैसे घर में, दिन में, भूमि पर (गृहे, दिने, भूमौ)।

नियम 2. कुशल तथा निपुण शब्दों के योग में सप्तमी-विभक्ति होती है। यथा—

सः शास्त्रे कुशलः अस्ति — वह शास्त्र में कुशल है।
शस्त्रे निपुणः — शस्त्र में निपुण।

नियम 3. सप्तम्यधिकरणे च — अधिकरण में सप्तमी-विभक्ति होती है; यथा—

वयं गृहे वसामः — हम घर में रहते हैं।
गंगायां निर्मलं जलम् अस्ति — गंगा में निर्मल जल है।
क्षेत्रेषु अन्नम् उत्पद्यते — खेतों में अन्न उत्पन्न होता है।
वनेषु सिंहाः वसन्ति — वनों में सिंह रहते हैं।

नियम 4. साध्वसाधुप्रयोगे च (वा.)— साधु और असाधु शब्दों के प्रयोग में सप्तमी विभक्ति होती है; यथा–

साधुः कृष्णः मातरि — कृष्ण माता के विषय में साधु है।
असाधुः कृष्णः मातुले — कृष्ण मामा के विषय में असाधु है।

नियम 5. यतश्च निर्धारणम्– यदि किन्हीं वस्तुओं या व्यक्तियों के समुदाय में से किसी एक वस्तु या व्यक्ति को किसी विशेषता के आधार पर सबसे उत्कृष्ट या निकृष्ट निश्चित किया जाय तो समुदाय की वस्तुओं अथवा व्यक्तियों में सप्तमी अथवा षष्ठी दोनों में से कोई विभक्ति होती है; यथा—

कविषु कालिदासः श्रेष्ठः — कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं।
बालकेषु रविः श्रेष्ठः — बालकों में रवि सबसे अच्छा है।

अथवा

बालकानां रविः श्रेष्ठः — छात्रों में रवि सबसे बड़ा है।

अथवा

छात्रेषु रविः ज्येष्ठः
नदीषु गंगा पवित्रतमा, — नदियों में सबसे पवित्र गंगा है।

अथवा

नदीनां गंगा पवित्रतमा।
पर्वतेषु हिमालयः उच्चतमः — पर्वतों में हिमालय सबसे ऊँचा है।

अथवा

पर्वतानां हिमालयः उच्चतमः।

गत वर्ष की बोर्ड परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर

[2011]

हरये रोचते भक्तिः।	(IC)	हरये	चतुर्थी	'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः।
पापात् निवारयति।	(IC, 19 DA)	पापात्	पंचमी	ध्रुवमपायेऽपादानम्।
छात्राणां नचिकेता पटुतमः।	(IC)	क्षात्राणां	सप्तमी	यतश्च निर्धारणम्।
ग्रामम् अभितः नदी अस्ति।	(IA)	ग्रामम्	द्वितीया	अभितः, परितः, समया, निकषा हा प्रतियोगे द्वितीया।
कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।	(IA, HX, 17 NJ, 19 DB)	कविषु	सप्तमी	यतश्च निर्धारणम्
गङ्गा हिमालयात् प्रभवति।	(IA)	हिमालयात्	पंचमी	भुवः प्रभवः
छात्र विद्यालयात् आयाति।	(HZ)	विद्यालयात्	पंचमी	अपादाने पंचमी
मासम् अधीते माणवकः।	(HZ)	मासम्	द्वितीया	कालाध्वनोरत्यन्त संयोगे
शिरसा खल्वाटोऽयम्।	(HZ, IB, 19 DE)	शिरसा	तृतीया	येनांगविकारः
नृपः मूर्खाय क्रुध्यति।	(HX)	मूर्खाय	चतुर्थी	क्रुधद्रुहेर्ष्या....यं प्रतिकोपः।
वृक्षात् पत्रं पतति।	(HX)	वृक्षात्	पंचमी	अपादाने पंचमी
पयसा ओदनं भुङ्क्ते।	(IB)	ओदनं	द्वितीया	अकथितं च।
गोषु कृष्णा बहुक्षीरा।	(IB, 19 DD, DF)	गोषु	सप्तमी	यतश्च निर्धारणम्।
लङ्कां परितः समुद्रोऽस्ति।	(ID)	लङ्कां	द्वितीया	अभितः परितः समया
तस्मै रोचन्त मोदकाः।	(ID)	तस्मै	चतुर्थी	रुच्यर्थानां प्रीयमाणः।
छात्रेषु मैत्रः पटुः।	(ID)	छात्रेषु	सप्तमी	यतश्च निर्धारणम्।

[2012]

गां दोग्धि पयः।	(HD)	गां	द्वितीया	अकथितं च
पुत्रेण सहागतः पिता।	(HD)	पुत्रेण	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने
हरये नमः।	(HD)	हरये	चतुर्थी	नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधा
वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।	(HD, 17 NJ, 19 CZ, DB, DD, DF)	वृक्षात्	पंचमी	अपादाने पंचमी
मिष्ठान्नं सर्वेभ्यः रोचते।	(HF, 19 DE)	सर्वेभ्यः	चतुर्थी	रुच्यर्थानां प्रयिमाणः
मोहनः अश्वात् पतति।	(HE)	अश्वात्	पंचमी	अपादाने पंचमी
प्रयागं प्रति जनानां श्रद्धा अस्ति।	(HE)	प्रयागं	द्वितीया	अभितः परितः प्रतियोगे द्वितीया
हरिं भजति।	(HF)	हरिं	द्वितीया	अकथितं च
अक्ष्णा काणः।	(HF)	अक्ष्णा	तृतीया	येनाङ्ग विकारः
सिंहाद् विभेति।	(HF)	सिंहाद्	पंचमी	भीत्रार्थानां भयहेतुः
गुरुः शिष्याय क्रुध्यति।	(HG)	शिष्याय	चतुर्थी	क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः
मोहनः पादेन खञ्जः।	(HG)	पादेन	तृतीया	येनाङ्गविकारः
कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।	(HG, 20 ZP)	कविषु	सप्तमी	यतश्चनिर्धारणम्
सः कन्दुकेन सह क्रीडति।	(HH)	कन्दुकेन	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने

विप्राय धनं ददाति।	(HH)	विप्राय	चतुर्थी	चतुर्थीसम्प्रदाने
शिक्षकः शिष्याय क्रुध्यति।	(HH,19DE)	शिष्याय	चतुर्थी	क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः।
चौरात् त्रायते।	(HH)	चौरात्	पंचमी	भीत्रार्थानां भयहेतुः
हनुमते नमः।	(HJ)	हनुमते	चतुर्थी	नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधा
पापात् जुगुप्सते।	(HJ)	पापात्	पंचमी	जुगुप्सा विराम प्रमादार्थानाम् उपसंख्यानम्

[2013]

हरिः वैकुण्ठम् अधिशेते।	(BJ,17NK)	वैकुण्ठम्	द्वितीया	स्थासां कर्म
शशिना सह कौमुदी राजते।	(BJ)	शशिना	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने
नमः शम्भवे।	(BJ)	शम्भवे	चतुर्थी	नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधा...
कन्याम् अभिक्रुध्यति माता।	(BN)	कन्याम्	द्वितीया	अकथितं च
गृहं परितः वृक्षाम् शोभन्ते।	(BN)	गृहम्	द्वितीया	अभितः परितः समया...
नृपं क्षमां याचते।	(BL)	नृपम्	द्वितीया	अकथितं च।
श्यामः नेत्रेण काणः।	(BL)	नेत्रेण	तृतीया	येनांगविकारः...
ग्रामं परितः वनं अस्ति।	(BK)	ग्रामम्	द्वितीया	अभितः परितः ...
पुत्रेण सह आगतः पिता।	(BK,BP)	पुत्रेण	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने
विष्णवे नमः।	(BK)	विष्णवे	चतुर्थी	नमः स्वस्ति स्वाहा...
प्रजाभ्यः स्वस्ति।	(BO)	प्रजाभ्यः	चतुर्थी	नमः स्वस्ति स्वाहा...
रावणः रथात् भूमौ पतति।	(BO)	रथात्	पंचमी	अपादाने पंचमी
ब्राह्मणाय धनं ददाति।	(BP)	ब्राह्मणाय	चतुर्थी	कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्
पुष्पेभ्यः स्पृह्यति।	(BP)	पुष्पेभ्यः	चतुर्थी	स्पृहेरीप्सितः
ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते।	(BM)	विषम्	द्वितीया	अकथितं च
मातुलेन सह आगतः।	(BM)	मातुलेन	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने

[2014]

सज्जनाः सदा पापात् जुगुप्सते।	(CS)	पापात्	पंचमी	जुगुप्सा–विराम प्रमादार्थानामुपसंख्यानम्
कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।	(CS,20ZQ)	कविषु	सप्तमी	यतश्चनिर्धारणम्
साधु कृष्णो मातरि।	(CS)	मातरि	सप्तमी	साध्वसाधु प्रयोगे च
लुब्धकाः वृक्षम् आरोहन्ति।	(CS)	वृक्षम्	द्वितीया	
रामं विना सुखं नास्ति।	(CT)	रामं	द्वितीया	पृथग्विना नानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम्
बालकाय मोदकं रोचते।	(CT)	बालकाय	चतुर्थी	रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
गुरुः शिष्येषु स्निह्यति।	(CT)	शिष्येषु	सप्तमी	
परितः कृष्णं गोपाः।	(CU)	कृष्णं	द्वितीया	अभितः परितः समया निकषा हा प्रति योगेऽपि
अक्ष्णा काणः।	(CU)	अक्ष्णा	तृतीया	येनाङ्गविकारः
प्रजाभ्यः स्वस्ति।	(CU)	प्रजाभ्यः	चतुर्थी	नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधालंवषड्योगाच्च
उपाध्यायाद् अधीते।	(CU)	उपाध्यायाद्	पंचमी	आख्यातिपपोगे च
गोपः गां पयः दोग्धि।	(CV)	गां	द्वितीया	अकथितं च
अभितः कृष्णम्।	(CV)	कृष्णम्	द्वितीया	अभितः परितः समया निकषा हा प्रतियोगेऽपि
हरये रोचते भक्तिः।	(CV)	हरये	चतुर्थी	रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
पापात् जुगुप्सते।	(CV)	पापात्	पंचमी	जुगुप्सा विराम प्रमादार्थानामुपसंख्यानम्
विष्णवे नमः।	(CW)	विष्णवे	चतुर्थी	नमःस्वस्ति स्वाहा स्वधालंवषड्योगाच्च

पित्रा सह गतः।	(CW)	पित्रा	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने
क्षीरनिधिं सुधां मथ्नाति।	(CW)	क्षीरनिधिं	द्वितीया	अकथितं च
गां दोग्धि पयः।	(CX)	गां	द्वितीया	अकथितं च
अध्ययनात् पराजयते।	(CX)	अध्ययनात्	पंचमी	
अधिवसति वैकुण्ठं हरिः।	(CX)	वैकुण्ठम्	द्वितीया	
रामेण बाणेन हतो बाली।	(CY)	बाणेन	तृतीया	कर्तृकरणयोस्तृतीया
दण्डेन घटः।	(CY)	दण्डेन	तृतीया	
अक्ष्णा काणः।	(CY)	अक्ष्णा	तृतीया	येनाङ्गविकारः

[2015]

गोपः गां पयः दोग्धि।	(DT)	गां	द्वितीया	दुह्याद्वण्डरुध
कृष्णं परितः गोपिका अतिष्ठन्।	(DT)	कृष्णं	द्वितीया	अभितः परितः समया
छात्रेषु गोविन्दः पटुतमः।	(DT)	छात्रेषु	सप्तमी	यतश्च निर्धारणम्
गणेशाय मोदकाः रोचन्ते।	(DT)	गणेशाय	चतुर्थी	रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
अक्ष्णा काणः।	(DU)	अक्ष्णा	तृतीया	येनाङ्गविकारः
रावणः रथात् भूमौ पतति।	(DU)	रथात्	पंचमी	अपादाने पंचमी
क्रोशं कुटिला नदी।	(DU)	क्रोशं	द्वितीया	कालाध्वनोरत्यन्त संयोगे

[2016]

गृहम् परितः वृक्षाः शोभन्ते।	(TJ)	गृहम्	द्वितीया	अभितः परितः समया
गां दोग्धि पयः।	(TJ)	ग्राम्	द्वितीया	अकथितं च
अधिवसति वैकुण्ठं हरिः।	(TK)	वैकुण्ठम्	द्वितीया	अधिशीङ्स्थासां कर्म
कुक्कुरः पादेन खञ्जः।	(TK)	पादेन	तृतीया	येनाङ्गविकारः
गवां कृष्णा बहुक्षीरा।	(TK)	गवां	षष्ठी	यतश्चनिर्धारणम्
रामः बाणेन रावणमवधीत।	(TM)	बाणेन	तृतीया	येनाङ्गविकारः
श्रीमते नमः।	(TM)	श्रीमते	चतुर्थी	नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधा
दिनेशः पादेन खञ्जः।	(TM)	पादेन	तृतीया	कर्तृकरणयोस्तृतीया
ग्रामं परितः वृक्षाः सन्ति।	(TO, 20ZP)	ग्रामम्	द्वितीया	अभितः परितः समया
रामः सीतया लक्ष्मणेन च सह। चित्रकूटं प्रति गच्छति।	(TP)	चित्रकूटम्	द्वितीया	अकथितं च
सः मन्दिरम् अधिशेते।	(TP)	मन्दिरम्	द्वितीया	स्थासां कर्म
जनाः राज्ञे करं ददति।	(TP)	राज्ञे	चतुर्थी	चतुर्थी सम्प्रदाने

[2017]

विद्यालयं परितः विशाल वृक्षाः सन्ति।	(NJ, 19DC, 20ZQ)	विद्यालयं	द्वितीया	अभितः परितः समया
सिद्धार्थः लेखन्या लिखति।	(NJ)	लेखन्या	तृतीया	कर्तृकरणयोस्तृतीया
शिशुः सर्पात् बिभेति।	(NK)	सर्पात्	पंचमी	भीत्रार्थानां भयहेतुः
कुक्कुरः पादेन खञ्जः।	(NK)	पादेन	तृतीया	येनाङ्गविकारः
देवदत्तः गां पयः दोग्धि।	(NL)	गां	द्वितीया	अकथितं च
जलेन मुखं प्रक्षालयति।	(NL)	जलेन	तृतीया	कर्तृकरणयोस्तृतीया

प्रजाभ्यः स्वस्ति।	(NL)	प्रजाभ्यः	चतुर्थी	नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधाऽलं0
मोक्षे इच्छाऽस्ति।	(NL)	मोक्षे	सप्तमी	आधारोऽधिकरणम्, सप्तम्यधिकरणे च
अहं विद्यालयात् गृहं आगच्छामि।	(NM)	विद्यालयात्	पंचमी	ध्रुवमपायेऽपादानम् अपादाने पंचमी
छात्रेषु मृगाङ्क प्रवीणतमः अस्ति।	(NM)	छात्रेषु	सप्तमी	यतश्च निर्धारणम्
याचकेभ्यः भोजनं अर्पय।	(NM)	याचकेभ्यः	चतुर्थी	चतुर्थी सम्प्रदाने
ब्राह्मणाय गां ददाति।	(NN)	ब्राह्मणाय	चतुर्थी	कर्मणामभिप्रैति स सम्प्रदानम्, चतुर्थी सम्प्रदाने
सः ग्रामात् आगच्छति।	(NN)	ग्रामात्	पंचमी	अपादाने पञ्चमी
सिंहः वने वसति।	(NN)	वने	सप्तमी	सप्तम्यधिकरणे च
इन्द्राय स्वाहा।	(NO)	इन्द्राय	चतुर्थी	नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधाऽलं0
यात्री विमानात् अवतरति।	(NO)	विमानात्	पंचमी	अपादाने पञ्चमी
बालिकासु सुभद्रा श्रेष्ठा।	(NO)	बालिकासु	सप्तमी	यतश्च निर्धारणम्
चौराद् बिभेति।	(NP)	चौराद्	पंचमी	भीत्रार्थानां भयहेतुः
गणेशाय नमः।	(NP, 20ZP)	गणेशाय	चतुर्थी	नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधा लं0
हरिः सिंहासनम् अध्यास्ते।	(NP)	सिंहासनम्	द्वितीया	अधिशीङ्स्थासां कर्म
काव्येषु नाटकं रम्यम्।	(NP)	काव्येषु	सप्तमी	यतश्च निर्धारणम्

[2018]

अग्नये स्वाहा।	(BK)	अग्नये	चतुर्थी	नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधाऽलंवषड्योगाच्च
विद्यालयात् गृहं आगच्छ।	(BK)	विद्यालयात्	पंचमी	अपादाने पञ्चमी
अध्ययनस्य हेतो अत्र वसामि।	(BK)	अध्ययनस्य	षष्ठी	षष्ठी हेतु प्रयोगे
रामः पुष्पेभ्यः स्पृहयति।	(BN)	पुष्पेभ्यः	चतुर्थी	स्पृहेरीप्सितः
सर्वे विमानात् अवतरन्ति।	(BN)	विमानात्	पंचमी	अपादाने पञ्चमी
शिशुः सर्पात् बिभेति।	(BN, 19CD)	सर्पात्	पंचमी	भीत्रार्थानां भयहेतुः
नदीषु गंगा पवित्रतमा।	(BN)	नदीषु	सप्तमी	यतश्च निर्धारणम्

[2019]

बालकाय पठनं रोचते।	(CZ)	बालकाय	चतुर्थी	रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
ग्रामं सर्वतः वृक्षाः सन्ति।	(CZ)	ग्रामं	द्वितीया	उभसर्वतसोः कार्याधिगुपर्यादिषु0
छात्रः अध्यापकाय द्रुह्यति।	(DA)	अध्यापकाय	चतुर्थी	क्रुध्द्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः
गोषु नन्दिनी बहुक्षीरा।	(DA)	गोषु	सप्तमी	यतश्च निर्धारणम्
बलिं याचते वसुधाम्।	(DB)	बलिं	द्वितीया	अकथितं च
स्वामी सेवकाय क्रुध्यति।	(DC)	सेवकाय	चतुर्थी	क्रुध्द्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः
नमो भगवते वासुदेवाय।	(DD, 20 ZO,ZS)	भगवते	चतुर्थी	नमः स्वस्ति स्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च
सः जलेन हस्तं प्रक्षालयति।	(DF)	नलेन	तृतीया	साधकतमं करणम्

[2020]

शिक्षकः शिष्याय पुस्तकं ददाति।	(ZO)	शिष्याय	चतुर्थी	कर्मणा ययभिप्रेति स सम्प्रदानम्
जलेन क्षेत्रं सिञ्चति।	(ZO)	जलेन	तृतीया	साधकतमं प्रीयमाणः
छात्राय पठनं रोचते।	(ZQ)	छात्राय	चतुर्थी	सच्यर्थानां प्रीयमाणः
बालकः विद्यालयं गच्छति।	(ZR)	विद्यालयं	द्वितीया	अकथितं च

रामः बाणेन बलिं हतवान्।	(ZR)	बाणेन	तृतीया	कर्तृकरणपोस्तृतीया
नेत्रेण काणः।	(ZR)	नेत्रेण	तृतीया	येनाङ्गविकारः
मिष्ठान्नं सर्वेभ्यः रोचते।	(ZS)	सर्वेभ्यः	चतुर्थी	सच्यर्थानां प्रीयमाणः
अहं त्वचा सह गमिष्यामि।	(ZT)	त्वया	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रद्याने
गुरुः छात्रं प्रश्नं पृच्छति।	(ZU)	छात्रं	द्वितीया	अकथितं च
जनाः सिंहात् विभ्यति।	(ZU)	सिंहात्	पञ्चमी	भीत्रार्थानां भयहेतुः

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'बालिका भुवि तिष्ठति' इस वाक्य में भुवि पद में कौन-सी विभक्ति और वचन है?
(क) पञ्चमी, बहुवचन (ख) द्वितीया, एकवचन (ग) तृतीया, द्विवचन (घ) सप्तमी, एकवचन
उत्तर – (घ) सप्तमी, एकवचन।

2. 'शिष्याय स्वस्ति' इस वाक्य के 'शिष्याय' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) प्रथमा (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) सप्तमी
उत्तर – (ग) चतुर्थी।

3. 'पुष्पा पुष्पेभ्यः स्पृह्यति' इस वाक्य में पुष्पेभ्यः में कौन-सी विभक्ति एवं वचन है?
(क) चतुर्थी, एकवचन (ख) पञ्चमी, बहुवचन (ग) चतुर्थी, बहुवचन (घ) प्रथमा, द्विवचन
उत्तर – (ग) चतुर्थी, बहुवचन।

4. 'पुष्पेभ्यः स्पृह्यति' वाक्य में पुष्पेभ्यः में कौन-सी विभक्ति एवं वचन है? (2011 IC)
(क) सप्तमी, एकवचन (ख) द्वितीया, बहुवचन (ग) चतुर्थी, बहुवचन (घ) षष्ठी, बहुवचन
उत्तर – (ग) चतुर्थी, बहुवचन।

5. 'सज्जनात्' यह पद सज्जन शब्द के किस विभक्ति और किस वचन का रूप है?
(क) प्रथमा, एकवचन (ख) द्वितीया, बहुवचन (ग) पञ्चमी, एकवचन (घ) चतुर्थी, द्विवचन
उत्तर – (ग) पञ्चमी, एकवचन।

6. 'धावतः' अश्वात् पतति' वाक्य में 'धावतः' पद में विभक्ति है–
(क) प्रथमा (ख) षष्ठी (ग) पञ्चमी (घ) चतुर्थी
उत्तर – (ग) पञ्चमी।

7. 'रामायणस्य कथा रम्या' इस वाक्य के रामायणस्य पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) तृतीया (ख) चतुर्थी (ग) पञ्चमी (घ) षष्ठी
उत्तर – (घ) षष्ठी।

8. 'नमः शिवाय' इस वाक्य के शिवाय पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) तृतीया (ख) चतुर्थी (ग) पंचमी (घ) षष्ठी
उत्तर – (ख) चतुर्थी।

9. 'सीतायाः रामः प्रियः आसीत्' इस वाक्य के 'सीतायाः' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) चतुर्थी (ख) पंचमी (ग) षष्ठी (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ग) षष्ठी।

10. 'प्रकृति सिद्धमिदं हि महात्मनाम्' इस वाक्य के 'महात्मनाम्' पद में कौन-सी विभक्ति है? (2019 DE)
(क) सप्तमी (ख) चतुर्थी (ग) षष्ठी (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ग) षष्ठी।

11. 'जीवेषु मानवाः श्रेष्ठाः' इस वाक्य के 'जीवेषु' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) तृतीया (ख) पञ्चमी (ग) चतुर्थी (घ) सप्तमी
उत्तर – (घ) सप्तमी।

12. 'राजा विप्रेभ्यः धनं ददाति' इस वाक्य में 'विप्रेभ्यः' पद में विभक्ति तथा वचन है–
(क) तृतीया बहुवचन (ख) पञ्चमी बहुवचन (ग) चतुर्थी बहुवचन (घ) षष्ठी बहुवचन
उत्तर – (ग) चतुर्थी बहुवचन।

13. प्रजाभ्यः स्वस्ति। यहाँ प्रजाभ्यः पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) द्वितीया (ख) चतुर्थी (ग) तृतीया (घ) पञ्चमी
उत्तर – (ख) चतुर्थी।

14. बलिः याचकेभ्यः सर्वस्वं ददाति। यहाँ 'याचकेभ्यः' इस रेखांकित पद में विभक्ति है–
(क) तृतीया (ख) चतुर्थी (ग) पञ्चमी (घ) द्वितीया
उत्तर – (ख) चतुर्थी।

15. 'मह्यम् मोदकं रोचते' इस वाक्य में मह्यम् पद में चतुर्थी विभक्ति किस सूत्र से होती है?
(क) चतुर्थी सम्प्रदाने (ख) स्पृहेरीप्सितः
(ग) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः (घ) क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः
उत्तर – (ग) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः।

16. 'विष्णवे नमः'–इस वाक्य के 'विष्णवे' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) षष्ठी (ख) चतुर्थी (ग) तृतीया (घ) द्वितीया
उत्तर – (ख) चतुर्थी।

17. 'न किमपि असाध्यं श्रीमताम्'–इस वाक्य के 'श्रीमताम्' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) चतुर्थी (ख) पंचमी (ग) षष्ठी (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ग) षष्ठी।

18. 'बालकः अश्वात् पतति'–इस वाक्य में 'अश्वात्' पद में विभक्ति, वचन है–
(क) तृतीया एकवचन (ख) द्वितीया द्विवचन (ग) पंचमी एकवचन (घ) षष्ठी बहुवचन
उत्तर – (ग) पंचमी एकवचन।

19. 'छात्रः अध्ययनस्य हेतोः वसति'–वाक्य में प्रयुक्त 'अध्ययनस्य' पद में विभक्ति तथा वचन है–
(क) तृतीया द्विवचन (ख) चतुर्थी बहुवचन (ग) षष्ठी एकवचन (घ) पंचमी एकवचन
उत्तर – (ग) षष्ठी एकवचन।

20. 'बालकः सर्पाद् विभेति' वाक्य में 'सर्पाद्' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) तृतीया (ख) पञ्चमी (ग) द्वितीया (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ख) पञ्चमी।

21. 'कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः' इस वाक्य में 'कवीनां' पद में विभक्ति-वचन है–
(क) द्वितीया, बहुवचन (ख) षष्ठी, बहुवचन (ग) तृतीया, एकवचन (घ) पंचमी, द्विवचन
उत्तर – (ख) षष्ठी, बहुवचन।

22. 'हरये रोचते भक्तिः' इस वाक्य के 'हरये' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) चतुर्थी (ख) प्रथमा (ग) पंचमी (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (क) चतुर्थी।

23. 'कृष्णाय तुभ्यं नमः' इस वाक्य में 'कृष्णाय' पद में कौन-सी विभक्ति-वचन है?
(क) चतुर्थी, एकवचन (ख) चतुर्थी, द्विवचन (ग) चतुर्थी, बहुवचन (घ) तृतीया, एकवचन
उत्तर – (क) चतुर्थी, एकवचन।

24. 'गङ्गे! तव दर्शनात् मुक्तिः' इस वाक्य में 'दर्शनात्' पद में कौन-सी विभक्ति है? (2013 BN, 15 DU)
(क) सप्तमी (ख) पञ्चमी (ग) प्रथमा (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ख) पञ्चमी।

25. 'स्वस्ति भवते' वाक्य के 'भवते' पद में विभक्ति है–
(क) षष्ठी (ख) द्वितीया (ग) चतुर्थी (घ) तृतीया
उत्तर – (ग) चतुर्थी।

26. 'दुष्टः सज्जनाय द्रुह्यति' इस वाक्य में 'सज्जनाय' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) पञ्चमी
उत्तर – (ग) चतुर्थी।

27. 'मातुः निलीयते कृष्णः' इस वाक्य में 'मातुः' पद में विभक्ति-वचन है–
(क) षष्ठी एकवचन (ख) पञ्चमी एकवचन (ग) चतुर्थी एकवचन (घ) सप्तमी एकवचन
उत्तर – (ख) पञ्चमी एकवचन।

28. शिशुः भुवि तिष्ठति वाक्य के 'भुवि' पद में विभक्ति और वचन है– (2010 CJ)
(क) द्वितीया, एक वचन (ख) तृतीया, द्विवचन
(ग) सप्तमी, एक वचन (घ) पञ्चमी, बहुवचन
उत्तर – (ग) सप्तमी, एकवचन।

29. 'यूपाय दारु' इस वाक्य में 'यूपाय' पद में कौन-सी विभक्ति है? (2010 CK)
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) पंचमी
उत्तर – (ग) चतुर्थी।

30. 'नमो गुरुभ्यः' में 'गुरुभ्यः' पद में कौन-सी विभक्ति है? (2010 CH)
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) षष्ठी
उत्तर – (ग) चतुर्थी।

31. 'अग्नये स्वाहा' वाक्य के 'अग्नये' पद में कौन-सी विभक्ति है? (2010 CI, 20 ZQ)
(क) प्रथमा (ख) तृतीया (ग) पंचमी (घ) चतुर्थी
उत्तर – (घ) चतुर्थी।

32. 'गुरुः छात्राय क्रुध्यति।' वाक्य में 'छात्राय' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2011 (IA)]
(क) तृतीय (ख) चतुर्थी (ग) पंचमी (घ) षष्ठी
उत्तर– (ख) चतुर्थी।

33. 'श्री गणेशाय नमः' वाक्य में 'गणेशाय' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2011 (HZ), 19 (CZ)]
(क) प्रथमा (ख) तृतीया (ग) पञ्चमी (घ) चतुर्थी
उत्तर– (घ) चतुर्थी।

34. 'मोक्षाय हरिं भजति' वाक्य में 'मोक्षाय' पद में विभक्ति है– [2011 (HX)]
(क) तृतीया (ख) चतुर्थी (ग) पञ्चमी (घ) षष्ठी
उत्तर– (ख) चतुर्थी।

35. 'विप्राय गां ददाति' वाक्य में 'विप्राय' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2011 (HX)]
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) षष्ठी
उत्तर– (ग) चतुर्थी।

36. 'क्षेत्रेभ्यः' गां 'वारयति' में 'क्षेत्रेभ्यः' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2011 (ID)]
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) पञ्चमी
उत्तर– (ग) चतुर्थी।

37. 'सीतायै नमः' वाक्य में 'सीतायै' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2012 (HE)]
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) पञ्चमी
उत्तर– (ग) चतुर्थी।

38. 'प्रजाभ्यः स्वस्ति' वाक्य में 'प्रजाभ्यः' पद में कौन-सी विभक्ति है?– [2012 (HF)]
(क) तृतीया (ख) चतुर्थी (ग) पञ्चमी (घ) षष्ठी।
उत्तर– (ख) चतुर्थी।

39. 'सोमाय स्वाहा' वाक्य में 'सोमाय' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2012 (HG)]
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) पंचमी
उत्तर– (ग) चतुर्थी।

40. 'कविषु कालिदासः श्रेष्ठः' वाक्य में 'कविषु' में कौन-सी विभक्ति है? [2012 (HH)]
(क) प्रथमा (ख) चतुर्थी (ग) पंचमी (घ) सप्तमी
उत्तर– (घ) सप्तमी।

41. 'शत्रुभ्यः क्रुध्यति वीरः' वाक्य में 'शत्रुभ्यः' पद में विभक्ति है? [2012 (HJ)]
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) षष्ठी
उत्तर– (ग) चतुर्थी।

42. 'कर्त्तव्यौ भातृषु स्नेहः' वाक्य में 'भातृषु' पद में विभक्ति है– [2012 (HI)]
(क) चतुर्थी विभक्ति (ख) पञ्चमी विभक्ति (ग) सप्तमी विभक्ति (घ) तृतीया विभक्ति
उत्तर– (ग) सप्तमी विभक्ति।

43. 'हरये भक्तिः रोचते' में 'हरये' पद में विभक्ति है– [2013 (BJ, BP), 14 (CT)]
(क) द्वितीया (ख) चतुर्थी (ग) पंचमी (घ) तृतीया
उत्तर– (ख) चतुर्थी।

44. 'बाला पुष्पेभ्यः स्पृह्यति' इस वाक्य में 'पुष्पेभ्यः' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2013 (BJ)]
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) षष्ठी
उत्तर– (ग) चतुर्थी।

45. 'हिमालयात् गङ्गा प्रभवति' इस वाक्य में 'हिमालयात्' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2013 (BM)]
(क) चतुर्थी (ख) पञ्चमी (ग) षष्ठी (घ) सप्तमी (ङ) द्वितीया
उत्तर– (ख) पञ्चमी।

46. 'लक्ष्म्यै नमः' इस वाक्य में 'लक्ष्म्यै' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2013 (BD)]
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) पंचमी
उत्तर– (ग) चतुर्थी।

47. 'तुभ्यम् स्वस्ति' इस वाक्य में 'तुभ्यम्' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2013 (BK)]
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) षष्ठी
उत्तर– (ग) चतुर्थी।

48. 'गंगे तव दर्शनात् मुक्तिः' इस वाक्य में 'दर्शनात्' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2013 (BN)]
(क) सप्तमी (ख) पञ्चमी (ग) प्रथमा
उत्तर– (ख) पञ्चमी।

49. 'भवते रोचते कथा' इस वाक्य में 'भवते' पद में कौन-सी विभक्ति एवं वचन है? [2013 (BN)]
(क) सप्तमी, एकवचन (ख) द्वितीया, बहुवचन (ग) चतुर्थी, एकवचन (घ) प्रथमा, द्विवचन
उत्तर– (ग) चतुर्थी, एकवचन।

50. 'नृपः सिंहासने अस्ति' में 'सिंहासने' पद में विभक्ति है– [2014 (CS)]
(क) तृतीय (ख) चतुर्थी (ग) पंचमी (घ) सप्तमी
उत्तर– (घ) सप्तमी।

51. 'तिलेषु तैलम्' में 'तिलेषु' पद में विभक्ति है– [2014 (CU]
(क) द्वितीया (ख) पञ्चमी (ग) षष्ठी (घ) सप्तमी
उत्तर– (घ) सप्तमी।

52. 'हरये नमः' में 'हरये' पद में विभक्ति है– [2014 (CV)]
'हरये नमः' पद में विभक्ति है– [2017 (NJ)]
(क) चतुर्थी (ख) द्वितीया (ग) सप्तमी (घ) पञ्चमी
उत्तर– (क) चतुर्थी।

53. 'मोक्षे इच्छाऽस्ति' में 'मोक्षे' पद में विभक्ति है– [2014 (CV)]
(क) षष्ठी (ख) तृतीया (ग) प्रथमा (घ) सप्तमी
उत्तर– (घ) सप्तमी।

54. 'पितृभ्यो नमः' में 'पितृभ्यः' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2014 (CW)]
(क) सप्तमी (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी
उत्तर– (ग) चतुर्थी।

55. 'उपाध्यायाद् अधीते' में 'उपाध्यायाद्' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2014 (CW)]
(क) षष्ठी (ख) द्वितीया (ग) चतुर्थी (घ) पञ्चमी
उत्तर– (घ) पञ्चमी।

56. 'हनुमते नमः' वाक्य में 'हनुमते' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2014 (CX)]
(क) सप्तमी (ख) षष्ठी (ग) चतुर्थी (घ) पञ्चमी
उत्तर– (ग) चतुर्थी।

57. 'ग्रामं निकषा समुद्रोवर्तते' में 'ग्रामं' पद में विभक्ति है? [2015 (DT)]
(क) चतुर्थी (ख) द्वितीया (ग) पञ्चमी (घ) सप्तमी
उत्तर– (ख) द्वितीया।

58. 'गोष्ठे गावः तिष्ठन्ति' में 'गोष्ठे' पद में विभक्ति है? [2015 (DT)]
(क) तृतीया (ख) प्रथमा (ग) सप्तमी (घ) षष्ठी
उत्तर– (ग) सप्तमी।

59. 'नमो भगवते वासुदेवाय' में 'वासुदेवाय' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2016 (TJ)]
(क) प्रथमा (ख) षष्ठी (ग) चतुर्थी (घ) सप्तमी
उत्तर– (ग) चतुर्थी।

60. 'सः चौरात् बिभेति' इस वाक्य के 'चौरात्' पद में विभक्ति है? [2016 (TK)]
(क) द्वितीया (ख) पञ्चमी (ग) सप्तमी (घ) षष्ठी
उत्तर– (ख) पञ्चमी।

61. 'देवदत्तः मातरि स्निह्यति' वाक्य में 'मातरि' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2016 (TM)]
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) सप्तमी (घ) षष्ठी
उत्तर– (ग) सप्तमी।

62. 'भगवतः कृपा' में 'भगवतः' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2016 (TO)]
(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) चतुर्थी (घ) षष्ठी
उत्तर– (घ) षष्ठी।

63. 'रमया सह पठति' वाक्य में 'रमया' पद में कौन विभक्ति है? [2016 (TO)]
(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) चतुर्थी
उत्तर– (ग) तृतीया।

64. 'शिशुः पादेन खञ्जः' वाक्य में 'पादेन' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2016 (TP)]
(क) द्वितीया (ख) पञ्चमी (ग) तृतीया (घ) षष्ठी
उत्तर– (ग) तृतीया।

65. 'असौ स्थाल्यां पचति' वाक्य के 'स्थाल्यां' पद में विभक्ति है? [2017 (NK)]
(क) पञ्चमी (ख) षष्ठी (ग) सप्तमी (घ) द्वितीया
उत्तर– (घ) द्वितीया।

66. 'देवदत्तः पापात् जुगुप्सते' वाक्य में 'पापात्' पद में विभक्ति है? [2017 (NL)]
(क) चतुर्थी (ख) पञ्चमी (ग) द्वितीया (घ) षष्ठी
उत्तर– (ख) पञ्चमी।

67. 'लक्ष्मणः रामस्य प्रियतमः भ्राता आसीत्।' उपर्युक्त वाक्य के 'रामस्य' पद में विभक्ति होगी– [2017 (NM)]
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) पञ्चमी (घ) षष्ठी
उत्तर– (घ) षष्ठी।

68. 'सुशीला सिंहात् बिभेति।' वाक्य में 'सिंहात्' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2017 (NN)]
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) पञ्चमी (घ) षष्ठी
उत्तर– (ग) पञ्चमी।

69. 'रामः तस्मै क्रुध्यति' वाक्य में 'तस्मै' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2017 (NP)]
(क) पञ्चमी (ख) षष्ठी (ग) चतुर्थी (घ) तृतीया
उत्तर– (ग) चतुर्थी।

70. 'छात्रैः सह क्रीड़ास्थले आगच्छ!' वाक्य के 'छात्रैः' पद में कौन-सी विभक्ति और वचन है? [2018 (BK)]
(क) द्वितीया, बहुवचन (ख) तृतीया, बहुवचन (ग) चतुर्थी, एकवचन (घ) पंचमी, द्विवचन
उत्तर– (ख) तृतीया, बहुवचन।

71. 'बालकेभ्यः फलानि यच्छति' वाक्य में 'बालकेभ्यः' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2018 (BN)]
(क) सप्तमी (ख) चतुर्थी (ग) तृतीया (घ) षष्ठी
उत्तर– (ख) चतुर्थी।

72. 'शत्रुभ्यः क्रुध्यति वीरः' रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है? [2019 (DA)]
(क) चतुर्थी (ख) पंचमी (ग) तृतीया (घ) षष्ठी
उत्तर– (क) चतुर्थी।

73. 'स्वामी सेवकाय क्रुध्यति' रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है? [2019 (DB)]
(क) पञ्चमी (ख) चतुर्थी (ग) षष्ठी (घ) द्वितीया
उत्तर– (ख) चतुर्थी।

74. रामः बाणेन रावणं हतवान्। [2019 (DC), 20 (ZS)]
(क) चतुर्थी (ख) तृतीया (ग) द्वितीया (घ) पञ्चमी
उत्तर– (ख) तृतीया।

75. ''रामः बाणेन रावणं हतवान्'' में रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है? [2020 (ZP)]
(क) चतुर्थी (ख) पञ्चमी (ग) तृतीया (घ) षष्ठी
उत्तर–(घ) षष्ठी।

76. 'अग्नपे स्वाहा' में रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है? [2020 (ZQ)]
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) सप्तमी
उत्तर– (ग) चतुर्थी।

●●

3 समास

(अंक-3)

समास का अर्थ है – संक्षिप्त। जब दो या दो से अधिक पद परस्पर मिलकर नया शब्द बनाते हैं, तो उनके बीच की विभक्तियाँ लुप्त हो जाती हैं और बना हुआ शब्द समास कहलाता है।

यथा — रामस्य पुत्रः = रामपुत्रः
विशालः बाहुः यस्य सः = विशालबाहुः।

विग्रह – समास के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए जिन पदों को अलग किया जाता है, उन्हें विग्रह कहते हैं। यथा— रामस्य पुत्रः, विशालः बाहुः यस्य सः।

समस्त-पद – सकमास होने पर जो शब्द बनता है, उसे समस्त पद या सामासिक पद कहते हैं।

यथा — रामपुत्रः, विशालबाहुः।

समास के भेद

समास के प्रमुख रूप से छह भेद हैं—

(1) अव्ययीभाव समास (2) तत्पुरुष समास
(3) कर्मधारय समास (4) द्विगु समास
(5) बहुव्रीहि समास (6) द्वन्द्व समास

(1) अव्ययीभाव समास

जिस समास में पूर्व पद अव्यय हो और उसी की प्रधानता हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। यथा—

समस्त पद	**समास विग्रह**	**हिन्दी अर्थ**	
अधिहरि	हरौ इति	हरि के अधीन	(2019 DC)
उपनगरम्	नगरस्य समीपम्	नगर के पास	
निर्मक्षिकम्	मक्षिकाणाम अभावः	मक्खियों का अभाव	(2009 DU, DY, 10 CJ, CK)
निर्जनाम्	जनानाम् अभावः	मनुष्यों का अभाव	
अतिहिमम्	हिमस्य अत्ययः	हिम का नाश हो जाने पर	
प्रतिदिशम्	दिशं दिशं प्रति	प्रत्येक दिशा	

नियम (1) – अव्ययं विभक्ति समीप समृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावत्ययासम्प्रतिप्रादुर्भावपश्चात् यथाऽनुपूर्व्ययोग पद्यसादृश्य सम्पतिसाकल्याऽन्तवचनेषु।

यथा—

समस्त पद	**विग्रह**	**अर्थ**	**सूत्र के आधार पर अव्यय का अर्थ**
अधिहरि	हरि ङि अधि	हरि के अधीन	विभक्ति अर्थ में।
उपकृष्णम्	कृष्णस्य समीपम्	कृष्ण के समीप	समीप अर्थ में।
सुभद्रम्	भद्राणां समृद्धिः	भद्रों की समृद्धि	समृद्धि अर्थ में।

दुर्राक्षसम्	राक्षसाणां व्यृद्धि	राक्षसों की अवनति	व्यृद्धि अर्थ में।
निर्दोषः (2019 CZ, DE)	दोषाणाम् अभावः	दोषों का अभाव	अभाव अर्थ में।
निष्प्राणः (2017 NN)	प्राणानाम् अभावः	प्राणों का अभाव	अभाव अर्थ में।
निर्विघ्नम्	विघ्नानाम् अभावः	विघ्नों का अभाव	अभाव अर्थ में।
अतिहिमम् (2018 BN)	हिमस्य अत्यय	हिम का नाश हो जाने पर	अव्यय (नाश) अर्थ में।
अतिनिद्रम्	निद्रा सम्प्रति न युज्यते	निद्रा के अनुचित समय में	अनुचित अर्थ में।
इतिहरि (2020ZR)	हरिशब्दस्य प्रकाशः	हरि शब्द का अर्थ में उच्चारण	प्रकाश अर्थ में।
अनुकृष्णम् (2017 NO)	कृष्णस्य पश्चात्	कृष्ण के पीछे	पश्चात् अर्थ में।
अनुरूपम् (2017 NM, 20ZU)	रूपस्य योग्यम्	एक रूप के योग्य	यथार्थ योग्यता अर्थ में
प्रत्येकं	एकम् एवं प्रति	प्रति एक	यथार्थ वीप्सा अर्थ में।
यथाशक्ति (2011 HX, ID, 19 DB, DD, DE, 20 ZP)	शक्तिम् अनतिक्रम्य	शक्ति के अनुसार	अनतिक्रम्य अर्थ में।
अनुज्येष्ठम्	ज्येष्ठस्यानुपूर्ण्येण	जयेष्ठक्रम के अनुसार	अनुपूर्व्य क्रम अर्थ में।
सचक्रम्	चक्रेण युगपद्	चक्र के साथ-साथ	योगपद्य अर्थ में।
सहरि (2017 NN)	हरेः सादृश्यम्	हरि के समान	सादृश्य अर्थ में।
सक्षत्रम्	क्षत्रानां सम्पत्ति	क्षत्रियों की सम्पत्ति	सम्पत्ति अर्थ में।
सतृणम् (2018 BK)	तृणम् अपि अपरित्यज्य	तिनके को भी न छोड़कर	साकल्य अर्थ में।
सबालकाण्डम्	बालकाण्डपर्यन्तम्	बालकाण्ड तक	पर्यन्त अर्थ में।
अनुविष्णु (2014 CS)	विष्णोः पश्चात्	विष्णु के पीछे	पश्चात् अर्थ में।

नियम (2) नदीभिश्च – नदी विशेषवाची शब्दों के साथ संख्यावाची शब्दों का समास होता है और वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। यथा—

पंचगंगम्	पञ्चानां गंगानां समाहारः	पाँच गंगाओं का समाहार	नदी शब्द के अर्थ में
द्वियमुनम्	द्वयोः यमुनयोः समाहारः	दो यमुनाओं का समाहार	,, ,,

नियम (3) अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः – शरद् आदि शब्दों से अव्ययीभाव समास में समासान्त टच् प्रत्यय होता है। टच् प्रत्यय में ट् और च् का लोप हो जाता है केवल 'अ' शेष रहता है। यथा–

उपशरदम्	शरदः समीपम्	शरद् के समीप

नियम (4) अनश्च – जिस अव्ययीभाव समास के अन्त में अन् होता है वह अन्नन्त अव्ययीभाव है। उससे समासान्त टच् प्रत्यय होता है। यथा—

उपराजम् (2014 CS)	राज्ञः समीपम्	राजा के समीप

नियम (5) नपुंसकादन्यतरस्याम् – अन् अन्तवाला जो नपुंसक लिंग शब्द है तदन्त अव्ययीभाव से समासान्त टच् प्रत्यय विकल्प से होता है। यथा—

उपचर्मम्	चर्मणः समीपम्	चर्म के समीप

(2) द्विगु समास

संख्यापूर्वो द्विगुः– अर्थात् जिस समानाधिकरण तत्पुरुष में पूर्व पद या प्रथम पद संख्यावाची होता है, द्विगु समास कहलाता है। यथा—

समस्त पद	समास-विग्रह	हिन्दी अर्थ
पंचगवम् (2014 CS)	पञ्चानाम् गवाम् समाहारः	पाँच गायों का समूह
पञ्चवटी	पञ्चानाम् वटानां समाहारः	पाँच वटियों का समाहार
त्रिलोकी (2019 DD)	त्रयाणाम् लोकानाम् समाहारः	तीन लोकों का समाहार

त्रिभुवनम् (2011 HX)	त्रयाणाम् भुवनानाम् समाहारः	तीनों भुवनों का समूह
पञ्चामृतम्	पञ्चानाम् अमृतानाम् समाहारः	पाँच अमृतों का समूह
पञ्चपात्रम् (2020 ZU)	पञ्चानाम् पात्राणाम् समाहारः	पाँच पात्रों का समूह

(3) द्वन्द्व समास

'चार्थे द्वन्द्वः' अर्थात् जिसमें प्रायः पूर्वपद तथा उत्तरपद प्रधान होते हैं, द्वन्द्व समास कहलाता है। यह समस्त पद प्रधान समास है। इसमें 'च' से दो या दो से अधिक संज्ञाओं को जोड़ा जाता है।

द्वन्द्व समास के भेद

(क) इतरेतर द्वन्द्व — जहाँ द्वन्द्व में आये हुए दोनों पदों का अपना अलग-अलग अस्तित्व होता है, वहाँ इतरेतर द्वन्द्व होता है। यथा— 'रामलक्ष्मणौ' में राम तथा लक्ष्मण का अलग-अलग अस्तित्व है। अतः यहाँ रामलक्ष्मणौ में इतरेतर द्वन्द्व समास है।

समस्त पद	समास-विग्रह	हिन्दी अर्थ
सीतारामौ (2017 NN)	सीता च रामश्च	सीता और राम
रामकृष्णौ (2010 CK, 18 BK, BN, 20 ZP)	रामः च कृष्णः च	राम और कृष्ण
देवासुरौ (2019 DE)	देवश्च असुरश्च	देवता और असुर
कृष्णार्जुनौ (2017 NK)	कृष्णश्च अर्जुनश्च	कृष्ण और अर्जुन
पार्वतीपरमेश्वरौ (2010 CG)	पार्वती च परमेश्वरश्च	पार्वती और परमेश्वर
हरिहरौ (2019 DA, DC)	हरिश्च हरश्चः	हरि और हर
ईशकृष्णौ (2017 NO, 19 DC)	ईशश्च कृष्णश्च	ईश और कृष्ण
हस्तपादौ (2017 NO)	हस्तश्च पादश्च	हाथ और पैर
सज्जनदुर्जनौ	सज्जनः च दुर्जनः च	सज्जन और दुर्जन
शिवकेशवौ (2011 ID, 19 DA, 20 ZR)	शिवश्च केशवश्च	शिव और केशव
रामलक्ष्मणौ (2010 CJ)	रामः च लक्ष्मणः च	राम और लक्ष्मण
पितरौ (2011 IB, 19 DD)	माता च पिता च	माता और पिता
भीमार्जुनौ (2011 HX)	भीमः च अर्जुनः च	भीम और अर्जुन

(ख) समाहार द्वन्द्व — जिस द्वन्द्व समास में आए हुए पद अपना अर्थ बतलाने के साथ-साथ समूह या समाहार का बोध कराते हैं उसे समाहार द्वन्द्व कहते हैं। यथा—पाणिपादम् पाणी च पादौ च तेषां समाहारः—पाणिपादम्।

समस्त पद	समास-विग्रह	हिन्दी अर्थ
रथिकाश्वारोहम्	रथिकः च अश्वारोही च	कोचवान् और घुड़सवार
भेरीपटहम्	भेरी च पटहश्च	भेरी और पटह
अहिनकुलम्	अहिश्च नकुलश्च	अहि और नकुल
अहोरात्रम् (2017 NO)	अहः च रात्रि च	रात और दिन

(ग) एकशेष द्वन्द्व — जिस द्वन्द्व समास में दो या दो से अधिक पदों में से केवल एक पद शेष रहता है उसे 'एकशेष द्वन्द्व' समास कहते हैं। सामासिक पद का वचन समास में स्थित शब्दों की संख्या के आधार पर होता है। यदि समास में पुंल्लिग तथा स्त्रीलिंग दोनों प्रकार के शब्द हों तो पुंल्लिग पद ही शेष रहेगा।

यथा—

समस्त पद	समास-विग्रह	हिन्दी अर्थ
दुहितरौ (2017 NL)	दुहिता च दुहिता च	दो पुत्रियाँ
मयूरौ (2017 NM, NN)	मयूरी च मयूरः च	मयूरी और मयूर

गत वर्ष की बोर्ड परीक्षाओं में पूछे गये समास (उत्तर सहित)

[2011]

नीलाम्बरः	(IC)	नीलम् अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि समास
रामलक्ष्मणौ	(IA, IC)	रामः च लक्ष्मणः च	द्वन्द्व समास
पीताम्बरः	(IA, 17 NJ)	पीतम् अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि समास
दशाननः	(IA, IB, HZ, 17 NP)	दशः आननः यस्य सः	बहुव्रीहि समाम
प्रतिदिनम्	(IA, 17 NL,NO,NP, 20ZO,ZS)	दिनं दिनं प्रति	अव्ययीभावः
हरिहरौ	(HZ)	हरि च हर च	द्वन्द्वः
निर्मक्षिकम्	(HZ)	मक्षिकाणां अभावः	अव्ययीभाव
शिवकेशवौ	(IB, 19 DB, 20 ZR)	शिव च केशव च	द्वन्द्वः
पाणिपादम्	(HZ)	पाणी च पादौ च	द्वन्द्वः
घनश्यामः	(HZ)	घन इव श्यामः	कर्मधारय समास

[2012]

यथाशक्तिः	(HD,HE,HI, 19 DD, 20 ZR)	शक्तिमनतिक्रम्य	अव्ययीभाव
पीताम्बरः	(HD,HE,HG,HI)	पीतम् अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि
पाणिपादम्	(HD,HJ)	पाणी च पादौ च	द्वन्द्व
निर्मक्षिकम्	(HD, 17 NK)	मक्षिकाणाम् अभावः	अव्ययीभाव
घनश्यामः	(HD,HF,HG,HJ)	घन इव श्यामः	कर्मधारय
पार्वतीपरमेश्वरौ	(HE)	पार्वती च परमेश्वरः च	द्वन्द्व
सीतापतिः	(HE)	सीतायाः पतिः	षष्ठी तत्पुरुष
उपसमुद्रम्	(HE, 19 DA)	समुद्रस्य समीपम्	अव्ययीभाव
राजपुरुषः	(HF)	राज्ञः पुरुषः	षष्ठी तत्पुरुष
अधिहरिः	(HF, 17 NM, 19 DC)	हरौ इति	अव्ययीभाव
हरिहरौ	(HF, 17 NM)	हरिश्च हरश्च	द्वन्द्व
त्रिभुवन	(HF)	त्रयाणाम् भुवनानाम् समाहारः	द्विगु
लम्बोदर	(HG,HI,HJ)	लम्बम् उदरं यस्य सः	बहुव्रीहि
ईश्वरभक्तः	(HG,HH)	ईश्वरस्य भक्तः	षष्ठी तत्पुरुष
आसमुद्रम्	(HH)	समुद्र पर्यन्तम्	अव्ययीभाव
चरणकमलम्	(HH)	कमल इव चरणम्	कर्मधारय
भीमार्जुनौ	(HH)	भीमः च अर्जुनः च	द्वन्द्व
प्रतिदिनम्	(HG, 17 NL)	दिनम् दिनम्	अव्ययीभाव

[2013]

अधि हरिः	(BK)	हरौ इति	अव्ययीभाव समास
राजपुरुषः	(BK, BN)	राज्ञः पुरुषः	षष्ठी तत्पुरुष समास
पीताम्बरः	(BK, BL, BN, 19 DA)	पीतः अम्बरः यस्य सः	बहुव्रीहि समास
घनश्यामः	(BK)	घन इव श्यामः	कर्मधारय समास
नीलकमलम्	(BK, BP)	नीलम् इव कमलम्	कर्मधारय समास

पितरौ	(BK, 19 DD)	माता च पिता च	द्वन्द्व समास
उपकृष्णम्	(BL, BM)	कृष्णस्य समीपम्	अव्ययीभाव समास
निर्मक्षिकम्	(BL)	मक्षिकाणाम् अभावः	अव्ययीभाव समास
देवालयः	(BL)	देवस्य आलयः	षष्ठी तत्पुरुष समास
रामकृष्णौ	(BL)	रामः च कृष्णः च	द्वन्द्व समास
त्रिलोकम्	(BL)	त्रयाणाम् लोकानाम् समाहारः	द्विगु समास
कृष्णसर्पः	(BM, 20 ZQ)	कृष्णः चासौ सर्पः	कर्मधारय समास
कुम्भकारः	(BM, BN)	कुम्भं करोति	उपपद तत्पुरुष समास
पार्वतीपरमेश्वरौ	(BM, 20 ZU)	पार्वती च परमेश्वरः च	द्वन्द्व समास
वाणी विनायकौ	(BN)	वाणी च विनायक च	द्वन्द्व समास
पञ्चगवम्	(BN, 17 NK, NM, NN)	पंचानाम् गवाम् समाहारः	द्विगु समास
यथाशक्तिः	(BJ, BM)	शक्तिमतिक्रम्य	अव्ययीभाव समास
राजपुत्रः	(BJ, 19 DB)	राज्ञः पुत्रः	षष्ठी तत्पुरुष समास
नीलाम्बरम्	(BJ)	नीलम् अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि समास
उपसमिधम्	(BP)	समिधस्य समीपम्	अव्ययीभाव समास
मातापितरौ	(BP, 17 NL)	माता च पिता च	द्वन्द्व समास
प्राप्तोदकः	(BP)	प्राप्तं उदकं यं स	बहुव्रीहि समास
रामलक्ष्मणौ	(BO)	रामः च लक्ष्मणः च	द्वन्द्व समास
श्वेताम्बरः	(BO)	श्वेतम् अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि समास
यथोचित	(BO, 19 DF)	उचित अनतिक्रम्य	अव्ययीभाव समास

[2014]

अनुविष्णुः	(CS)	विष्णोः पश्चात्	अव्ययीभाव समास
उपराजम्	(CS)	राज्ञः समीपम्	अव्ययीभाव समास
कृष्णाश्रितः	(CS)	कृष्णम् आश्रितः	द्वितीया तत्पुरुष समास
जीवनप्राप्तः	(CS)	जीवनम् प्राप्तः	द्वितीया तत्पुरुष समास
नीलोत्पलम्	(CS, CY)	नीलं च तत् उत्पलम्	कर्मधारय समास
पञ्चगवम्	(CS, CV)	पञ्चानाम् गवाम् समाहारः	द्विगु समास
नीलकमलम्	(CT)	नीलमेव कमलम्	कर्मधारय समास
रामलक्ष्मणौ	(CT, CU, 17 NP)	रामश्च लक्ष्मणश्च	द्वन्द्व समास
राजपुरुषः	(CT, 20 ZT)	राज्ञः पुरुषः	षष्ठी तत्पुरुष समास
यथोचितम्	(CT, CX)	उचितमनतिक्रम्य	अव्ययीभाव समास
देवालयः	(CT)	देवस्य आलयः	षष्ठी तत्पुरुष समास
निर्मक्षिकम्	(CT)	मक्षिकाणाम् अभावः	अव्ययीभाव समास
उपकृष्णम्	(CU)	कृष्णस्य समीपम्	अव्ययीभाव समास
यूपादास	(CU)	यूपाय दासः	चतुर्थी तत्पुरुष समास
जितेन्द्रियः	(CU, CX)	जितानि इन्द्रियाणि येन सः	बहुव्रीहि समास
चोरभयम्	(CU)	चौरात् भयम्	पंचमी तत्पुरुष समास
त्रिभुवनम्	(CU)	त्रयाणाम् भुवनानाम् समाहारः	द्विगु समास
यथाशक्ति	(CV, 20 ZO,ZT)	शक्तिम् अनतिक्रम्य	अव्ययीभाव समास
भूतवलिः	(CV)	भूतेभ्यः वलिः	चतुर्थी तत्पुरुष समास
प्राप्तोदकः	(CV)	प्राप्तं उदकं यस्य सः	बहुव्रीहि समास

घनश्यामः	(CV, CY)	घन इव श्यामः	बहुव्रीहि समास
हरिहरौ	(CV, CX, 20 ZT)	हरिश्च हरश्च	द्वन्द्व समास
उपगङ्गम्	(CW)	गङ्गायाः समीपम्	अव्ययीभाव समास
शिवकेशवौ	(CW)	शिवश्च केशवश्च	द्वन्द्व समास
पीताम्बरम्	(CW, CX)	पीतम् अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि समास
लम्बोदरः	(CW)	लम्बम् उदरं यस्य सः	बहुव्रीहि समास
दशाननः	(CW, 17 NP)	दशः आननः यस्य सः	बहुव्रीहि समास
श्वेताम्बरम्	(CX)	श्वेतम् अम्बरम् यस्य सः	बहुव्रीहि समास
उपकृष्णम्	(CY)	कृष्णस्य समीपम्	अव्ययीभाव समास
अधिहरि	(CY, 17 NN)	हरौ इति	अव्ययीभाव समास
कष्टापन्नः	(CY)	कष्टम् आपन्नः	द्वितीया तत्पुरुष समास
नीलाम्बरः	(CY)	नीलम् अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि समास

[2015]

लक्ष्मीपतिः	(DU)	लक्ष्म्याः पतिः	षष्ठी तत्पुरुष
श्वेताम्बरम्	(DU)	श्वेतम् अम्बरम् यस्य सः	बहुव्रीहि समास
यथाशक्ति	(DU, 17 NP)	शक्ति अनतिक्रम्य	अव्ययीभाव समास
राजपुरुषः	(DU)	राज्ञः पुरुषः	षष्ठी तत्पुरुष समास
लम्बोदरः	(DT)	लम्बम् उदरं यस्य सः	बहुव्रीहि समास
शिवकेशवौ	(DT)	शिवश्च केशवश्च	द्वन्द्व समास
त्रिभुवनम्	(DT, 19 DF)	त्रयाणां भुवनानाम् समाहारः	द्विगु समास
घनश्यामः	(DT, 20 ZT)	घन इव श्यामः	कर्मधारय समास
उपगङ्गम्	(DT)	गङ्गायाः समीपम्	अव्ययीभाव समास
पीताम्बरम्	(DT)	पीतम् अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि समास

[2016]

भूतबलिः	(TJ)	भूतेभ्यः बलिः	चतुर्थी तत्पुरुष
प्राप्तोदकः	(TJ)	प्राप्तं उदकं यस्य सः	बहुव्रीहि समास
मातापितरौ	(TJ, 17 NL)	माता च पिता च	द्वन्द्व समास
यथोचितम्	(TJ, 19 DF, 20 ZQ)	उचित अनतिक्रम्य	अव्ययीभाव समास
जितेन्द्रियः	(TJ)	जितानि इन्द्रियाणि येन सः	बहुव्रीहि समास
उपकूलम्	(TK, 17 NK)	कूलस्य समीपम्	अव्ययीभाव
अध्ययनकुशलः	(TK)	अध्ययने कुशलः	तत्पुरुष समास
घनश्याम	(TK, TO)	घन इव श्यामः	बहुव्रीहि समास
नवरात्रम्	(TK, 17 NL)	नवानाम् रात्रीणाम् समाहारः	द्विगु समास
दिव्याम्बरः	(TK)	दिव्यम् अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि समास
पितरौ	(TO, 19 CZ, 20 ZO)	माता च पिता च	द्वन्द्व समास
उपनगरम्	(TP)	नगरस्य समीपम्	अव्ययीभाव समास
यथारुचि	(TP)	रुचि अनतिक्रम्य	अव्ययीभाव समास
विष्णुशिवौ	(TP)	विष्णुश्च शिवश्च	द्वन्द्व समास
प्रज्ञाचक्षुः	(TP)	प्रज्ञा चक्षुः इव	कर्मधारय समास
ईशकृष्णा	(DC)	ईशश्च कृष्णश्च	द्वन्द्व समास

निर्दोषः	(DE)	दोषाणाम् अभावः	अव्ययीभाव समास
देवासुरौ	(DE)	देवश्च असुरश्च	द्वन्द्व समास

[2017]

अनुदिनम्	(NK)	दिनस्य पश्चात्	अव्ययीभाव समास
उपगृहम्	(NL)	गृहस्य समीपम्	अव्ययीभाव समास
पञ्चखट्वम्	(NM)	पञ्चानां खट्वानां समाहारः	द्विगु समास
महावीरः	(NP)	महान् वीरः यस्य सः	बहुव्रीहि समास
सूर्योदयः	(NP)	सूर्यस्य उदयः	षष्ठी तत्पुरुष समास

[2018]

सतृणम्	(BK)	तृणमपि अपरित्यज्य	अव्ययीभाव समास
आचन्द्रोदयः	(BK)	चन्द्रोदयस्य पर्यन्तम्	अव्ययीभाव समास
त्रिफला	(BK)	त्रयाणां फलानां समाहारः	द्विगु समास
रामकृष्णौ	(BK, BN)	रामः च कृष्णः च	द्वन्द्व समास
अतिहिमम्	(BN)	हिमस्य अत्यय	अव्ययीभाव समास
पञ्चामृतम्	(BN)	पञ्चानाम् अमृतानाम् समाहारः	द्विगु समास
निर्मक्षिकम्	(BN)	मक्षिकाणाम् अभावः	अव्ययीभाव समास

[2019]

ईशकृष्णौ	(DC)	ईशश्च कृष्णश्च	द्वन्द्व समास
निर्दोषः	(DE)	दोषाणाम् अभावः	अव्ययीभाव समास
देवासुरौ	(DE)	देवश्च असुरश्च	द्वन्द्व समास

[2020]

रामश्याये	(ZQ)	रामश्च श्यामश्च	द्वन्द्व समास
पञ्चगङ्गम्	(ZR)	पञ्चानां गङ्गनां समाहारः	द्विगु समास

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'अनुरूपम्' में समास है–
(क) द्विगु (ख) तत्पुरुष (ग) अव्ययीभाव (घ) कर्मधारय
उत्तर – (ग) अव्ययीभाव।

2. 'प्रतिदिनम्' में समास है–
(क) अव्ययीभाव (ख) बहुव्रीहि (ग) द्विगु (घ) तत्पुरुष
उत्तर – (क) अव्ययीभाव।

3. 'सपुत्रः' में समास होगा–
(क) अव्ययीभाव (ख) बहुव्रीहि (ग) द्विगु (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ख) बहुव्रीहि।

4. 'जितेन्द्रियः' में समास है–
अथवा **'जितेन्द्रियः' में प्रयुक्त समास का नाम है–** (2019DA)
(क) द्विगु (ख) द्वन्द्व (ग) अव्ययीभाव (घ) बहुव्रीहि
उत्तर – (घ) बहुव्रीहि।

5. **'पञ्चपात्रम्' में समास है–**
(क) द्वन्द्व (ख) अव्ययीभाव (ग) कर्मधारय (घ) द्विगु
उत्तर – (घ) द्विगु।

6. **'नवरत्नम्' में कौन-सा समास है?**
(क) द्विगु (ख) बहुव्रीहि (ग) अव्ययीभाव (घ) तत्पुरुष
उत्तर –(क) द्विगु ।

7. **'प्रत्यक्षम्' में कौन-सा समास है?**
(क) द्विगु (ख) अव्ययीभाव (ग) कर्मधारय (घ) द्वन्द्व
उत्तर – (ख) अव्ययीभाव।

8. **'निर्मक्षिकम्' में कौन-सा समास है?**
(क) द्विगु (ख) बहुव्रीहि (ग) द्वन्द्व (घ) अव्ययीभाव
उत्तर – (घ) अव्ययीभाव।

9. **'चन्द्रशेखरः' में कौन-सा समास है?**
(क) अव्ययीभाव (ख) तत्पुरुष (ग) बहुव्रीहि (घ) द्वन्द्व
उत्तर – (ग) बहुव्रीहि।

10. **'पीताम्बरः' में कौन-सा समास है?** (2019DC)
(क) द्विगु (ख) बहुव्रीहि (ग) अव्ययीभाव (घ) तत्पुरुष
उत्तर – (ख) बहुव्रीहि।

11. **'उपकृष्णम्' में कौन-सा समास है?**
(क) द्विगु (ख) अव्ययीभाव (ग) कर्मधारय (घ) द्वन्द्व
उत्तर – (ख) अव्ययीभाव।

12. **'नवरात्रम्' में समास होगा–**
(क) द्विगु (ख) द्वन्द्व (ग) कर्मधारय (घ) अव्ययीभाव
उत्तर – (क) द्विगु।

13. **'निर्दोषः' में समास है–**
(क) नञ् तत्पुरुष (ख) द्वन्द्व (ग) अव्ययीभाव (घ) कर्मधारय
उत्तर –(ग) अव्ययीभाव।

14. **'लब्धप्रतिष्ठः' में कौन-सा समास है?**
(क) द्विगु (ख) द्वन्द्व (ग) बहुव्रीहि (घ) तत्पुरुष
उत्तर – (ग) बहुव्रीहि।

15. **'गंगायमुने' शब्द में कौन-सा समास है?**
(क) द्विगु (ख) बहुव्रीहि (ग) द्वन्द्व (घ) अव्ययीभाव
उत्तर – (ग) द्वन्द्व।

16. **'पञ्चवटी' शब्द में कौन-सा समास है?** (2019DD)
(क) अव्ययीभाव (ख) द्वन्द्व (ग) बहुव्रीहि (घ) द्विगु
उत्तर – (घ) द्विगु।

17. **'महादेवः' में कौन-सा समास है?**
(क) द्विगु (ख) द्वन्द्व (ग) कर्मधारय (घ) बहुव्रीहि
उत्तर – (ग) कर्मधारय।

18. **'विद्याहीनः' में कौन-सा समास है?**
(क) कर्मधारय (ख) तत्पुरुष (ग) द्वन्द्व (घ) बहुव्रीहि
उत्तर – (ख) तत्पुरुष।

19. **'त्रिभुवनम्' शब्द में समास है–**
(क) कर्मधारय (ख) द्विगु (ग) अव्ययीभाव (घ) द्वन्द्व
उत्तर – (ख) द्विगु।

20. 'अधिहरि' में कौन-सा समास है? (2020ZT)
(क) द्विगु (ख) बहुव्रीहि (ग) द्वन्द्व (घ) अव्ययीभाव
उत्तर – (घ) अव्ययीभाव।

21. 'हरिहरौ' में कौन-सा समास है? (2020ZR)
(क) द्विगु (ख) अव्ययीभाव (ग) कर्मधारय (घ) द्वन्द्व
उत्तर – (घ) द्वन्द्व।

22. 'पितरौ' में कौन-सा समास है?
(क) अव्ययीभाव (ख) तत्पुरुष (ग) द्वन्द्व (घ) बहुव्रीहि
उत्तर – (ग) द्वन्द्व।

23. 'रामकृष्णौ' में कौन-सा समास है?
(क) अव्ययीभाव (ख) द्विगु (ग) द्वन्द्व (घ) तत्पुरुष
उत्तर – (ग) द्वन्द्व।

24. 'यशोधन' में कौन-सा समास है?
(क) द्वन्द्व (ख) बहुव्रीहि (ग) तत्पुरुष (घ) द्विगु
उत्तर – (ख) बहुव्रीहि।

25. 'तपोधनः' में कौन-सा समास है?
(क) तत्पुरुष (ख) बहुव्रीहि (ग) द्विगु (घ) द्वन्द्व
उत्तर – (ख) बहुव्रीहि।

26. 'यथाशक्तिः' में कौन-सा समास है?
(क) कर्मधारय (ख) द्वन्द्व (ग) अव्ययीभाव (घ) तत्पुरुष
उत्तर – (ग) अव्ययीभाव।

27. 'राजपुरुष' में कौन-सा समास है?
(क) तत्पुरुष (ख) कर्मधारय (ग) बहुव्रीहि (घ) द्विगु
उत्तर – (क) तत्पुरुष।

28. 'लम्बोदरः' में कौन-सा समास है?
(क) तत्पुरुष (ख) बहुव्रीहि (ग) कर्मधारय (घ) द्वन्द्व
उत्तर – (ख) बहुव्रीहि।

29. 'कृष्णसर्पः' में कौन-सा समास है?
(क) तत्पुरुष (ख) कर्मधारय (ग) द्वन्द्व (घ) द्विगु
उत्तर – (ख) कर्मधारय।

30. 'घनश्यामः' में कौन-सा समास है?
(क) कर्मधारय (ख) तत्पुरुष (ग) बहुव्रीहि (घ) द्वन्द्व
उत्तर – (क) कर्मधारय।

31. 'सूर्योदयः' में कौन-सा समास है?
(क) तत्पुरुष (ख) द्वन्द्व (ग) कर्मधारय (घ) अव्ययीभाव
उत्तर – (क) तत्पुरुष।

32. 'उपगङ्गम्' में समास है–
(क) अव्ययीभाव (ख) बहुव्रीहि (ग) तत्पुरुष
उत्तर –(क) अव्ययीभाव।

33. 'यथायोग्यम्' में समास है–
(क) अव्ययीभाव (ख) तत्पुरुष (ग) बहुव्रीहि
उत्तर – (क) अव्ययीभाव।

34. 'सप्ताध्यायी' में कौन-सा समास है?
(क) अव्ययीभाव (ख) बहुव्रीहि (ग) द्विगु (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ग) द्विगु।

35. **'पाणिपादम्' पद में प्रयुक्त समास है–** (2017 NK, 19 DF)
(क) अव्ययीभावः (ख) द्वन्द्वः (ग) द्विगुः
उत्तर – (ख) द्वन्द्वः।

36. **'इतिहरि' पद में प्रयुक्त समास का नाम है–** (2017 NL)
(क) द्वन्द्वः (ख) अव्ययीभावः (ग) द्विगुः
उत्तर – (ख) अव्ययीभावः।

37. **'अनाकारथम्' पद में समास का नाम लिखिए।** (2017 NM)
उत्तर – तत्पुरुष समास।

38. **'निर्विघ्नं' में प्रयुक्त समास का नाम लिखिए।** (2017 NN)
उत्तर – अव्ययीभाव।

39. **'अनुकृष्णम्' में प्रयुक्त समास का नाम लिखिए–** (2017 NO)
(क) अव्ययीभाव (ख) द्वन्द्व (ग) द्विगु
उत्तर – (क) अव्ययीभाव।

40. **'जलमग्नः' में प्रयुक्त समास का नाम है–** (2017 NP)
(क) सप्तमी तत्पुरुष (ख) कर्मधारय (ग) बहुव्रीहि
उत्तर – (क) सप्तमी तत्पुरुष।

41. **'श्वशुरौ' पद में सविग्रह समास का नाम है?** (2018 BK)
(क) श्वश्रूच श्वशुरश्च– द्वन्द्व समास (ख) श्वश्रुश्च श्वशुरश्च– द्विगु समास
(ग) श्वश्रुःच श्वशुरश्च– द्वन्द्व समास (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (घ) इनमें से कोई नहीं।

42. **'घनश्यामः' में प्रयुक्त समास का नाम है–** (2018 BN)
(क) कर्मधारयः (ख) द्वन्द्वः (ग) बहुव्रीहिः (घ) अव्ययीभावः
उत्तर – (क) कर्मधारयः।

43. **राजसेवकः में प्रयुक्त समास का नाम है–** (2019 CZ, 20ZS)
(क) कर्मधारय (ख) तत्पुरुष (ग) बहुव्रीहि
उत्तर – (ख) तत्पुरुष।

44. **नीलोत्पलम् में प्रयुक्त समास का नाम है–** (2019 DB, 20ZQ)
(क) द्वन्द्व (ख) द्विगु (ग) कर्मधारय (घ) अव्ययीभाव
उत्तर – (ग) कर्मधारय।

45. **'रामलक्ष्मणौ' में समास है–** (2019 DE)
(क) द्वन्द्व (ख) द्विगु (ग) कर्मधारय (घ) अव्ययीभाव
उत्तर – (क) द्वन्द्व।

46. **'पञ्चामृतम्' में समास है–** (2020 ZO)
(क) अव्ययीभाव (ख) द्विगु (ग) द्वन्द्व
उत्तर – (ख) द्विगु।

47. **'पञ्चवटी' में प्रयुक्त समास का नाम है–** (2020 ZP)
(क) द्वन्द्व (ख) द्विगु (ग) कर्मधारय
उत्तर – (ख) द्विगु

48. **'देवास्दरौ' में प्रयुक्त समास का नाम है–** (2020 ZU)
(क) तत्पुरुष (ख) कर्मधारय (ग) द्वन्द्व
उत्तर – (ग) द्वन्द्व।

●●

4 सन्धि

(3 अंक)

सन्धि का अर्थ मेल होता है। अतः निकटवर्ती दो वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है उसे सन्धि कहते हैं। सन्धि योजना में पहले शब्द का अन्तिम अक्षर और दूसरे शब्द का प्रथम अक्षर ग्रहण किया जाता है। जैसे– पुस्तकालयः (पुस्तक+आलयः) में अ और आ मिलकर 'आ' हो गया है। सन्धि किये हुए शब्दों को अलग-अलग करना सन्धि-विच्छेद कहलाता है।

सन्धि के भेद

सन्धि के तीन भेद हैं— (क) स्वर सन्धि, (ख) व्यञ्जन सन्धि, (ग) विसर्ग सन्धि।

(क) – स्वर सन्धि— स्वर वर्ण का स्वर वर्ण के साथ जो मेल होता है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं। जैसे — नर+ईशः = नरेशः। यहाँ नर के अन्त में 'अ' और ईशः के आदि में 'ई' है। दोनों मिलकर 'ए' हो गया है, अतः स्वर सन्धि है।

विशेष — स्वर सन्धि को अच् सन्धि भी कहा जाता है। स्वर सन्धि में जो व्यञ्जन आधे लिखे हुए नहीं होते और उनके अन्त में हलन्त का चिह्न लगा हुआ नहीं होता, वे सभी अपने अन्त में किसी स्वर को अवश्य रखते हैं। जैसे – र में 'अ', कि में 'इ', कु में 'उ' है।

(ख) – व्यञ्जन सन्धि — जिसमें पहले शब्द या भाग का अन्तिम अक्षर व्यञ्जन और दूसरे शब्द या भाग के पहले व्यञ्जन या स्वर हों, उनके मेल को व्यञ्जन सन्धि कहते हैं अथवा व्यञ्जन के बाद स्वर या व्यञ्जन अक्षर आने पर जो विकार होता है, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं। जैसे — जगत् + ईशः = जगदीशः। यहाँ 'त्' व्यंजन के बाद 'ई' स्वर आया है, अतः व्यञ्जन सन्धि है।

(ग) – विसर्ग सन्धि — जिसमें पहले शब्द के अन्त में विसर्ग हो और दूसरे शब्द का पहला अक्षर स्वर या व्यञ्जन हो, तो उनके मेल को विसर्ग सन्धि कहते हैं या विसर्ग के साथ स्वर या व्यञ्जन के मिलने से जो विकार होता है उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं। जैसे— भाः + करः। यहाँ विसर्ग के बाद व्यञ्जन है, अतः विसर्ग सन्धि है।

व्यञ्जन या हल् सन्धि

व्यञ्जन के बाद स्वर या व्यञ्जन (व्यञ्जन + स्वर, व्यञ्जन + व्यञ्जन) आने पर जो विकार होता है, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं। इसमें जमा (+) चिह्न से पहले हलन्त व्यञ्जन आता है। जैसे सत् + चित् = सच्चित्, जगत् + ईश्वरः = जगदीश्वरः। यहाँ पहले उदाहरण में 'त्' के बाद व्यञ्जन और दूसरे उदाहरण में व्यञ्जन के बाद स्वर आया है।

1. श्चुत्व सन्धि

सूत्र–स्तोः श्चुनाश्चुः

नियम–सकार या तवर्ण (त, थ, द, ध, न) के पहले या बाद में शकार या चवर्ग (च, छ, ज, झ, ञ) का योग होने पर 'स' को 'श' तथा तवर्ग को चवर्ग हो जाता है।

उदाहरण– सत् + चित् = सच्चित् [2017 NJ, NK, 19 DA, DD, DE]

रामस् + शेते = रामश्शेते [2017 NN]

कस् + चित् = कश्चित्

सद् + जनः = सज्जनः [2017 NJ, 20 ZO, ZS]

शार्ङ्गिन् + जयः = शार्ङ्गिञ्जयः [2017 NO]

बृहद् + झरः = बृहज्झरः

2. ष्टुत्व सन्धि

सूत्र –ष्टुनाष्टुः

नियम — सकार या तवर्ग के पहले या बाद में षकार या टवर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण) का योग होने पर स् को ष् तथा तवर्ग को टवर्ग हो जाता है।

उदाहरण – तत् + टीका = तट्टीका
रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः
उद् + डयनम् = उड्डयनम् (2018 BN)
कृष् + नः = कृष्णः [2017 NJ]
दुष् + तः = दुष्टः [2017 NJ]
चक्रिन् + ढौकसे = चक्रिण्ढौकसे

3. जश्त्व सन्धि

यह सन्धि दो प्रकार की होती है — (क) पदान्त जश्त्व सन्धि, (ख) अपदान्त जश्त्व सन्धि।

(क) पदान्त जश्त्व सन्धि

सूत्र – झलां जशोऽन्ते

नियम — यदि पदान्त में झलों (वर्ग के पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे वर्ण) के बाद कोई भी स्वर तथा वर्ग के तीसरे, चौथे और पाँचवें वर्ग या य, र, ल, व में से कोई वर्ण आये तो पहले वाले वर्ण के स्थान में उसी वर्ग का तीसरा वर्ग जश् हो जाता है।

उदाहरण – अच् + अन्तः = अजन्तः
वाक् + ईशः = वागीशः
षट् + आननः = षडाननः
दिक् + अम्बरः = दिगम्बरः (2018 BK)
सुप् + ईशः = सुबीश
एतत् + मुरारिः = एतद् मुरारिः
षट् + म्यः = षड्म्यः

(ख) अपदान्त जश्त्व सन्धि

सूत्र – झलां जश् झशि

नियम — यदि अपदान्त में झलों (वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण) के बाद कोई झश् (वर्ग का तीसरा, चौथा वर्ण) परे होने पर जश् (अपने वर्ग का तृतीय वर्ण) हो जाता है।

उदाहरण – क्रुध + धः = क्रुद्धः
शुध् + धः = शुद्धः
लभ् + धम् = लब्धम्
युध् + धः = युद्धः
दघ् + धः = दुग्धः

4. चर्त्व सन्धि

सूत्र – खरि च

नियम — यदि झल् (वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीया और चतुर्थ वर्ण) के बाद वर्ग का प्रथम व द्वितीय वर्ण या श, ष, स आता है तो उनके स्थान पर चर् (अपने वर्ग का प्रथम वर्ण) हो जाता है।

उदाहरण – सद् + कारः = सत्कारः
सद् + पात्रम् = सत्पात्रम्
तद् + शिवः = तच्छिवः
एतद् + करोति = एतत् करोति
दिग् + पालः = दिक्पालः
सद् + शिष्यः = सच्शिष्यः [2017 NM]

5. अनुस्वार सन्धि

सत्र – मोऽनुस्वारः

नियम — पदान्त में 'म्' के बाद कोई भी व्यञ्जन आता है, तो 'म्' के स्थान में अनुस्वार (ं) हो जाता है।

उदाहरण – हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे
त्वम् + करोषि = त्वं करोषि
रामम् + भजामि = रामं भजामि (2020 ZR, ZU)

6. तोर्लि

नियम — यदि 'त' वर्ग के किसी वर्ण से परे ल हो तो त वर्गीय वर्ण के स्थान पर ल् हो जाता है।

उदाहरण – उद् + लिखितम् = उल्लिखितम्
तद् + लीनः = तल्लीनः
उद् + लेखः = उल्लेखः
विद्वान् + लिखति = विद्वांल्लिखति

विशेष – अनुनासिक न् के स्थान में अनुनासिक ल् होता है।

7. परसवर्ण सन्धि

सूत्र – अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः।

नियम — अनुस्वार से परे यदि यय् प्रत्याहार (श्, ष्, स्, ह् के अतिरिक्त सभी व्यञ्जन यय् प्रत्याहार में आते हैं) का कोई भी व्यञ्जन आये तो अनुस्वार का परसवर्ण हो जाता है। अर्थात् पद के मध्य में अनुस्वार के आगे श्, ष्, स्, ह् को छोड़कर किसी भी वर्ग का कोई भी व्यञ्जन आने पर अनुस्वार के स्थान पर उस वर्ग का पञ्चम वर्ण हो जाता है; यथा — गम् + गा = गंगा या गङ्गा।

विशेष – यह नियम प्रायः अनुस्वार सन्धि के पश्चात् लगता है। पदान्त में यह नियम विकल्प से होता है; यथा— कार्यम् + करोति = कार्यं करोति या कार्यङ्करोति।

उदाहरण – शाम् + तः = शान्तः
अन् + कितः = अङ्कितः
कुन् + ठितः = कुण्ठितः
गुम् + फितः = गुम्फितः
अन् + चितः = अञ्चितः

पदान्त में होने पर –

अलम् + चकार = अलं चकार या अलञ्चकार
रामम् + नमामि = रामं नमामि या रामन्नमामि
त्वम् + करोषि = त्वं करोषि या त्वङ्करोषि

व्यञ्जन सन्धि चक्र

सन्धि का नाम	सूत्र	अर्थ	प्रयोग
1. श्चुत्व सन्धि	स्तोः श्चुनाश्चुः	स् अथवा त वर्ग के योग में श या च् वर्ग आवे तो स का श्, त् वर्ग का च वर्ग होता है।	रामस् + शेते = रामश्शेते। [2017 NN] रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति। [2019 CZ] सत् + चित् = सच्चित्।
2. ष्टुत्व सन्धि	ष्टुनाष्टुः	सकार त वर्ग के पहले या बाद में षकार और ट वर्ग आवे तो स का ष और त वर्ग का ट वर्ग हो जाता है।	रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः। रामस् + टीकते = रामष्टीकते। [2019 DB] तत् + टीका = तट्टीका। पृस् + टः = पृष्टः।
3. जश्त्व सन्धि	झलां जशोऽन्ते	पद के अन्त में वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वर्ग के बाद व्यंजन आने पर पहले वर्ण को तृतीय होता है।	जगत् + ईशः = जगदीशः। [2017 NL, 19 CZ, DF] अप् + जम् = अब्जम्। षट् + आननः = षडाननः।
4. चर्त्व सन्धि	खरि च	वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वर्ण के आगे किसी वर्ग के प्रथम	छेद् + ता = छेत्ता। लिभ् + सा = लिप्सा। हृद् + स्थलम् = हृत्स्थलम्।

5. अनुस्वार सन्धि	मोऽनुस्वारः	या द्वितीय अक्षर के आने पर वे अपने वर्ग के प्रथम अक्षर में बदले जाते हैं। पद के अन्त में म् के बाद व्यञ्जन आने पर 'म' का अनुस्वार हो जाता है।	हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे। त्वम् + करोषि = त्वं करोषि।

विसर्ग सन्धि

विसर्ग के साथ स्वर या व्यञ्जन के मिलने से विसर्ग में जो विकार होता है उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं। जैसे मनः + रथः = मनोरथः!

विसर्ग सदा किसी न किसी स्वर के बाद ही आता है। जैसे — 'दुःखः' तथा 'रामः' में विसर्ग क्रमशः 'उ' और 'अ' के बाद है। अतः विसर्ग सन्धि में विसर्ग से पहले आने वाले स्वर तथा बाद के स्वर अथवा व्यञ्जन दोनों का ही ध्यान रखा जाता है।

इसके प्रधान नियम निम्न हैं—

1. सत्व सन्धि (सूत्र– विसर्जनीयस्य सः) — यदि विसर्ग (:) के आगे कोई खर् प्रत्याहार का वर्ण (किसी वर्ग का पहला, दूसरा वर्ण या श् ष् स्) हो तो विसर्ग के स्थान में स् हो जाता है।

जैसे–

कः	+	कः	=	कस्कः।
दुः	+	तरः	=	दुस्तरः।

इस नियम को समझने के लिए निम्न बातों पर ध्यान देना आवश्यक है—

(क) यदि विसर्ग के परे क ख या प फ में से कोई हो तो विसर्ग के स्थान पर स् होता है।

जैसे–

कः	+	करोति	=	कस्करोति।
इतः	+	ततः	=	इतस्ततः।

(ख) यदि विसर्ग से परे च या छ हो तो विसर्ग के स्थान पर स् हो जाता है। फिर श्चुत्व सन्धि होकर 'स' का 'श्' बन जाता है। जैसे—

निः	+	छलम्	=	निश्छलम्।
निः	+	चलम्	=	निश्चलम्।
कः	+	चित्	=	कश्चित्। [2017 NP]

(ग) यदि विसर्ग के परे ट् या ठ् हो तो विसर्ग के स्थान में स् हो जाता है। फिर ष्टुत्व सन्धि होकर स् का ष् बन जाता है। जैसे—

रामस्	+	टीकते	=	रामष्टीकते।
धनुः	+	टंकारः	=	धनुष्टंकारः।

(घ) यदि विसर्ग के परे त या थ हो तो विसर्ग के स्थान में स् होकर जैसा का तैसा रहता है। जैसे —

इतः	+	ततः	=	इतस्ततः।
कृतः	+	तथा	=	कृतस्तथा।

(य) यदि विसर्ग के परे श् ष् या स् में से कोई हो तो विसर्ग के स्थान में पर जैसा वर्ण हो जाता है अथवा विसर्ग जैसा का तैसा रहता है। जैसे—

हरिः	+	शेते	=	हरिश्शेते	=	हरिःशेते।
रामः	+	षष्ठः	=	रामष्षष्ठः	=	रामःषष्ठः।

निः + सन्देहम् = निस्सन्देहम् = निःसन्देहम्।

अन्य उपयोगी उदाहरण —

मनः + तापः	=	मनस्तापः	हरिः + छलति	=	हरिश्छलति।
पुरः + कार	=	पुरस्कार	हरिः + चलति	=	हरिश्चलति।
नमः + ते	=	नमस्ते	गौः + चरति	=	गौश्चरति।

2. रुत्व सन्धि (सूत्र – ससजुषोः रुः) – पदान्त (पद के अन्त) के स् के स्थान में रु (र्) हो जाता है। जैसे—

कवि : + अयम्	=	कविरयम्	हरेः + इदम्	=	हरेरिदम्।
गौः + अयम्	=	गौरयम्	प्रातः + अहम्	=	प्रातरहम्।
पाशैः + वृद्धः	=	पाशैर्वद्धः	ऋषिः + वदति	=	ऋषिर्वदति।
भानोः + अयम्	=	भानोरयम्	मातृः + आदेशः	=	मातृरादेशः।
पितृः + आज्ञा	=	पितृराज्ञा	साधुः + गच्छति	=	साधुर्गच्छति।
मुनिः + आगच्छति	=	मुनिरागच्छति	निः + धनम्	=	निर्धनम्।
कैः + उक्तम्	=	कैरुक्तम्	प्रातः + एव	=	प्रातरेव।

अन्य उपयोगी उदाहरण –

कविस् + आगच्छति	=	कविर् + आगच्छति	=	कविरागच्छति।
मुनिस् + इव	=	मुनिर् + इव	=	मुनिरिव।
निस् + दयः	=	निर्दयः		
पतिः + उवाच	=	पतिरुवाच		
भानु + उदेति	=	भानुरुदेति		
हरेः जन्म	=	हरेर् + जन्म	=	हरेर्जन्म।
गुरोः + आगमनम्	=	गुरोर् + आगमनम्	=	गुरोरागमनम्।
मुनिः + गच्छति	=	मुनिर् + आगच्छति	=	मुनिर्गच्छति।

3. उत्व सन्धि– (क) (सूत्र – अतोरोरप्लुतादप्लुते) — यदि रु के र् से पूर्व ह्रस्व अ हो और परे भी ह्रस्व अ हो तो रु (र) के स्थान में 'उ' हो जाता है।

विशेष – (अ + उ + अ) बन जाने पर गुण सन्धि तथा पूर्वरूप सन्धि होकर (अ + उ + अ) तीनों का एक 'ओ' बन जाता है। जैसे –

शिवस् + अर्च्यः
रुत्व सन्धि होकर शिव + र् + अर्च्यः
उपर्युक्त उत्व सन्धि होकर = शिव + उ + अर्च्यः
गुण सन्धि होकर = शिवो + अर्च्यः
पूर्वरूप सन्धि होकर शिवोऽर्च्यः

इसी प्रकार — सम् + अपि = सोऽपि

देवस् + अपि	=	देवोऽपि
सस् + अहम्	=	सोऽहम्
शिवस् + अत्र	=	शिवोऽत्र।

(ख) (सूत्र – हशि च) — यदि रु (र्) के पूर्व ह्रस्व अ हो और परे हश् (वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण तथा य व र ल ह) हो तो रु (र्) के स्थान में 'उ' हो जाता है। फिर अ + उ में गुण सन्धि हो जाती है। जैसे—

मनस् + रथः = मन + र + रथः = मन + उ + रथः = मनोरथः
शिवस् + वन्द्यः = शिव + र् + वन्द्यः = शिव + उ + वन्द्य = शिवोवन्द्यः

अन्य उपयोगी उदाहरण –

रामस्	+	नमति	=	रामो नमति।
रामस्	+	हसति	=	रामो हसति।

मृगस् + धावति = मृगो धावति।
मेघस् + गर्जति = मेघो गर्जति।

4. रलोप सन्धि (सूत्र – रोरि) – यदि र् से परे र् हो तो पूर्व 'र्' का लोप हो जाता है। जैसे —
बालकास् + रमन्ते = बालकार् + रमन्ते = बालका रमन्ते
गौः + रम्भते = गौर् + रम्भते = गौ रम्भते।

5. लोप निमित्तक दीर्घ (सूत्र – ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः) — यदि द् या र् परे होने पर द् या र् का लोप हुआ है और लुप्त होनेवाले द् या र् से पूर्व अ इ उ में से कोई हो तो इनका दीर्घ बन जाता है। जैसे—
हरिर् + रम्यः = हरि रम्यः
पुनर् + रमते = पुना रमते
शम्भुर् + राजते = शम्भू राजते।

6. खरवसानयोर्विसर्जनीयः

यदि पदान्त में र् आए अथवा र् से परे खर् (वर्गों के प्रथम द्वितीय वर्ण एवं श् ष् स्) आये तो दोनों स्थितियों में र् का विसर्ग हो जाता है। जैसे —

रामर्	+	खादति	=	रामः खादति
पुनर्	+	पृच्छति	=	पुनः पृच्छति
रामर्	+	करोति	=	रामः करोति
वृक्षर्	+	फलति	=	वृक्षः फलति
गुरुर्	+	पाठयति	=	गुरुः पाठयति

7. वा शरि

यदि विसर्ग के बाद शर् अर्थात् श्, ष्, स् आये तो विसर्ग के स्थान पर विकल्प से स् होता है। जैसे—

मुनिः	+	शेते	=	मुनिश्शेते
रामः	+	षष्ठः	=	रामष्षष्ठः
कृष्णः	+	सर्पः	=	कृष्णस्सर्पः
मत्तः	+	षट्पदः	=	मत्तष्षट्पदः

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. 'तल्लयः' में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गयी है? (2017 NJ, 19 DB, 20 ZP, ZT)
(क) खरि च (ख) अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः
(ग) तोर्लि (घ) यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा
उत्तर – (ग) तोर्लि।

2. 'बालको हसति' में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की जाती है?
(क) आद् गुणः (ख) अतोरोरप्लुतादप्लुते (ग) हशि च (घ) ससजुषोरुः
उत्तर – (ग) हशि च।

3. 'हरिस् + शेते' में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गयी है?
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) झलां जशोऽन्ते (ग) स्तोश्चुनाश्चुः (घ) शात्
उत्तर – (ग) स्तोश्चुनाश्चुः।

4. 'शान्तः' में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गई है?
(क) झलां जशोऽन्ते (ख) मोऽनुस्वारः (ग) अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः (घ) खरि च।
उत्तर – (ग) अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः।

5. 'हरिश्शेते' में किस सूत्र में सन्धि की गयी है?
(क) आद्गुणः (ख) वृद्धिरेचि (ग) स्तोः श्चुना श्चुः (घ) अकः सवर्णे दीर्घः
उत्तर – (ग) स्तोः श्चुना श्चुः।

6. 'वाक् + ईशः' में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गयी है?
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) आद्गुणः (ग) झलाँ जशोऽन्ते (घ) स्तोः श्चुनाश्चुः
उत्तर – (ख) आद्गुणः।

7. विसर्ग सन्धि का उदाहरण है–
(क) मुनिरिति (ख) तच्चित्रम (ग) परीक्षणम् (घ) गौयत्र
उत्तर – (क) मुनिरिति।

8. 'रामश्चिनोति' इसमें किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गयी है?
(क) ष्टुनाष्टुः (ख) खरिच (ग) स्तोः श्चुना श्चुः (घ) झलां जशोऽन्ते
उत्तर – (ग) स्तोः श्चुना श्चुः।

9. 'जगदीशः' इस शब्द में किस सूत्र से सन्धि कार्य होता है?
(क) स्तोः श्चुना श्चुः (ख) ष्टुनाष्टुः (ग) झलां जशोऽन्ते (घ) झलां जश झशि
उत्तर – (ग) झलां जशोऽन्ते।

10. 'उच्चारणम्' इस शब्द में किस सूत्र से सन्धिकार्य होता है?
(क) स्तोः श्चुना श्चुः (ख) ष्टुना ष्टुः (ग) शात् (घ) झलां जशोऽन्ते
उत्तर – (क) स्तोः श्चुना श्चुः।

11. 'शान्तः' में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गई है?
(क) झलां जशोऽन्ते (ख) मोऽनुस्वारः
(ग) अनुस्वारस्य ययि पर सवर्णः (घ) खरि च
उत्तर – (ग) अनुस्वारस्य ययि पर सवर्णः।

12. 'हरेऽव' पद का सन्धि-विच्छेद होता है– (2017 NJ, 19 DD, 20 ZQ, ZS)
(क) हर + इव (ख) हरे + अव (ग) हरे + व (घ) हरा + इव
उत्तर – (ख) हरे + अव।

13. 'हरिं वन्दे' में किस सूत्र से सन्धि हुई है?
(क) एङिपारूपम् (ख) स्तोः श्चुना श्चुः (ग) मोऽनुस्वारः (घ) विसर्गनीयस्य सः
उत्तर – (ग) मोऽनुस्वारः।

14. 'तच्चित्रम्' में किस सूत्र से सन्धि की गयी है?
(क) ष्टुना ष्टुः (ख) स्तोः श्चुना श्चुः (ग) झलां जशोऽन्ते (घ) खरि च
उत्तर – (ख) स्तोः श्चुना श्चुः।

15. 'हरिरिह' में सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) हरिः + इह (ख) हरि + रिह (ग) हरौ + इह (घ) हरौ + इह
उत्तर – (क) हरिः + इह।

16. 'सच्चित' में सन्धि-विधायक सूत्र है–
(क) खरि च (ख) स्तोः श्चुना श्चुः (ग) झलां जसोऽन्ते (घ) शश्छोऽटि
उत्तर – (ख) स्तोः श्चुना श्चुः।

17. 'वाग्देवी' उदाहरण है–
(क) यण् सन्धि का (ख) विसर्ग सन्धि का (ग) व्यञ्जन सन्धि का (घ) स्वर सन्धि का
उत्तर – (ग) व्यञ्जन सन्धि का।

18. 'सच्चरितम्' इस शब्द में किस सूत्र से सन्धि कार्य होता है? (2010 CJ)
(क) आद्गुणः (ख) वृद्धिरेचि (ग) स्तोश्चुनाश्चुः (घ) झलांजशोऽन्ते
उत्तर – (ग) स्तोश्चुनाश्चुः।

19. 'सच्चरितम्' पद का सन्धि-विच्छेद होता है– [2011 (HX)]
(क) सच्च + रितम् (ख) (सच्चरि + तम् (ग) सच् + चरितम् (घ) सत् + चरितम्
उत्तर– (घ) सत् + चरितम्।

20. 'हरिरिह' में सन्धिविच्छेद है– [2013 (BN)]
(क) हरिः + इह (ख) हरि + रिह (ग) हरी + इह (घ) हरिः + रिह
उत्तर– (क) हरिः + इह।

21. 'वागीशः' में सन्धिविधायक सूत्र है– [2014 (CV)]
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) झलां जशोऽन्ते (ग) वृद्धिरेचि (घ) विसर्जनीयस्य सः
उत्तर– (ख) झलां जशोऽन्ते।

22. 'महौषधिः' पद का सन्धि-विच्छेद होता है– [2015 (DW)]
(क) मह + औषधिः (ख) महा + औषधिः (ग) महा + ओषधिः (घ) महौ + उषधिः
उत्तर– (ग) महा + ओषधिः।

23. 'परोपकारः' पद में सन्धि विधायक सूत्र है– [2015 (DU)]
(क) इकोयणचि (ख) आद्गुणः (ग) वृद्धिरेचि (घ) अकः सवर्णे दीर्घः
उत्तर– (घ) अकः सवर्णे दीर्घः।

24. 'गङ्गोदकम्' में सन्धि-विच्छेद है– [2015 (DT), 16 (TJ, TO)]
(क) गङ्गो + दकम् (ख) गङ्ग + ओदकम् (ग) गङ्गा + उदकम् (घ) गङ्गोग + दकम्
उत्तर– (ग) गङ्गा + उदकम्।

25. 'श्रीशः' में सन्धिविधायक सूत्र है– [2015 (DT)]
(क) झलां जशोऽन्ते (ख) वृद्धिरेचि (ग) अकः सवर्णे दीर्घः (घ) रोरि
उत्तर– (ग) अकः सवर्णे दीर्घः।

26. 'विष्णोऽव' का सन्धि विधायक सूत्र है– [2016 (TJ)]
(क) एङिपररूपम् (ख) मोऽनुस्वारः (ग) एचोऽयवायावः (घ) एङः पदान्तादति
उत्तर– (घ) एङः पदान्तादति।

27. 'सञ्चयनम्' पद में सन्धि-विच्छेद होगा– [2016 (TK)]
(क) सञ्च + अयनम् (ख) सञ्चु + अनम् (ग) सञ्चे + अनम् (घ) सञ्चे + अयनम्
उत्तर– (क) सञ्च + अयनम्।

28. 'प्रेजते' का सन्धि विधायक सूत्र है– [2016 (TK)]
(क) आद्गुणः (ख) वृद्धिरेचि (ग) एचोऽयवायावः (घ) एङिपररूपम्
उत्तर– (घ) एङिपररूपम्।

29. 'यद्यपि' में सन्धि विधायक सूत्र है– [2016 (TO)]
(क) आद्गुणः (ख) वृद्धिरेचि (ग) इकोयणचि (घ) एङिपररूपम्
उत्तर– (ग) इकोयणचि।

30. 'भानुरुदेति' पद में सन्धि-विच्छेद होगा– [2016 (TP)]
(क) भानुर् + उदेति (ख) भानुरु + देति (ग) भानुः + उदेति (घ) भा + नुरुदेति
उत्तर– (ग) भानुः + उदेति।

31. 'तट्टीका' शब्द का सन्धि-विच्छेद होगा– [2017 (NL)]
(क) तद् + टीका (ख) तत + टीका (ग) तत् + टीका (घ) तट् + टीका
उत्तर– (ग) तत् + टीका।

32. 'रामष्टीकते' पद का सन्धि-विच्छेद होगा– [2017 (NK)]
(क) रामष् + टीकते (ख) रामस् + टीकते (ग) रामः + टीकते (घ) रामश् + टीकते
उत्तर– (ख) रामस् + टीकते।

33. 'षेष्टा' पद का सन्धि-विच्छेद होगा– [2017 (NM)]
(क) पेस् + टा (ख) पेश् + टा (ग) पेष् + टा (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर– (घ) इनमें से कोई नहीं।

34. 'अजन्तः' का सन्धि-विग्रह– [2017 (NN)]
(क) अच् + अन्तः (ख) अज् + अन्तः (ग) अ + जन्तः
उत्तर– (क) अच् + अन्तः।

35. 'दिगम्बरः' का सन्धि-विग्रह है– [2017 (NO)]
(क) दिक् + अम्बरः (ख) दिग् + अम्बरः (ग) दिक + अम्बरः
उत्तर– (ग) दिक् + अम्बरः।

36. 'वागीशः' का सन्धि-विग्रह है– [2017 (NP), 20 (ZU)]
(क) वाक् + गीशः (ख) वाक् + ईशः (ग) वाग् + इशः (घ) वाग् + एशः
उत्तर– (ख) वाक् + ईशः।

37. 'सन्नद्धः' पद का सन्धि-विच्छेद होगा– [2018 (BK)]
(क) सम् + धः (ख) सन् + द्धः (ग) सम्नध् + धः (घ) सन् + नद्धः
उत्तर– (ग) सम्नध् + धः।

38. 'सच्चरितम्' का सन्धि-विच्छेद होगा– [2018 (BN)]
(क) सच्च + चरितम् (ख) सत् + चरितम् (ग) सच् + चरितम् (घ) सच्चरि + तम्
उत्तर– (ख) सत् + चरितम्।

39. 'रामश्चिनोति' का सन्धि-विच्छेद है– [2019 (CZ)]
(क) राम+श्चिन्नेति (ख) रामश्चि+नोति (ग) रामशि+चनोति (घ) रामस् + चिनोति
उत्तर– (घ) रामस् + चिनोति।

40. 'षडाननः' का सन्धि-विच्छेद है– [2019 (DA)]
(क) षड + आननः (ख) षट् + आननः (ग) षडा + ननः (घ) ष + डाननः
उत्तर– (ख) षट् + आननः।

41. ''रामश्शेते' का सन्धि विच्छेद है'– [2019 (DC)]
(क) रामः + शेते (ख) रामस् + शेते (ग) रामश् + शेते (घ) रामस् + सेते
उत्तर– (ख) रामस् + शेते।

42. 'हरेऽव' का सन्धि-विच्छेद होता है– [2019 (DE)]
(क) हरे + व (ख) हर + इव (ग) हरे + अव (घ) हरा + एव
उत्तर– (ग) हरे + अव।

43. ''सच्चित्'' का सन्धि - विच्छेद है– [2019 (DF)]
(क) सत् + चित् (ख) सच + चित् (ग) सच्चि + त्
उत्तर– (क) सत् + चित्।

44. ''पित्राज्ञा'' का सन्धि - विच्छेद है– [2020 (ZO)]
(क) पितृ + आज्ञा (ख) पित्र + आज्ञा (ग) पितृ + आज्ञा
उत्तर– (क) पितृ + आज्ञा।

45. 'कविरयम्' का सन्धि - विच्छेद है– [2020 (ZR)]
(क) कविः + अयम् (ख) कविर + अयम् (ग) कवि + अयम् (घ) कविरा + अयम्
उत्तर– (क) कविः + अयम्।

5 शब्द-रूप

(अंक- 3)

नपुंसकलिङ्ग

1. 'गृह' (अकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गृहम्	गृहे	गृहाणि/गृहाः
द्वितीया	गृहम्	गृहे	गृहाणि/गृहान्
तृतीया	गृहेण	गृहाभ्याम्	गृहैः (2017 NL)
चतुर्थी	गृहाय	गृहाभ्याम्	गृहेभ्यः
पंचमी	गृहात्	गृहाभ्याम्	गृहेभ्यः
षष्ठी	गृहस्य	गृहयोः	गृहाणाम्
सप्तमी	गृहे	गृहयोः	गृहेषु (2020 ZS)
सम्बोधन	हे गृह!	हे गृहे!	हे गृहाणि!

2. 'वारि' (ईकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि (2018 BN)
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा (2011 IC, 17 NM, 19 DA)	वारिभ्याम्	वारिभिः (2020 ZU)
चतुर्थी	वारिणे (2017 NK)	वारिभ्याम्	वारिभ्यः (2018 BK)
पंचमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि (2011 IB, 17 NN)	वारिणोः	वारीणाम्
सम्बोधन	हे वारे!/हे वारि!	हे वारिणी!हे वारीणि!	

3. 'दधि' (इकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वितीया	दधि	दधिनी	दधीनि
तृतीया	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
चतुर्थी	दध्ने (2017 NO, 20 ZQ)	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
पंचमी	दध्नः	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
षष्ठी	दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्

सप्तमी	दध्नि/दधनि	दध्नोः	दधिषु
सम्बोधन	हे दधि!/हे दधे!	हे दधिनी	हे दधीनि!

4. 'मधु' (उकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	मधु (2017 NN)	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना (2019 DC)	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने (2019 DB)	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पंचमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे मधु!/हे मधो!	हे मधुनि!	हे मधूनि!

5. जगत् (तकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	जगत्	जगती	जगन्ति
द्वितीया	जगत्	जगती	जगन्ति
तृतीया	जगता	जगद्भ्याम्	जगद्भिः
चतुर्थी	जगते (2019 CZ,20ZO,ZP)	जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः
पंचमी	जगतः	जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः
षष्ठी	जगतः	जगतोः	जगताम् (2011 IB)
सप्तमी (2009 DU, 10 CK)	जगति	जगतोः	जगत्सु
सम्बोधन	हे जगत्!	हे जगती!	हे जगन्ति!

6. 'नामन्' (अनन्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	नाम	नामनी/नाम्नी	नामानि
द्वितीया	नाम	नामनी/नाम्नी	नामानि
तृतीया	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः
चतुर्थी	नाम्ने	नामभ्याम्	नामभ्यः
पंचमी	नाम्नः	नामभ्याम्	नामभ्यः
षष्ठी	नाम्नः	नाम्नोः	नाम्नाम्
सप्तमी	नाम्नि/नामनि	नाम्नोः	नामसु
सम्बोधन	हे नाम!/नामन्!	हे नाम्नी!/नामनी	हे नामानि!

7. 'मनस्' (असन्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	मनः	मनसी	मनांसि
द्वितीया	मनः	मनसी	मनांसि
तृतीया	मनसा	मनोभ्याम्	मनोभिः

चतुर्थी	मनसे	मनोभ्याम्	मनोभ्यः
पंचमी	मनसः	मनोभ्याम्	मनोभ्यः
षष्ठी	मनसः	मनसोः	मनसाम्
सप्तमी	मनसि (2017 NP)	मनसोः	मनस्सु,/मनःसु
सम्बोधन	हे मनः!	हे मनसी!	हे मनांसि

8. 'ब्रह्मन्' (अनन्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	ब्रह्म	ब्रह्मणी	ब्रह्मणिः
द्वितीया	ब्रह्म	ब्रह्मणी	ब्रह्मणि
तृतीया	ब्रह्मणा	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभिः
चतुर्थी	ब्रह्मणे	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभ्यः
पंचमी	ब्रह्मणः	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभ्यः
षष्ठी	ब्रह्मणः	ब्रह्मणोः	ब्रह्मणाम्
सप्तमी	ब्रह्मणि	ब्रह्मणोः	ब्रह्मसु
सम्बोधन	हे ब्रह्मन्!	हे ब्रह्मणी!	हे ब्रह्माणि!

9. 'धनुस्' (उसन्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	धनुः	धनुषी	धनूंषि
द्वितीया	धनुः	धनुषी	धनूंषि
तृतीया	धनुषा	धनुभ्याम्	धनुर्भिः
चतुर्थी	धनुषे	धनुभ्याम्	धनुर्भ्यः
पंचमी	धनुषः	धनुभ्याम्	धनुर्भ्यः
षष्ठी	धनुषः	धनुषोः	धनुषाम्
सप्तमी	धनुषि	धनुषोः	धनुस्सु
सम्बोधन	हे धनुः!	हे धनुषी!	हे धनूंषि!

सर्वनाम

1. सर्व-सब (पुंल्लिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	सर्वः	सर्वो	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वो	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पंचमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

सर्व (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्यै (2014 CS)	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पंचमी	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
षष्ठी	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

सर्व (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणिः
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पंचमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

2. तद्-वह (पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन् (2017 NP)	तयोः	तेषु

तद् (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पंचमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

तद् (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

3. यद्-जो, जिस, जिन (पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पंचमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

यद् (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पंचमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

यद् (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि
तृतीया	येन्	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पंचमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

4. किम्-क्या, कौन (पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

किम् (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पंचमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

किम् (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

5. युष्मद्-तू, तुम (तीनों लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्/त्वा	युवाम्/वाम्	युष्मान्/वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्/ते	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्/वः
पंचमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्/वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

6. अस्मद्-मैं, हम (तीनों लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्, नः
पंचमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

7. इदम्-यह (पुंल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्	इमौ	इमान्
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पंचमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः	एषु

8. एतत्-यह (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्	एते	एताः
तृतीया	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पंचमी	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्याः	एतयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयोः	एतासु

एतत्-यह (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एतत्-द	एते	एतानि
द्वितीया	एतत्-द	एते	एतानि
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पंचमी	एतस्मात्-द	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

9. अदस्-वह (पुंल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमून्
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पंचमी	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

अदस् (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमूः
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमूः
तृतीया	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
चतुर्थी	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
पंचमी	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
षष्ठी	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
सप्तमी	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

अदस् (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अदः	अमुनी	अमूनि
द्वितीया	अदः	अमुनी	अमूनि
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमूभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पंचमी	अमुष्मात्-द्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

10. भवत् (पुंल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
द्वितीया	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः
तृतीया	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
चतुर्थी	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
पंचमी	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
षष्ठी	भवतः	भवतोः	भवताम्
सप्तमी	भवति	भवतोः	भवत्सु
सम्बोधन	हे भवन्!	हे भवन्तौ! हे भवन्तः!	

भवत् (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भवती	भवत्यौ	भवत्यः
द्वितीया	भवतीम्	भवत्यौ	भवतीः
तृतीया	भवत्या	भवतीभ्याम्	भवतीभिः
चतुर्थी	भवत्यै	भवतीभ्याम्	भवतीभ्यः
पंचमी	भवत्याः	भवतीभ्याम्	भवतीभ्यः
षष्ठी	भवत्याः	भवत्योः	भवतीनाम्
सप्तमी	भवत्याम्	भवत्योः	भवतीषु
सम्बोधन	हे भवति!	हे भवत्यौ!हे भवत्यः!	

भवत् (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भवत्/भवद्	भवती	भवन्ति
द्वितीया	भवत्/भवद्	भवती	भवन्ति
तृतीया	भवता (2010 CK)	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
चतुर्थी	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
पंचमी	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
षष्ठी	भवतः	भवतोः	भवताम्
सप्तमी	भवति	भवतोः	भवत्सु
सम्बोधन	हे भवत्!	हे भवती!	हे भवन्ति!

(ङ) एक से सौ तक के संख्यावाचक शब्द

1. एकः	2. द्वौः	3. त्रयः	4. चत्वारः
5. पञ्च	6. षट्	7. सप्त	8. अष्ट
9. नव	10. दश	11. एकादश	12. द्वादश
13. त्रयोदश	14. चतुर्दश	15. पञ्चदश	16. षोडश
17. सप्तदश	18. अष्टादश	19. नवदश, एकोनविंशतिः	20. विंशतिः
21. एकविंशतिः	22. द्वविंशतिः	23. त्रयोविंशतिः	24. चतुर्विंशतिः
25. पञ्चविंशतिः	26. षड्विंशतिः	27. सप्तविंशतिः	28. अष्टविंशतिः
29. नवविंशतिः, एकोनत्रिंशत्	30. त्रिंशत्	31. एकत्रिंशत्	32. द्वात्रिंशत्
33. त्रयस्त्रिंशत्	34. चतुस्त्रिंशत्	35. पञ्चत्रिंशत्	36. षट्त्रिंशत्
37. सप्तत्रिंशत्	38. अष्टत्रिंशत्	39. नवत्रिंशत्, एकोनचत्वारिंशत्	
40. चत्वारिंशत्	41. एकचत्वारिंशत्	42. द्विचत्वारिंशत्	43. त्रिचत्वारिंशत्
44. चतुश्चत्वारिंशत्	45. पञ्चचत्वारिंशत्	46. षट्चत्वारिंशत्	47. सप्तचत्वारिंशत्
48. अष्टचत्वारिंशत्	49. नवचत्वारिंशत्	50. पञ्चाशत्	51. एकपञ्चाशत्
52. द्विपञ्चाशत्	53. त्रिपञ्चाशत्	54. चतुःपञ्चाशत्	55. पञ्चपञ्चाशत्

56. षट्पञ्चाशत्
57. सप्तपञ्चाशत्
58. अष्टपञ्चाशत्
59. नवपञ्चाशत्
60. षष्टिः
61. एकषष्टिः
62. द्विषष्टिः
63. त्रिषष्टिः
64. चतुष्षष्टिः
65. पञ्चषष्टिः
66. षट्षष्टिः
67. सप्तषष्टिः
68. अष्टषष्टिः
69. नवषष्टिः
70. सप्ततिः
71. एकसप्ततिः
72. द्विसप्ततिः
73. त्रिसप्ततिः
74. चतुःसप्ततिः
75. पञ्चसप्ततिः
76. षट्सप्ततिः
77. सप्तसप्ततिः
78. अष्टासप्ततिः
79. नवसप्ततिः
80. अशीतिः
81. एकाशीतिः
82. द्वयशीतिः
83. त्रयाशीतिः
84. चतुरशीतिः
85. पञ्चाशीतिः
86. षडशीतिः
87. सप्ताशीतिः
88. अष्टाशीतिः
89. नवाशीतिः
90. नवतिः
91. एकनवतिः
92. द्विनवतिः
93. त्रिनवतिः
94. चतुर्नवतिः
95. पञ्चनवतिः
96. षण्णवतिः
97. सप्तनवतिः
98. अष्टनवतिः
99. नवनवतिः
100. शतम्।

कति (पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	—	—	कति
द्वितीया	—	—	कति
तृतीया	—	—	कतिभिः
चतुर्थी	—	—	कतिभ्यः
पंचमी	—	—	कतिभ्यः
षष्ठी	—	—	कतीनाम्
सप्तमी	—	—	कतिषु

नोट– संख्यावाचक कति शब्द का प्रयोग बहुवचन में ही होता है।

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'गुरुभ्यः' पद 'गुरु' शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है?

(क) तृतीया विभक्ति, बहुवचन (ख) चतुर्थी विभक्ति, बहुवचन
(ग) पंचमी विभक्ति, एक वचन (घ) षष्ठी विभक्ति, बहुवचन

उत्तर–(ख) चतुर्थी विभक्ति, बहुवचन।

2. विद्वस् शब्द का द्वितीया बहुवचन में रूप है–

(क) विद्वान (ख) विद्वांसम् (ग) विदुषः (घ) विदुषा

उत्तर–(ग) विदुषः।

3. 'रमा' प्रातिपदिक के सप्तमी एकवचन में रूप होगा–

(क) रामाणाम् (ख) रमायाम् (ग) रमया (घ) रमे

उत्तर–(ख) रमायाम्।

4. 'गुरु' शब्द के षष्ठी एक वचन में रूप होता है–

(क) गुरुणा (ख) गुरवे (ग) गुरोः (घ) गुरौ

उत्तर–(ग) गुरोः।

5. 'नद्याम्' पद 'नदी' शब्द के किस विभक्ति और किस वचन का रूप है?

(क) द्वितीया विभक्ति तथा द्विवचन का (ख) षष्ठी विभक्ति तथा बहुवचन का

(ग) सप्तमी विभक्ति तथा एकवचन का (घ) किसी का नहीं

उत्तर–(ग) सप्तमी विभक्ति तथा एकवचन का।

6. 'पितृ' शब्द का पंचमी एकवचन में रूप होता है–

(क) पित्रः (ख) पितरस्य (ग) पितुः (घ) पित्रात्

उत्तर–(ग) पितुः।

7. 'गुर्वोः' पद 'गुरु' शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है?

(क) प्रथमा एकवचन (ख) पंचमी बहुवचन

(ग) सप्तमी द्विवचन (घ) किसी का नहीं

उत्तर–(ग) सप्तमी द्विवचन।

8. 'वारिणे' पद 'वारि' शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है?

(क) द्वितीया विभक्ति, एकवचन (ख) तृतीया विभक्ति, बहुवचन

(ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (घ) सप्तमी विभक्ति, एकवचन

उत्तर–(ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन।

9. 'नद्यै' पद 'नदी' शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है?

(क) द्वितीया विभक्ति तथा द्विवचन (ख) तृतीया विभक्ति तथा बहुवचन

(ग) चतुर्थी विभक्ति तथा एकवचन (घ) किसी का नहीं

उत्तर–(ग) चतुर्थी विभक्ति तथा एकवचन।

10. 'दधि' शब्द का पंचमी एकवचन में रूप होता है–

(क) दधिनी (ख) दध्ना (ग) दध्नः (घ) दध्ने

उत्तर–(ग) दध्नः।

11. 'राज्ञि' पद 'राजन्' शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है–

(क) द्वितीया विभक्ति एकवचन का (ख) सप्तमी विभक्ति का एकवचन का

(ग) चतुर्थी विभक्ति द्विवचन (घ) किसी का नहीं

उत्तर–(ग) चतुर्थी विभक्ति द्विवचन।

12. 'भवत्' शब्द का 'सप्तमी' बहुवचन में रूप होता है– (2019 DE, 20ZP)

(क) भवतः (ख) भवद्भ्यः (ग) भवत्सु (घ) भवद्भिः

उत्तर–(ग) भवत्सु।

13. 'हरेः' पद 'हरि' शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है?

(क) प्रथमा विभक्ति एकवचन का (ख) सप्तमी विभक्ति एकवचन का

(ग) पञ्चमी विभक्ति एकवचन का(घ) द्वितीया विभक्ति बहुवचन का

उत्तर–(ग) पञ्चमी विभक्ति एकवचन का।

14. 'राज्ञि' पद 'राजन्' शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है?

(क) द्वितीया विभक्ति एकवचन का (ख) सप्तमी विभक्ति एकवचन का

(ग) चतुर्थी विभक्ति एकवचन का (घ) किसी का नहीं

उत्तर–(ख) सप्तमी विभक्ति एकवचन का।

15. 'नद्यः' पद 'नदी' शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है?

(क) प्रथमा एकवचन (ख) द्वितीया द्विवचन

(ग) प्रथमा बहुवचन (घ) तृतीया बहुवचन

उत्तर–(ग) प्रथमा बहुवचन।

16. 'इदम्' शब्द का षष्ठी बहुवचन में रूप होता है–

(क) इदमानाम् (ख) इदानाम् (ग) एनानाम् (घ) एषाम्

उत्तर–(घ) एषाम्।

17. 'भवत्' शब्द का सप्तमी बहुवचन में रूप होता है–

(क) भवतः (ख) भवद्भ्यः (ग) भवत्सु (घ) भवद्भिः

उत्तर–(ग) भवत्सु।

18. 'रमा' शब्द का षष्ठी एकवचन में रूप होता है–

(क) रमायै (ख) रमाः (ग) रमायाः (घ) रमायाम्

उत्तर–(ग) रमायाः।

19. 'त्वया' पद युष्मद्-शब्द के किस विभक्ति और किस वचन का रूप है?

(क) प्रथमा विभक्ति तथा एकवचन (ख) पंचमी विभक्ति तथा बहुवचन

(ग) किसी का नहीं (घ) तृतीया विभक्ति तथा एकवचन

उत्तर–(घ) तृतीया विभक्ति तथा एकवचन।

20. 'सरित्' शब्द तृतीया विभक्ति एक वचन का रूप है–

(क) सरितः (ख) सरिता (ग) सरितम् (घ) सरिते

उत्तर–(ग) सरितम्।

21. भगवत्' शब्द का तृतीया विभक्ति बहुवचन में रूप होता है–

(क) भगवतैः (ख) भगवद्भिः (ग) भगवद्भ्याः (घ) भगवता

उत्तर–(ख) भगवद्भिः।

22. 'धमिताभ' पद किस शब्द के किस विभक्ति और किस वचन का रूप है?

(क) 'धी' पद का द्वितीय विभक्ति, द्विवचन (ख) 'धी' पद का षष्ठी विभक्ति बहुवचन का

(ग) 'धीमत्' पद का षष्ठी विभक्ति, बहुवचन का (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर–(ख) 'धी' पद का षष्ठी विभक्ति बहुवचन का ।

23. निम्नलिखित में से सप्तमी विभक्त्यन्त पदों को पहचानें–

(क) शय्याम् (ख) मे (ग) पित्रे (घ) भुवि

उत्तर–(घ) भुवि।

24. 'नदीः' की सही विभक्ति एवं वचन का निर्देश करें–

(क) प्रथमा एकवचन (ख) द्वितीया एकवचन

(ग) द्वितीया बहुवचन (घ) तृतीया बहुवचन

उत्तर–(ग) द्वितीया बहुवचन।

25. 'राजन्' शब्द का सप्तमी विभक्ति एकवचन का रूप है–

(क) राज्ञे (ख) राज्ञि (ग) राजसु (घ) राज्ञोः

उत्तर–(ख) राज्ञि।

26. 'वारिणे' पद वारि शब्द के किस विभक्ति और किस वचन का रूप है?

(क) सप्तमी विभक्ति एकवचन (ख) षष्ठी विभक्ति एकवचन

(ग) चतुर्थी विभक्ति एकवचन (घ) चतुर्थी विभक्ति एकवचन

उत्तर–(ग) चतुर्थी विभक्ति एकवचन।

27. 'हरिणा' पद हरि शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है? (2009 DV, DZ)

(क) प्रथमा विभक्ति तथा एकवचन(ख) द्वितीया विभक्ति तथा द्विवचन

(ग) तृतीया विभक्ति तथा एकवचन (घ) इसमें से किसी का नहीं

उत्तर–(ग) तृतीया विभक्ति तथा एकवचन।

28. धेनु शब्द का चतुर्थी एकवचन में क्या रूप होता है?

(क) धेनवः (ख) धेनुना (ग) धेनवे (घ) धेनोः

उत्तर–(ग) धेनवे।

29. 'रमासु' पद 'रमा' शब्द के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है?

(क) प्रथमा विभक्ति एक वचन का (ख) सप्तमी विभक्ति बहुवचन का

(ग) तृतीया विभक्ति एक वचन का (घ) द्वितीया विभक्ति एक वचन का

उत्तर–(ख) सप्तमी विभक्ति बहुवचन का।

30. 'पितृ' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप होता है–

(क) पिते (ख) पितरि (ग) पितरौ (घ) पितृषु

उत्तर – (ख) पितरि।

31. पितृ शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप है–

अथवा पितृ शब्द का षष्ठी बहुवचन में रूप होता है– (2017 NJ)

(क) पितुः (ख) पितरि (ग) पितृणाम् (घ) पीतृणाम

उत्तर – (ग) पितृणाम्।

32. 'करिणे' पद 'करिन्' के किस विभक्ति और वचन का रूप है?

(क) प्रथमा द्विवचन (ख) तृतीया एकवचन

(ग) चतुर्थी एकवचन (घ) पंचमी बहुवचन

उत्तर – (ग) चतुर्थी एकवचन।

33. 'भगवत्सु' पद किस विभक्ति और किस वचन का रूप है?

(क) भगवा शब्द प्रथमा बहुवचन (ख) भगवत् शब्द सप्तमी बहुवचन

(ग) भगवन् शब्द सप्तमी बहुवचन(घ) भगवत् शब्द सप्तमी एकवचन

उत्तर – (ख) भगवत् शब्द सप्तमी बहुवचन।

34. युष्मद् शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप होता है– (2019 DD)

(क) युष्मान् (ख) युष्माकम् (ग) तव (घ) युष्माणाम्

उत्तर – (ख) युष्माकम्।

35. चन्द्रमसि पद चन्द्रमस् की किस विभक्ति और किस वचन का रूप है?

(क) प्रथमा विभक्ति द्विवचन (ख) तृतीया विभक्ति एकवचन

(ग) पञ्चमी विभक्ति बहुवचन (घ) सप्तमी विभक्ति एकवचन

उत्तर – (घ) सप्तमी विभक्ति एकवचन।

36. भवत् शब्द का चतुर्थी एक वचन में क्या रूप होता है?
(क) भवतः (ख) भवद्भिः (ग) भवते (घ) भवत्सु।
उत्तर – (ग) भवते।

37. 'एतद्' (पुँल्लिङ्ग) शब्द के पञ्चमी विभक्ति द्विवचन का रूप होगा–
(क) एते (ख) एतैः (ग) एताभ्याम् (घ) एनयोः
उत्तर – (घ) एनयोः।

38. 'वारि' शब्द का चतुर्थी एकवचन का रूप है–
(क) वारिण (ख) वारिणः (ग) वारिणे (घ) वारिणो
उत्तर – (ग) वारिणे।

39. 'मधुने' पद 'मधु' शब्द की किस विभक्ति और किस वचन का रूप है?
(क) सप्तमी विभक्ति, एकवचन (ख) षष्ठी विभक्ति, एकवचन
(ग) चतुर्थी विभक्ति एकवचन (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ग) चतुर्थी विभक्ति एकवचन।

40. 'करिन्' शब्द का तृतीया विभक्ति एकवचन का रूप है–
(क) करिण (ख) करिणा (ग) करिणेन (घ) करिणि
उत्तर – (घ) करिणि।

41. 'मनस्' शब्द के तृतीया विभक्ति एकवचन का रूप होता है–
(क) मनसा (ख) मनेन (ग) मनसेन (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (क) मनसा।

42. 'रमाः' पद 'रमा' प्रातिपदिक के किस विभक्ति वचन का रूप होता है?
(क) द्वितीया विभक्ति, एकवचन (ख) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन
(ग) पञ्चमी विभक्ति, एकवचन (घ) चतुर्थी विभक्ति, बहुवचन
उत्तर – (ख) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन।

43. 'गृह' प्रातिपदिक का तृतीया बहुवचन का रूप है–
(क) गृहम् (ख) गृहात् (ग) गृहैः (घ) गृहाणि
उत्तर – (ग) गृहैः।

44. 'सम्पत्' शब्द का षष्ठी विभक्ति, बहुवचन का रूप है–
(क) सम्पदम् (ख) सम्पदाम् (ग) सम्पदभ्याम् (घ) सम्पदः
उत्तर – (ख) सम्पदाम्।

45. 'वारि' प्रातिपदिक के सप्तमी विभक्ति एकवचन में रूप होगा–
(क) वारिणी (ख) वारिणि (ग) वारिणे (घ) वारिणः
उत्तर – (ख) वारिणि।

46. 'चन्द्रमाः' पद 'चन्द्रमस्' प्रातिपदिक के किस विभक्ति-वचन का रूप है?
(क) प्रथमा, बहुवचन (ख) तृतीया, बहुवचन (ग) प्रथमा, एकवचन (घ) चतुर्थी, एकवचन
उत्तर – (क) प्रथमा, बहुवचन।

47. 'नदी' शब्द के प्रथमा बहुवचन का रूप है–
(क) नदीनाम् (ख) नदीः (ग) नद्यः (घ) नदीभिः
उत्तर – (ग) नद्यः।

48. 'वाचा' पद वाच् शब्द की किस विभक्ति-वचन का रूप है?
(क) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (ख) पञ्चमी विभक्ति, एकवचन
(ग) तृतीया विभक्ति, एकवचन (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ग) तृतीया विभक्ति, एकवचन।

49. 'नदी' शब्द का सप्तमी विभक्ति, एकवचन का रूप है–
(क) नद्यै (ख) नद्याः (ग) नद्याम् (घ) नद्या
उत्तर – (ग) नद्याम्।

50. 'जगताम्' पद 'जगत्' शब्द की किस विभक्ति-वचन का रूप है?
(क) षष्ठी द्विवचन (ख) षष्ठी बहुवचन
(ग) सप्तमी एकवचन (घ) सप्तमी द्विवचन
उत्तर – (ख) षष्ठी बहुवचन।

51. 'पितृ' शब्द का चतुर्थी एकवचन में रूप है–
(क) पितरः (ख) पित्रा (ग) पितृभ्यः (घ) पित्रे
उत्तर – (घ) पित्रे।

52. 'मत्' में कौन-सी विभक्ति है?
(क) पञ्चमी (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) प्रथमा
उत्तर – (क) पञ्चमी।

53. 'रामस्य' पद 'राम' शब्द के किस विभक्ति-वचन का रूप है?
(क) तृतीया विभक्ति, एकवचन (ख) पञ्चमी विभक्ति, द्विवचन
(ग) षष्ठी विभक्ति, एकवचन (घ) सप्तमी विभक्ति, द्विवचन
उत्तर – (ग) षष्ठी विभक्ति, एकवचन।

54. 'रमा' शब्द का चतुर्थी एकवचन में रूप होता है– (2010 CH, CI)
(क) रमया (ख) रमायै (ग) रमायाः (घ) रमायाम्
उत्तर – (ख) रमायै।

55. 'रामाय' पद 'राम' शब्द के किस विभक्ति-वचन का रूप है? (2010 CJ)
(क) द्वितीया, एकवचन (ख) तृतीया, द्विवचन
(ग) चतुर्थी, एकवचन (घ) पञ्चमी, द्विवचन
उत्तर – (ग) चतुर्थी, एकवचन।

56. 'हरि' शब्द का तृतीया एकवचन में रूप होता है– (2010 CJ)
(क) हरिः (ख) हरिम् (ग) हरिणा (घ) हरये
उत्तर – (ग) हरिणा।

57. 'रमा' शब्द का द्वितीया एकवचन में क्या रूप होता है?
(क) रमाम् (ख) रमया (ग) रमायै (घ) रमायाः
उत्तर – (क) रमाम्।

58. 'वारि' शब्द के तृतीया विभक्ति, एक वचन का रूप है– [2011 (IC)]
(क) वारिणे (ख) वारिणा (ग) वारिणः (घ) वारिणि
उत्तर– (ख) वारिणा।

59. 'गुरुणा' पद 'गुरु' प्रातिपदिक के किस विभक्ति व वचन का रूप है? [2011 (IC)]
(क) द्वितीया विभक्ति, बहुवचन (ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन
(ग) पञ्चमी विभक्ति, एकचन (घ) षष्ठी विभक्ति, एकवचन
उत्तर– (ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन।

60. 'हरये' पद 'हरि' शब्द के किस विभक्ति व वचन का रूप है? [2011 (IC, HX)]
(क) प्रथम विभक्ति, बहुवचन (ख) द्वितीया विभक्ति, द्विवचन
(ग) तृतीया विभक्ति, एक वचन (घ) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन
उत्तर– (घ) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन।

61. 'रमा' शब्द का षष्ठी विभक्ति बहुवचन का रूप है– [2011 (IC)]
(क) रमया (ख) रमायै (ग) रमाणाम् (घ) रमासु
उत्तर– (ग) रमाणाम्।

62. 'वारि' प्रातिपदिक के सप्तमी एकवचन का रूप है– [2011 (HZ)]
(क) वारीणि ख) वारिणः (ग) वारिणि (घ) वारिणे
उत्तर– (ग) वारिणि।

63. 'नाम्ना' पद 'नामन' प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं किस वचन का रूप है? [2011 (HZ)]
(क) प्रथम एकवचन (ख) चतुर्थी एकवचन (ग) षष्ठी एकवचन (घ) तृतीया एकवचन
उत्तर– (घ) तृतीया एकवचन।

64. 'अस्मद्' शब्द के तृतीया एकवचन का रूप है– [2011 (HX), 13 (BL, BK), 20 (ZQ)]
(क) माम् (ख) मया (ग) मह्यम् (घ) मम
उत्तर– (ख) मया।

65. 'गुरवे' पद गुरु प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2011 (ID)]
(क) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन (ख) द्वितीया विभक्ति, द्विवचन
(ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (घ) चतुर्थी विभक्ति, द्विवचन
उत्तर– (ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन।

66. 'कर्मणा' पद किस विभक्ति और वचन का रूप है? [2011 (ID)]
(क) प्रथमा विभक्ति, एकवचन (ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन
(ग) सप्तमी विभक्ति, एकवचन (घ) तृतीया विभक्ति, बहुवचन
उत्तर– (ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन।

67. 'हरये' पद 'हरि' प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं किस वचन का रूप है? [2012 (HD)]
(क) प्रथमा, एकवचन (ख) चतुर्थी, एकवचन (ग) षष्ठी, एकवचन (घ) तृतीया, एकवचन
उत्तर– (ख) चतुर्थी, एकवचन।

68. 'युष्मद्' शब्द के तृतीया, एकवचन का रूप है– [2012 (HD), 14 CX]
(क) त्वाम् (ख) त्वया (ग) तुभ्यम् (घ) तव
उत्तर–(ख) त्वया।

69. 'विद्वांसः' पद प्रातिपादिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है– [2012 (HE)]
(क) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन (ख) द्वितीया विभक्ति, द्विवचन
(ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (घ) तृतीया विभक्ति, बहुवचन
उत्तर–(क) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन।

70. 'कस्मै' पद किस विभक्ति और वचन का रूप है? [2012 (HE)]
(क) प्रथमा विभक्ति, एकवचन (ख) द्वितीया विभक्ति, एकवचन
(ग) तृतीया विभक्ति, बहुवचन (घ) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन।
उत्तर–(घ) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन।

71. 'नद्याः' पद नदी प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2012 (HF)]
(क) द्वितीया विभक्ति, बहुवचन (ख) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन
(ग) षष्ठी विभक्ति, एकवचन (घ) सप्तमी विभक्ति द्विवचन
उत्तर–(ग) षष्ठी विभक्ति, एकवचन

72. 'पित्रा' पद किस विभक्ति और वचन का रूप है? [2012 (HF)]
(क) प्रथमा विभक्ति, द्विवचन (ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन

(ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (घ) सप्तमी विभक्ति, एकवचन
उत्तर–(ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन।

73. 'हरीन्' पद 'हरि' शब्द की किस विभक्ति तथा वचन का रूप है? [2012 (HG)]
(क) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन (ख) द्वितीया विभक्ति, बहुवचन
(ग) तृतीया विभक्ति, एकवचन (घ) चतुर्थी विभक्ति, द्विवचन
उत्तर–(ख) द्वितीया विभक्ति, बहुवचन।

74. 'रमा' शब्द का चतुर्थी विभक्ति एकवचन का रूप है? [2012 (HG)]
(क) रमाम् (ख) रमया (ग) रमायै (घ) रमायाः
उत्तर– (ग) रमायै।

75. 'भगवत्' शब्द के सप्तमी, एकवचन का रूप है? [2012 (HH)]
(क) भगवते (ख) भगवति (ग) भगवतः (घ) भगवान्
उत्तर–(ख) भगवति।

76. सज्जनात् यह पद सज्जन शब्द के किस विभक्ति और किस वचन का रूप हैं? [2012 (HI)]
(क) प्रथमा, बहुवचन (ख) द्वितीया, बहुवचन (ग) पंचमी, बहुवचन (घ) चतुर्थी, बहुवचन
उत्तर–(ग) पंचमी, बहुवचन।

77. 'हरौ' हरि प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं किस वचन का रूप है? [2013 (BJ), 14 (CT, CX)]
(क) द्वितीया, एकवचन (ख) तृतीया, एकवचन (ग) सप्तमी, एकवचन (घ) पञ्चमी, एकवचन
उत्तर–(ग) सप्तमी, एकवचन।

78. 'पितृ' शब्द के सप्तमी एकवचन का रूप है– [2013 (BJ)]
(क) पितरम् (ख) पित्रा (ग) पितरि (घ) पित्रे
उत्तर–(ग) पितरि।

79. 'हरिभिः' पद 'हरि' प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2013 (BL), 19 (DA)]
(क) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (ख) चतुर्थी विभक्ति, बहुवचन
(ग) तृतीया विभक्ति, बहुवचन (घ) पंचमी विभक्ति, बहुवचन
उत्तर–(ग) तृतीया विभक्ति, बहुवचन।

80. 'रमायाम्' रमा प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं किस वचन का रूप है? [2013 (BK)]
(क) द्वितीया, एकवचन (ख) चतुर्थी, एकवचन (ग) षष्ठी, बहुवचन (घ) सप्तमी, एकवचन
उत्तर–(ग) सप्तमी, एकवचन।

81. 'पितरः' पद 'पितृ' शब्द के किस विभक्ति और किस वचन का रूप है? [2013 (BH)]
(क) प्रथमा विभक्ति, एकवचन (ख) द्वितीया विभक्ति, बहुवचन
(ग) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन (घ) तृतीया विभक्ति, एकवचन
उत्तर–(ग) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन।

82. 'रमायै' पद प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2013 (BM)]
(क) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन (ख) द्वितीया विभक्ति, द्विवचन
(ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (घ) तृतीया विभक्ति, बहुवचन
उत्तर–(ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन।

83. 'भवते' पद किस विभक्ति और वचन का रूप है?
(क) प्रथमा विभक्ति, एकवचन (ख) द्वितीया विभक्ति, एकवचन
(ग) तृतीया विभक्ति, बहुवचन (घ) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन
उत्तर–(घ) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन।

84. 'भगवति' पद 'भगवद्' शब्द के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2013 (BN)]
(क) प्रथमा, द्विवचन (ख) सप्तमी, एकवचन (ग) चतुर्थी, एकवचन (घ) द्वितीया, बहुवचन
उत्तर–(ख) सप्तमी, एकवचन।

85. 'गुरु' शब्द का षष्ठी एकवचन में रूप होता है– [2013 (BN)]
(क) गुर्वः (ख) गुरोः (ग) गुरुस्य (घ) गुर्वीः
उत्तर–(ख) गुरोः।

86. 'वारिणोः' वारि प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है– [2014 (CS)]
(क) पञ्चमी, द्विवचन (ख) षष्ठी, द्विवचन (ग) प्रथमा, बहुवचन (घ) सप्तमी, एकवचन
उत्तर–(ख) षष्ठी, द्विवचन।

87. 'सर्व' शब्द चतुर्थी विभक्ति, एकवचन का रूप है– [2014 (CS)]
(क) सर्वाय (ख) सर्वस्यै (ग) सर्वा (घ) सर्वस्याम्
उत्तर–(ख) सर्वस्यै।

88. 'नमो भगवते वासुदेवाय' वाक्य में 'भगवते' पद किस विभक्ति, वचन का रूप है? [2014 (CT)]
(क) द्वितीया विभक्ति, एकवचन (ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन
(ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (घ) सप्तमी विभक्ति, एकवचन
उत्तर–(ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन।

89. 'सर्वे' सर्व (पुल्लिङ्ग) प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं किस वचन का रूप है? [2014 (CU)]
(क) द्वितीया, द्विवचन (ख) सप्तमी, एकवचन (ग) प्रथमा, बहुवचन (घ) चतुर्थी, एकवचन
उत्तर–(घ) चतुर्थी, बहुवचन।

90. 'गृह' शब्द के द्वितीया, द्विवचन का रूप है– [2014 (CU)]
(क) गृहाणि (ख) गृहे (ग) गृहम् (घ) गृहाभ्याम्
उत्तर–(ख) गृहे।

91. 'पित्रे' पितृ प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं किस वचन का रूप है? [2014 (CV)]
(क) चतुर्थी, एकवचन (ख) सप्तमी, एकवचन (ग) तृतीया, बहुवचन (घ) पञ्चमी, द्विवचन
उत्तर–(क) चतुर्थी, एकवचन।

92. 'युष्मद्' शब्द के षष्ठी, एकवचन का रूप है– [2014 (CV)]
(क) त्वया (ख) तुभ्यम् (ग) तव (घ) युष्मास्द
उत्तर–(ग) तव।

93. 'पित्रा' पद 'पितृ' प्रातिपदिक के किस विभक्ति और किस वचन का रूप है?– [2014 (CW)]
(क) प्रथमा, एकवचन (ख) द्वितीया, एकवचन (ग) तृतीया, एकवचन (घ) चतुर्थी, एकवचन
उत्तर–(ग) तृतीया, एकवचन।

94. 'नदी' प्रातिपदिक के चतुर्थी, एकवचन का रूप होगा– [2014 (CW)]
(क) नद्याः (ख) नदीम् (ग) नद्यै (घ) नद्याम्
उत्तर–(ग) नद्यै।

95. 'नद्या' किस विभक्ति एवं वचन का रूप है– [2014 (CY)]
(क) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन
(ग) द्वितीया विभक्ति, एकवचन (घ) पञ्चमी विभक्ति, एकवचन
उत्तर–(ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन।

96. 'राजनि' किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2014 (CY)]
(क) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन (ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन
(ग) पञ्चमी विभक्ति, एकवचन (घ) सप्तमी विभक्ति, एकवचन
उत्तर–(घ) सप्तमी विभक्ति, एकवचन।

97. 'हरिभिः' पद 'हरि' प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2015 (DU)]
(क) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (ख) द्वितीया विभक्ति, द्विवचन
(ग) तृतीया विभक्ति, बहुवचन (घ) पंचम विभक्ति, बहुवचन
उत्तर–(ग) तृतीया विभक्ति, बहुवचन।

98. 'अस्मद्' शब्द के तृतीया एकवचन का रूप है? [2015 (DU)]
(क) माम् (ख) मह्यम् (ग) मया (घ) मयि
उत्तर–(ग) मया।

99. 'युष्मद्' प्रातिपदिक के तृतीया विभक्ति एकवचन का रूप है? [2015 (DT), 16 (TJ)]
(क) तुभ्यम् (ख) त्वत् (ग) त्वया (घ) त्वयि
उत्तर–(ग) त्वया।

100. 'हरये' पद किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2016 (TJ, TK)]
(क) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (ख) तृतीया विभक्ति, बहुवचन
(ग) षष्ठी विभक्ति, एकवचन (घ) सप्तमी विभक्ति, द्विवचन
उत्तर–(क) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन।

101. 'नदी' शब्द के प्रथमा विभक्ति बहुवचन का रूप है? [2016 (TK)]
(क) नद्याः (ख) नदीः (ग) नद्यः (घ) नदी
उत्तर–(ग) नद्यः।

102. 'वाचे' पद 'वाच्' प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2016 (TO)]
(क) तृतीया, द्विवचन (ख) चतुर्थी, एकवचन (ग) सप्तमी, एकवचन (घ) प्रथमा, द्विवचन
उत्तर–(ख) चतुर्थी, एकवचन।

103. 'भगवत्' प्रातिपदिक के चतुर्थी, एकवचन का रूप है? [2016 (TP)]
(क) भगवतः (ख) भगवते (ग) भगवन्तं (घ) भगवति
उत्तर–(ख) भगवते।

104. 'वधुषु' पद में 'वधु' प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2016 (TP)]
(क) प्रथमा, एकवचन (ख) चतुर्थी, द्विवचन (ग) सप्तमी, बहुवचन (घ) षष्ठी, एकवचन
उत्तर–(ग) सप्तमी, बहुवचन।

105. निम्नलिखित में से सप्तमी विभक्त्यन्त पदों की पहचान कीजिए– [2017 (NJ)]
(क) शय्याम् (ख) में (ग) पित्रे (घ) भूवि
उत्तर–(घ) भूवि।

106. 'मनोभिः' मनस् प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2017 (NK)]
(क) चतुर्थी, बहुवचन (ख) तृतीया, बहुवचन
(ग) षष्ठी, बहुवचन (घ) सप्तमी, एकवचन
उत्तर–(ख) तृतीया, बहुवचन।

107. 'दध्नाम्' 'दधि' प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2017 (NL)]
(क) सप्तमी, एकवचन (ख) षष्ठी, बहुवचन (ग) तृतीया, द्विवचन (घ) द्वितीया, एकवचन
उत्तर–(ख) षष्ठी, बहुवचन।

108. 'धनुषी' पद में कौन-सी विभक्ति एवं वचन है? [2017 (NM)]
(क) प्रथमा, एकवचन (ख) द्वितीया, द्विवचन
(ग) तृतीया, एकवचन (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर–(ख) द्वितीया, द्विवचन।

109. 'वारिणि' पद में 'वारि' प्रातिपदिक के किस विभक्ति व वचन का रूप है? [2017 (NN)]
(क) तृतीया, एकवचन (ख) चतुर्थी, बहुवचन (ग) सप्तमी, एकवचन (घ) प्रथमा, एकवचन
उत्तर–(ग) सप्तमी, एकवचन।

110. 'मनसि' पद में 'मनस्' प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2017 (NO), 19 (DB)]
(क) प्रथमा, एकवचन (ख) चतुर्थी, द्विवचन (ग) सप्तमी, एकवचन (घ) पञ्चमी, बहुवचन
उत्तर–(ग) सप्तमी, एकवचन।

111. 'वारिभ्यः' शब्द किस विभक्ति व वचन का रूप है? [2018 (BK)]
(क) प्रथमा, बहुवचन (ख) द्वितीया, बहुवचन (ग) तृतीया, बहुवचन (घ) चतुर्थी, बहुवचन
उत्तर–(घ) चतुर्थी, बहुवचन।

112. मनसा पद में मनस् प्रातिपदिक के किस विभक्ति और वचन का रूप है? [2019 (CZ)]
(क) द्वितीया विभक्ति, बहुवचन (ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन
(ग) चतुर्थी विभक्ति, द्विवचन (घ) षष्ठी विभक्ति, बहुवचन
उत्तर– (ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन।

113. 'नाम्नः' पद में 'नामन्' प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2019 (DC)]
(क) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन (ख) षष्ठी विभक्ति, एकवचन
(ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (घ) द्वितीया विभक्ति, बहुवचन
उत्तर– (ख) षष्ठी विभक्ति, एकवचन।

114. 'भवत्' शब्द का षष्ठी, एकवचन का रूप होता है– [2019 (DD)]
(क) भवतः (ख) भवत्सु (ग) भवद्भ्यः (घ) भवद्भिः
उत्तर– (क) भवतः।

115. 'नामन्' प्रातिपदिक में चतुर्थी एकवचन में रूप होता है– [2019 (DF)]
(क) नाम्ना (ख) नाम्नः (ग) नाम्ने (घ) नामनि
उत्तर– (ग) नाम्ने।

116. किम् प्रातिपदिक में 'कस्मात्' किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2019 (DF)]
(क) तृतीया विभक्ति, एकवचन (ख) पंचमी विभक्ति, एकवचन (ग) सप्तमी विभक्ति, बहुवचन
उत्तर– (ख) पंचमी विभक्ति, एकवचन।

117. 'सर्व' नपुंसकलिङ्ग पञ्चमी, एक वचन का रूप है– [2020 (ZR)]
(क) सर्वात् (ख) सर्वस्य (ग) सर्वस्यात् (घ) सर्वेभ्यः
उत्तर– (ग) सर्वस्यात्।

118. 'जगता' किस विभक्ति व वचन का रूप है– [2020 (ZS)]
(क) प्रथमा विभक्ति, द्विवचन (ख) तृतया विभक्ति, एक वचन
(ग) पञ्चमी विभक्ति, बहुवचन (घ) सप्तमी विभक्ति, एक वचन
उत्तर– (ख) तृतया विभक्ति, एक वचन।

119. 'अस्यान्' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप है– [2020 (ZT)]
(क) अस्यान् (ख)अस्याभिः (ग) अस्यभ्यम् (घ) अस्याकम्
उत्तर– (घ) अस्याकम्।

120. 'भवत्' शब्द का षष्ठी विभक्ति एक वचन का रूप होता है– [2020 (ZT)]
(क) भवतः (ख) भवते (ग) भवता (घ) भवति
उत्तर– (क) भवतः।

121. 'सर्वेषु' किस विभक्ति व वचन का रूप है? [2020 (ZU)]
(क) द्वितीया, बहुवचन (ख) चतुर्थी, एकवचन (ग) सप्तमी, बहुवचन (घ) पञ्चमी, एकवचन
उत्तर– (ग) सप्तमी, बहुवचन।

●●

6 धातु-रूप

(अंक-3)

आत्मनेपद

1. लभ् (प्राप्त करना, पाना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	लभते [2019 DB, DC, 20 ZR]	लभेते	लभन्ते [2020 ZQ]
म. पु.	लभसे [2019 DF]	लभेथे	लभध्वे [2017 NP]
उ. पु.	लभे [2011 IB]	लभावहे	लभामहे [2020 ZU]

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
म. पु.	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उ. पु.	लभै	लभावहै	लभामहै

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अलभत्	अलभेथाम्	अलभन्त
म. पु.	अलभथाः	अलभेथम्	अलभध्वम्
उ. पु.	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	लभेत्	लभेयाताम्	लभेरन्
म. पु.	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उ. पु.	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	लप्स्यते [2017 NK]	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
म. पु.	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उ. पु.	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

2. वृध् (बढ़ना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
प्र. पु.	वर्धते	वर्धेते	वर्धन्ते	
म. पु.	वर्धसे	वर्धेथे	वर्धध्वे	[2011 IB]
उ. पु.	वर्धे	वर्धावहे	वर्धामहे	

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
प्र. पु.	वर्धताम्	वर्धेताम्	वर्धन्ताम्	[2020 ZS]
म. पु.	वर्धस्व	वर्धेथाम्	वर्धध्वम्	
उ. पु.	वर्धे	वर्धावहै	वर्धामहै	

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अवर्धत	अवर्धेताम्	अवर्धन्त
म. पु.	अवर्धथाः	अवर्धेथाम्	अवर्धध्वम्
उ. पु.	अवर्धे	अवर्धावहि	अवर्धामहि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	वर्धेत	वर्धेयाताम्	वर्धेरन्
म. पु.	वर्धेथा	वर्धेयाथाम्	वर्धेध्वम्
उ. पु.	वर्धेय	वर्धेवहि	वर्धेमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	वर्धिस्यते	वर्धिस्येते	वर्धिस्यन्ते
म. पु.	वर्धिस्यसे	वर्धिस्येथे	वर्धिस्यध्वे
उ. पु.	वर्धिस्ये	वर्धिस्यावहे	वर्धिस्यामहे

3. भाष् (स्पष्ट बोलना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	भाषते	भाषेते	भाषन्ते
म. पु.	भाषसे	भाषेथे	भाषध्वे
उ. पु.	भाषे	भाषावहे	भाषामहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
प्र. पु.	भाषताम्	भाषेताम्	भाषन्ताम्	
म. पु.	भाषस्व	भाषेथाम्	भाषध्वम्	
उ. पु.	भाषै	भाषावहै	भाषामहै	[2018 BN]

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अभाषत	अभाषेताम्	अभाषन्त
म. पु.	अभाषथाः	अभाषेथाम्	अभाषध्वम्
उ. पु.	अभाषे	अभाषावहि	अभाषामहि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	भाषेत	भाषेयाताम्	भाषेरन्
म. पु.	भाषेथाः	भाषेयाथाम्	भाषेध्वम्
उ. पु.	भाषेय	भाषेवहि	भाषेमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
प्र. पु.	भाषिष्यते	भाषिष्येते	भाषिष्यन्ते	[2018 BK]
म. पु.	भाषिष्यसे	भाषिष्येथे	भाषिष्यध्वे	
उ. पु.	भाषिष्ये	भाषिष्यावहे	भाषिष्यामहे	

4. शी (सोना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	शेते	शयाते	शेरते
म. पु.	शेषे	शयाथे	शेध्वे
उ. पु.	शये	शेवहे	शेमहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्
म. पु.	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्
उ. पु.	शयै	शयावहे	शयामहे

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अशेत	अशेयाताम्	अशेरत
म. पु.	अशेथाः	अशेयाथाम्	अशेध्वम्
उ. पु.	अशेयि	अशेवहि	अशेमहि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्
म. पु.	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
उ. पु.	शयीय	शयीवहि	शयीमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते
म. पु.	शयिष्यसे	शयिष्येथे	शयिष्यध्वे
उ. पु.	शयिष्ये	शयिष्यावहे	शयिष्यामहे

5. विद् (जानना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	विद्यते	विद्येते	विद्यन्ते
म. पु.	विद्यसे	विद्येथे	विद्यध्वे
उ. पु.	विद्ये	विद्यावहे	विद्यामहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	विद्यताम्	विद्येताम्	विद्यन्ताम्
म. पु.	विद्यस्व	विद्येथाम्	विद्यध्वम्
उ. पु.	विद्यै	विद्यावहै	विद्यामहै

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अविद्यत	अविद्येताम्	अविद्यन्त
म. पु.	अविद्यथाः	अविद्येथाम्	अविद्यध्वम्
उ. पु.	अविद्ये	अविद्यावहि	अविद्यामहि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	विद्यते	विद्येयाताम्	विद्येरन्
म. पु.	विद्येथाः	विद्येयाथाम्	विद्येध्वम्
उ. पु.	विद्येय	विद्येवहि	विद्येमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	वेत्स्यते	वेत्स्येते	वेत्स्यन्ते
म. पु.	वेत्स्यसे	वेत्स्येथे	वेत्स्यध्वे
उ. पु.	वेत्स्ये	वेत्स्यावहे	वेत्स्यामहे

6. सेव् (सेवा करना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
म. पु.	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उ. पु.	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम् [2019 CZ]
म. पु.	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उ. पु.	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	असेवेत	असेवेताम्	असेवन्त
म. पु.	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उ. पु.	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	सेवेत	सेवायाताम्	सेवेरन्
म. पु.	सेवेथाः	सेवयाथाम्	सेवेध्वम्
उ. पु.	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते

म. पु.	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उ. पु.	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

उभयपदी धातु रूप

1. नी (नय्) ले जाना (परस्मैपद)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	नयति	नयतः	नयन्ति
म. पु.	नयसि	नयथः	नयथ
उ. पु.	नयामि [2019 DA, 20 ZP]	नयावः	नयामः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	नयतु, नयतात् (2010 CK)	नयताम्	नयन्तु
म. पु.	नय, नयतात्	नयतम्	नयत
उ. पु.	नयानि	नयाव	नयाम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अनयत्	अनयताम्	अनयनत्
म. पु.	अनयः	अनयतम्	अनयत
उ. पु.	अनयम्	अनयाव	अनयाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	नयेत्	नयेताम्	नयेयुः
म. पु.	नयेः	नयेतम्	नयेत
उ. पु.	नयेयम्	नयेव	नयेम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति
म. पु.	नेष्यसि	नेष्यथः [2011 IB]	नेष्यथ
उ. पु.	नेष्यामि [2020 ZO]	नेष्यावः	नेष्यामः

नी = (नय्) ले जाना (आत्मनेपद)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	नयते	नयेते	नयन्ते

म. पु.	नयसे	नयेथे	नयध्वे
उ. पु.	नये	नयावहे	नयामहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	नयताम्	नयेताम्	नयन्ताम्
म. पु.	नयस्व	नयेथाम्	नयध्वम्
उ. पु.	नयै	नयावहै	नयामहै

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अनयत	अनयेताम्	अनयन्त
म. पु.	अनयथाः	अनयेथाम्	अनयध्वम्
उ. पु.	अनयि	अनयावहि	अनयामहि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	नयेत	नयेयाताम्	नयेरन्
म. पु.	नयेथाः	नयेयाथाम्	नयेध्वम्
उ. पु.	नयेय	नयेवहि	नयेमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	नेष्यते	नेष्येते	नेष्यन्ते
म. पु.	नेष्यसे	नेष्येथे	नेष्यध्वे
उ. पु.	नेष्ये	नेष्यावहे	नेष्यामहे

2. याच् (माँगना) (परस्मैपद)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	याचति	याचतः [2020 ZU]	याचन्ति
म. पु.	याचसि	याचथः	याचथ
उ. पु.	याचामि	याचावः	याचामः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	याचतु	याचताम्	याचन्तु
म. पु.	याच	याचतम्	याचत
उ. पु.	याचानि	याचाव	याचाम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अयाचत्	अयाचेताम्	अयाचन्
म. पु.	अयाचः	अयाचतम्	अयाचत्
उ. पु.	अयाचम् [2017 NN]	अयाचाव	अयाचाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	याचेत्	याचेताम्	याचेयुः
म. पु.	याचेः	याचेतम्	याचेत
उ. पु.	याचेयम्	याचेव	याचेम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	याचिष्यति	याचिष्यतः	याचिष्यन्ति
म. पु.	याचिष्यसि	याचिष्यथः	याचिष्यथ
उ. पु.	याचिष्यामि	याचिष्यावः	याचिष्यामः

याच् = माँगना (आत्मनेपद)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	याचते	याचेते [2020 ZU]	याचन्ते
म. पु.	याचसे	याचेथे	याचध्वे
उ. पु.	याचे	याचावहे	याचामहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	याचताम्	याचेताम्	याचन्ताम्
म. पु.	याचस्व	याचेथाम्	याचध्वम्
उ. पु.	याचै	याचावहै	याचामहै

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अयाचत्	अयाचेताम्	अयाचन्त
म. पु.	अयाचथाः	अयाचेथाम्	अयाचध्वम्
उ. पु.	अयाचे	अयाचावहि	अयाचामहि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	याचेत	याचेताताम्	याचेरन्
म. पु.	याचेथाः	याचेयाथाम्	याचेध्वम्
उ. पु.	याचेय	याचेवहि	याचेमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	याचिष्यते	याचिष्येते	याचिष्यन्ते
म. पु.	याचिष्यसे	याचिष्येथे	याचिष्यध्वे
उ. पु.	याचिष्ये	याचिष्यावहे	याचिष्यामहे

3. दा (दान देना) (परस्मैपद)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	ददाति	दत्तः	ददति
म. पु.	ददासि	दत्थः	दत्थ
उ. पु.	ददामि [2017 NO]	दद्वः	दद्मः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
प्र. पु.	ददातु, दत्तात्	दत्ताम्	ददतु	
म. पु.	देहि, दत्तात्	दत्तम्	दत्त	[2014 CS]
उ. पु.	ददानि	ददाव	ददाम	

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
म. पु.	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उ. पु.	अददाम्	अदद्व	अदद्म

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
म. पु.	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात्
उ. पु.	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
म. पु.	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उ. पु.	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

आत्मनेपद

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	दत्ते	ददाते	ददते
म. पु.	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
उ. पु.	ददे	दद्वहे	दद्महे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
म. पु.	दत्स्व	ददाथाम्	ददध्वम्
उ. पु.	ददै	ददावहै	ददामहै

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अदत्त	अददाताम्	अददत
म. पु.	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
उ. पु.	अददि	अदद्वहि	अदद्महि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
म. पु.	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
उ. पु.	ददीय	ददीवहि	ददीमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
म. पु.	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
उ. पु.	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे

4. ग्रह् (ग्रहण करना) (परस्मैपद)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति
म. पु.	गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
उ. पु.	गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गृह्णातु, गृहतात्	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
म. पु.	गृहाण, गृहतात्	गृह्णीतम्	गृह्णीत
उ. पु.	गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
म. पु.	अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
उ. पु.	अगृह्णाम	अगृह्णीव	अगृह्णीम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गृह्णीयात्	गृह्णीयातात्	गृह्णीयुः
म. पु.	गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
उ. पु.	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति
म. पु.	ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यथ
उ. पु.	ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्यावः	ग्रहीष्यामः

आत्मनेपद (लट् लकार)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गृह्णीते	गृह्णाते	गृह्णन्ते
म. पु.	गृह्णीषे	गृह्णाथे	गृह्णाध्वे
उ. पु.	गृह्णे	गृह्णीवहे	गृह्णीमहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गृह्णीताम्	गृह्णाताम्	गृह्णताम्
म. पु.	गृह्णीष्व	गृह्णाथाम्	गृह्णीध्वम्
उ. पु.	गृह्णै	गृह्णावहै	गृह्णामहै

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अगृह्णीत	अगृह्णाताम्	अगृह्णत
म. पु.	अगृह्णीथाः	अगृह्णाथाम्	अगृह्णीध्वम्
उ. पु.	अगृह्णि	अगृह्णीवहि	अगृह्णीमहि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गृह्णीत	गृह्णीयाताम्	गृह्णीरन्
म. पु.	गृह्णीथाः	गृह्णीयाथाम्	गृह्णीध्वम्
उ. पु.	गृह्णीय	गृह्णीवहि	गृह्णीमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	ग्रहीष्यते	ग्रहीष्येते	ग्रहीष्यन्ते
म. पु.	ग्रहीष्यसे	ग्रहीष्येथे	ग्रहीष्यध्वे
उ. पु.	ग्रहीष्ये	ग्रहीष्यावहे	ग्रहीष्यामहे

5. ज्ञा (जानना) (परस्मैपद)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	जानाति	जानीतः	जानन्ति
म. पु.	जानासि	जानीथः	जानीथ
उ. पु.	जानामि	जानीवः	जानीमः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	जानातु, जानीतात्	जानीताम्	जानन्तु
म. पु.	जानीहि, जानीतात्	जानीतम्	जानीत
उ. पु.	जानानि	जानाव	जानाम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अजानात्	अजानीताम्	अजानन्

म. पु.	अजानाः	अजानीतम्	अजानीत
उ. पु.	अजानम्	अजानीव	अजानीम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः
म. पु.	जानीयाः	जानीयातम्	जानीयात
उ. पु.	जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति
म. पु.	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ
उ. पु.	ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः

आत्मनेपद

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	जानीते	जानाते	जानन्ते
म. पु.	जानीषे	जानाथे	जानीध्वे
उ. पु.	जाने	जानीवहे	जानीमहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	जानीताम्	जानाताम्	जानताम्
म. पु.	जानीष्व	जानाथाम्	जानीध्वम्
उ. पु.	जानै	जानावहै	जानामहै

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अजानीत्	अजानीताम्	अजानत
म. पु.	अजानीथाः	अजानीथाम्	अजानीध्वम्
उ. पु.	अजानि	अजानीवहि	अजानीमहि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	जानीत	जानीयाताम्	जानीरन्

म. पु.	जानीथाः	जानीयाथाम्	जानीध्वम्
उ. पु.	जानीय	जानीवहि	जानीमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	ज्ञास्यते	ज्ञास्येते	ज्ञास्यन्ते
म. पु.	ज्ञास्यसे	ज्ञास्येथे	ज्ञास्यध्वे
उ. पु.	ज्ञास्ये	ज्ञास्यावहे	ज्ञास्यामहे

6. चुर् (चुराना) (परस्मैपद)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
म. पु.	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उ. पु.	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	चोरयतु, चोरयतात्	चोरयताम्	चोरयन्तु
म. पु.	चोरय, चोरयतात्	चोरयतम्	चोरयत
उ. पु.	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
म. पु.	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
उ. पु.	अचोरयाम्	अचोरयाव	अचोरयाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
म. पु.	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
उ. पु.	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
म. पु.	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
उ. पु.	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः

आत्मनेपद

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	चोरयते	चोरयेते	चोरयन्ते
म. पु.	चोरयसे	चोरयेथे	चोरयध्वे
उ. पु.	चोरये	चोरयावहे	चोरयामहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	चोरयताम्	चोरयेताम्	चोरयन्ताम्
म. पु.	चोरयस्व	चोरयेथाम्	चोरयध्वम्
उ. पु.	चोरयै	चोरयावहै	चोरयामहै

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अचोरयत	अचोरयेताम्	अचोरयन्त
म. पु.	अचोरयथाः	अचोरयेथाम्	अचोरयध्वम्
उ. पु.	अचोरये	अचोरयावहि	आचोरयामहि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	चोरयेता	चोरयेयाताम्	चोरयेरन्
म. पु.	चोरयेथाः	चोरयेयाथाम्	चोरयेध्वम्
उ. पु.	चोरयेय	चोरयेवहि	चोरयेमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	चोरयिष्यते	चोरयिष्येते	चोरयिष्यन्ते
म. पु.	चोरयिष्येसे	चोरयिष्येथे	चोरयिष्वध्वे
उ. पु.	चोरयिष्ये	चोरयिष्यावहे	चोरयिष्यामहे

7. श्रि (सेवा करना) (परस्मैपद)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	श्रयति	श्रयतः	श्रयन्ति
म. पु.	श्रयसि	श्रयथः	श्रयथ
उ. पु.	श्रयामि	श्रयावः	श्रयामः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	श्रयतु, श्रयतात्	श्रयताम्	श्रयन्तु
म. पु.	श्रय, श्रयतात्	श्रयतम्	श्रयत
उ. पु.	श्रयाणि	श्रयाव	श्रयाम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अश्रयत्	अश्रयताम्	अश्रयन्
म. पु.	अश्रयः [2017 NL]	अश्रयतम्	अश्रयत
उ. पु.	अश्रयम्	अश्रयाव	अश्रयाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	श्रयेत्	श्रयेताम्	श्रयेयुः
म. पु.	श्रयेः	श्रयेतम्	श्रयेत
उ. पु.	श्रयेयम्	श्रयेव	श्रयेम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	श्रयिष्यति	श्रयिष्यतः	श्रयिष्यन्ति
म. पु.	श्रयिष्यसि	श्रयिष्यथः	श्रयिष्यथ
उ. पु.	श्रयिष्यामि	श्रयिष्यावः	श्रयिष्यामः

आत्मनेपद

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	श्रयते	श्रयेते	श्रयन्ते
म. पु.	श्रयसे	श्रयेथे	श्रयध्वे
उ. पु.	श्रये	श्रयावहे	श्रयामहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	श्रयताम्	श्रयेताम्	श्रयन्ताम्
म. पु.	श्रयस्व	श्रयेथाम्	श्रयध्वम्
उ. पु.	श्रयै	श्रयावहै	श्रयामहै

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अश्रयत	अश्रयेताम्	अश्रयन्त
म. पु.	अश्रयथाः	अश्रयेथाम्	अश्रयध्वम्
उ. पु.	अश्रये	अश्रयावहि	अश्रयामहि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	श्रयेत	श्रयेयाताम्	श्रयेरन्
म. पु.	श्रयेथाः	श्रयेयाथाम्	श्रयेध्वम्
उ. पु.	श्रयेय	श्रयेवहि	श्रयेमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	श्रयिष्यते	श्रयिष्येते	श्रयिष्यन्ते
म. पु.	श्रयिष्यसे	श्रयिष्येथे	श्रयिष्यध्वे
उ. पु.	श्रयिष्ये	श्रयिष्यावहे	श्रयिष्यामहे

8. क्री (मोल लेना) (परस्मैपद)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
म. पु.	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
उ. पु.	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	क्रीणातु, क्रीणीतात्	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु
म. पु.	क्रीणीहि, क्रीणीतात्	क्रीणीतम्	क्रीणीत
उ. पु.	क्रीणानि	क्रीणीव	क्रीणीम्

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अक्रीणात्	अक्रीणीयाताम्	अक्रीणन्
म. पु.	अक्रीणाः	अक्रीणीयातम्	अक्रीणीत
उ. पु.	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	क्रीणीयात् [2017 NM]	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः
म. पु.	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात
उ. पु.	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति
म. पु.	क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ
उ. पु.	क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः

आत्मनेपद

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते
म. पु.	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे
उ. पु.	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	क्रीणीताम्	क्रीणाताम्	क्रीणताम्
म. पु.	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ. पु.	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अक्रीणीत	अक्रीणीताम्	अक्रीणत
म. पु.	अक्रीणीथाः	अक्रीणीथाम्	अक्रीणीध्वम्
उ. पु.	अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
म. पु.	क्रीणीथाः	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ. पु.	क्रीणीथ	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	क्रेष्यते	क्रेष्येते	क्रेष्यन्ते
म. पु.	क्रेष्यसे	क्रेष्येथे	क्रेष्यध्वे
उ. पु.	क्रेष्ये	क्रेष्यावहे	क्रेष्यामहे

9. धा (धारण, पोषण करना) (परस्मैपद)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	दधाति	धत्तः	दधति
म. पु.	दधासि	धत्थः	धत्थ
उ. पु.	दधामि	दध्वः	दध्मः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	दधातु, धत्तात्	धत्ताम्	दधतु
म. पु.	धेहि, धत्तात्	धत्राम्	धत्त
उ. पु.	दधानि	दधाव	दधाम्

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अदधात्	अधत्ताम्	अदधुः
म. पु.	अदधाः	अधत्तम्	अधत्त
उ. पु.	अदधम्	अदध्व	अदध्म

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	दध्यातु	दध्याताम्	दध्युः
म. पु.	दध्याः	दध्यातम्	दध्यात
उ. पु.	दध्याम्	दध्याव	दध्याम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	धास्यति	धास्यतः	धास्यन्ति
म. पु.	धास्यसि	धास्यथः	धास्यथ
उ. पु.	धास्यामि	धास्यावः	धास्यामः

आत्मनेपद

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	धत्ते	दधाते	दधते
म. पु.	धत्से	दधाथे	दद्ध्वे
उ. पु.	दधे	दध्वहे	दध्महे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	धत्ताम्	दधात्ताम्	दधताम्
म. पु.	धत्स्व	दधाथाम्	दधध्वम्
उ. पु.	दधै	दधावहै	दधामहै

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अधत्त	अदधाताम्	अदधत
म. पु.	अधत्थाः	अदधाथाम्	अदधध्वम्
उ. पु.	अदधि	अदध्वहि	अदध्महि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	दधीत	दधीयाताम्	दधीरन्
म. पु.	दधीथाः	दधीयाथाम्	दधीध्वम्
उ. पु.	दधीय	दधीवहि	दधीमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	धास्यते	धास्येते	धास्यन्ते
म. पु.	धास्यसे	धास्येथे	धास्यध्वे
उ. पु.	धास्ये	धास्यावहे	धास्यामहे

10. कृ (करना) (परस्मैपद)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
म. पु.	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उ. पु.	कगेमि	कुर्वः	कुर्मः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	करोतु, कुरुतात्	कुरुताम्	कुर्वन्तु

म. पु.	कुरु, कुरुतात्	कुरुतम्	कुरुत
उ. पु.	करवाणि	करवाव	करवाम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
म. पु.	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उ. पु.	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
म. पु.	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उ. पु.	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
म. पु.	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उ. पु.	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

आत्मनेपद

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
म. पु.	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
उ. पु.	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
म. पु.	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
उ. पु.	करवै	करवावहै	करवामहै

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
म. पु.	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
उ. पु.	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
म. पु.	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
उ. पु.	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
म. पु.	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
उ. पु.	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'स्था' धातु लोट् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन का रूप होता है–
(क) तिष्ठत (ख) तिष्ठतम् (ग) अतिष्ठताम् (घ) तिष्ठताम्
उत्तर – (क) तिष्ठत।

2. 'भू' धातु का लोट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन का रूप होता है– (2017 NJ)
(क) भवतु (ख) भवतम् (ग) भव (घ) भवाव
उत्तर – (ग) भव।

3. 'सेव्' धातु लङ्लकार, प्रथम पुरुष के एकवचन में रूप होता है–
(क) असेवेत (ख) असेवत (ग) असेवताम् (घ) असेवतः
उत्तर – (क) असेवेत।

4. 'भू' धातु का लङ्लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन में रूप होता है–
(क) भवति (ख) भवतु (ग) भविष्यते (घ) अभवत्
उत्तर – (घ) अभवत्।

5. 'पा' धातु का लट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन में रूप होता है–
(क) पासि (ख) पाहि (ग) पिबसि (घ) पास्यसि
उत्तर – (ग) पिबसि।

6. 'बिभ्यति' में मूल धातु एवं लकार है–
(क) भी लट् (ख) भी, लृट् (ग) बिभ, लट् (घ) विम्य, लट्
उत्तर – (ग) बिभ, लट्।

7. 'लभेत्' रूप 'लभ्' धातु के किस वचन-पुरुष में होता है?
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) विधिलिङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
(ग) विधिलिङ् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन (घ) लोट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन
उत्तर – (ख) विधिलिङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

8. 'हस्' धातु का लङ् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन में रूप होता है–
(क) अहसतम् (ख) अहसत (ग) अहसत् (घ) हसेत्
उत्तर – (क) अहसतम्।

9. 'गच्छेयम्' गम् धातु का रूप होता है–
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
(ग) विधिलिङ् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन (घ) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
उत्तर – (ग) विधिलिङ् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन।

10. 'भू' धातु लोट् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन का रूप है–
(क) भवत (ख) भवथ (ग) भवतः (घ) भवता
उत्तर – (क) भवत।

11. 'गम्' धातु का लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन में रूप होता है–
(क) गच्छति (ख) गच्छतु (ग) गमिष्यति (घ) गच्छेत्
उत्तर – (ग) गमिष्यति।

12. 'दास्यति' 'दा' धातु का रूप है– (2014 CW)
अथवा 'दास्यति' 'दा' धातु के किस पुरुष तथा किस वचन का रूप है– (2017 NJ)
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का (ख) लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन का
(ग) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का (घ) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का
उत्तर – (घ) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का।

13. 'प्रच्छ' धातु के लोट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन में रूप होता है–
(क) पृच्छताम् (ख) प्रक्ष्यथः (ग) पृच्छतम् (घ) पृच्छेतम्
उत्तर – (ग) पृच्छतम्।

14. किसी एक धातु के लोट् लकार के मध्यम पुरुष के तीनों वचनों में रूप लिखिए–
(क) पठ् = पठ पठतम् पठत (ख) भू = भव भवतम् भवत
(ग) गम् = गच्छ गच्छतम् गच्छत

15. 'पास्यसि' में पा धातु के किस लकार, पुरुष, वचन का रूप होता है– (2011 IA)
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का (ख) लट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन का
(ग) लृट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन का (घ) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का
उत्तर – (ग) लृट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन का।

16. 'पा' धातु के लङ्लकार, मध्यम पुरुष, एक वचन में रूप होगा– (2010 CJ)
(क) पिबन्ति (ख) पिबताम् (ग) अपिबः (घ) पास्यति
उत्तर – (ग) अपिबः।

17. 'दृश्' धातु के लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एक वचन का रूप होगा– (2010 CJ)
(क) पश्यति (ख) अपश्यताम् (ग) पश्यन्तु (घ) द्रक्ष्यति
उत्तर – (घ) द्रक्ष्यति।

18. 'दृश्' धातु के लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन में रूप होता है– [2011 (HZ)]
(क) दृक्ष्यति (ख) द्रक्ष्यति (ग) द्रक्ष्यामि (घ) द्रक्ष्यथ
उत्तर– (ग) द्रक्ष्यामि।

19. 'द्रक्ष्यति' रूप 'दृश्' धातु के किस लकार, वचन एवं पुरुष का है? [2011 (IA)]
(क) लट् ल0, प्र0पु0, एकवचन (ख) लृट् ल0, प्र0पु0, एकवचन
(ग) लोट् ल., प्र.पु., एकवचन
उत्तर– (ख) लृट् ल., प्र.पु., एकवचन।

20. 'द्रक्ष्यामि' दृश् धातु का रूप है– [2011 (ID)]
(क) लट् लकार, उ. पु., एकवचन (ख) लट् लकार, उ.पु., बहुवचन
(ग) लृट् लकार, उ. पु., एकवचन (घ) लृट् लकार, उ.पु., बहुवचन
उत्तर– (ग) लृट् लकार, उ. पु., एकवचन।

21. 'गम्' धातु का लङ् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन में रूप होता है– [2011 (IC)]
(क) अगच्छन् (ख) अगमिष्यन् (ग) अगमन् (घ) अगच्छतम्
उत्तर– (क) अगच्छन्।

22. 'पठताम्' रूप 'पठ्' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन में होता है? [2011 (IC)]
(क) लट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन (ख) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन

(ग) विधिलिङ्ग लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन (घ) लोट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन
उत्तर– (ख) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन।

23. 'पास्यति' रूप 'पा' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का है? [2011 (IA)]
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन
(ग) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन
उत्तर– (ग) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

24. 'पा' धातु का लोट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन में रूप होता है– [2011 (HX)]
(क) पिबताम् (ख) पिबतम् (ग) पिबाव (घ) पिबेतम्
उत्तर– (ख) पिबतम्।

25. 'द्रक्ष्यति' रूप 'दृश्' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन में होता है? [2012 (HD)]
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लोट् लकार, प्र0 पुरुष, एकवचन
(ग) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) लङ् लकार प्र0 पुरुष, एकवचन
उत्तर–(ग) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

26. 'स्था' धातु का लोट् लकार, म0 पुरुष, द्विवचन में रूप होता है– [2012 (HD)]
(क) तिष्ठाम् (ख) तिष्ठतम् (ग) तिष्ठाव (घ) तिष्ठेतम्
उत्तर–(ख) तिष्ठतम्।

27. 'पठिष्यति' पठ् धातु का रूप है– [2012 (HE)]
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लट् लकार, उत्तम पुरुष, बहुवचन
(ग) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, बहुवचन
उत्तर–(क) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

28. 'अपिबः' 'पा' धातु का रूप है– [2012 (HF)]
(क) लट् लकार, म. पुरुष, एकवचन (ख) लङ् लकार, म. पुरुष, एकवचन
(ग) लोट् लकार, प्र. पुरुष, द्विवचन (घ) लृट् लकार, उ. पुरुष, बहुवचन
उत्तर–(ख) लङ् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन।

29. 'पास्यामि' रूप 'पा' धातु के किस लकार, पुरुष तथा वचन का है? [2012 (HG), 20 (ZT)]
(क) लट् लकार, प्र. पुरुष, एकवचन (ख) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन
(ग) लोट् लकार, प्र. पुरुष, द्विवचन (घ) लङ् लकार, म. पुरुष, बहुवचन
उत्तर–(ख) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन।

30. 'अगच्छम्' रूप गम् धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का है? [2012 (HG)]
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लृट् लकार, म0 पुरुष, एकवचन
(ग) लोट् लकार, प्र0 पुरुष, बहुवचन (घ) लङ् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन
उत्तर–(घ) लङ् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन।

31. 'दा' धातु का लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का रूप है– [2012 (HH)]
(क) दास्यति (ख) ददाति (ग) ददाष्यति (घ) दाता
उत्तर–(क) दास्यति।

32. 'द्रक्ष्यामि' दृश् धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? [2012 (HJ)]
(क) लोट् लकार, म0 पुरुष, एकवचन (ख) लृट् लकार, उ0 पुरुष, एकवचन
(ग) लोट् लकार, म0 पुरुष, एकवचन।
उत्तर–(ख) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन।

33. 'अपठत्' पद 'पठ्' धातु के किस लकार, पुरुष और वचन का है? [2012 (HI)]
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लङ् लकार, प्र0 पुरुष, एकवचन

(ग) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) इनमें से कोई नही
उत्तर–(ख) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

34. 'गम्' धातु लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन का रूप होता है– [2012 (HI)]
(क) गच्छति (ख) गच्छन्ति (ग) अगच्छत् (घ) गच्छेत्
उत्तर–(ख) गच्छन्ति

35. 'गच्छताम्' 'गम्' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? [2013 (BJ)]
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन
(ग) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन (घ) लङ् लकार, उत्तम पुरुष, द्विवचन
उत्तर–(ग) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन।

36. 'शी' धातु के लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन का रूप है– [2013 (BJ)]
(क) शेते (ख) शयाते (ग) शेरते (घ) शयाथे
उत्तर–(ग) शेरते।

37. 'दृश्' धातु के लोट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन में रूप होता है– [2013 (BL)]
(क) पश्यताम् (ख) पश्यतम् (ग) पश्यत (घ) पश्यतः
उत्तर–(ख) पश्यतम्।

38. 'भवेयुः' 'भू' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? [2013 (BK)]
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
(ग) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) विधिलिङ् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
उत्तर–(घ) विधिलिङ् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन।

39. 'लभ्' धातु लृट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन का रूप है– [2013 (BK), 19 (DE)]
(क) लभते (ख) लभेते (ग) लभसे (घ) लभेथे
उत्तर–(ख) लभेते।

40. 'ददति' में 'दा' धातु का किस लकार, पुरुष व वचन का रूप होता है? [2013 (BM)]
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
(ग) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) लोट लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
उत्तर–(ख) लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन।

41. 'पठ्' धातु का लङ्लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन में रूप होता है– [2013 (BM)]
(क) पठति (ख) पठतु (ग) अपठत् (घ) पठेत्
उत्तर–(ग) अपठत्।

42. 'भवते' पद किस विभक्ति और वचन का रूप है? [2013 (BO)]
(क) प्रथमा विभक्ति, एकवचन (ख) द्वितीया विभक्ति, एकवचन
(ग) तृतीया विभक्ति, एकवचन (घ) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन
उत्तर–(घ) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन।

43. 'अतिष्ठत्' स्था धातु का रूप है– [2013 (BN)]
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
(ग) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
उत्तर–(ख) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

44. 'गम्' धातु का विधिलिङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन में रूप है– [2013 (BN)]
(क) गमेत् (ख) गच्छेत (ग) गमेत (घ) गच्छति
उत्तर–(ख) गच्छेत्।

45. 'अनयन्' नी धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? (2014 CS)
(क) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन

(ग) लिङ् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन (घ) लोट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन
उत्तर – (ख) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन।

46. 'दा' धातु लोट् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन का रूप है– (2014 CS)
(क) दत्त (ख) ददात् (ग) ददद्युः (घ) ददतु
उत्तर – (क) दत्त।

47. 'स्थास्यति' स्था धातु का रूप है– (2014 CT)
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
(ग) लिट् लकार, अन्य पुरुष, एकवचन (घ) लुङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
उत्तर – (ख) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

48. 'पिबन्तु' 'पा' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? (2014 CU)
(क) विधिलिङ् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन (ख) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
(ग) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, द्विवचन (घ) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, बहुवचन
उत्तर – (ख) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन।

49. 'अगच्छन्' 'गम्' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? (2014 CV)
(क) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन (ख) विधिलिङ् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन
(ग) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन (घ) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, द्विवचन
उत्तर – (ग) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन।

50. 'नी' धातु लट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन का रूप है– (2014 CV)
(क) नेष्यतः (ख) नयतः (ग) नेष्यथः (घ) नेयताम्
उत्तर – (ख) नयतः।

51. 'अपश्यः' रूप 'दृश्' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? (2014 CX)
(क) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लङ् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन
(ग) लोट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन (घ) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन
उत्तर – (ख) लङ् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन।

52. 'गम्' धातु के लङ् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन में रूप होता है– (2014 CX, 16 TJ)
(क) अगच्छः (ख) अगच्छत् (ग) अगच्छम् (घ) अगच्छाम्
उत्तर – (ग) अगच्छम्।

53. 'ज्ञास्यति' 'ज्ञा' धातु का रूप है– (2014 CY, 15 DU)
(क) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
(ग) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
उत्तर – (क) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

54. 'अपठः' पठ् धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? (2015 DT)
(क) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
(ग) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन (घ) लङ्लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन
उत्तर – (घ) लङ्लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन।

55. 'दृश्' धातु लट्लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन का रूप है– (2015 DT)
(क) अपश्यन् (ख) पश्येयुः (ग) पश्यन्तु (घ) पश्यन्ति
उत्तर – (घ) पश्यन्ति।

56. 'अपश्यः' रूप 'दृश्' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? (2016 TJ)
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लङ् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन
(ग) लोट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन (घ) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन
उत्तर – (ख) लङ् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन।

57. 'आसन्' अस् धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? (2016 TK)
(क) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन (ख) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
(ग) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन (घ) लङ् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन
उत्तर – (घ) लङ् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन।

58. 'लभ्' धातु लृट्लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन का रूप है– (2016 TK)
(क) लप्स्येथे (ख) लप्स्यध्वे (ग) लभध्वे (घ) लपस्यते
उत्तर – (ख) लप्स्यध्वे।

59. 'भव' 'भू' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? (2016 TO)
(क) लोट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन (ख) लट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन
(ग) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) लङ् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन
उत्तर – (क) लोट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन।

60. 'स्था' धातु के लट्लकार के उत्तम पुरुष, एकवचन का रूप है– (2016 TO)
(क) स्थाति (ख) स्थानि (ग) स्थामि (घ) तिष्ठामि
उत्तर – (घ) तिष्ठामि।

61. 'हसथः' रूप 'हस्' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? (2016 TP)
(क) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन
(ग) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) विधिलिङ्, उत्तम पुरुष, एकवचन
उत्तर – (ख) लट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन।

62. 'कृ' धातु लट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन का रूप होगा– (2017 NJ, 19 DD)
(क) करोति (ख) कुरुतः (ग) करोषि
उत्तर – (ख) कुरुतः।

63. 'ददानि' रूप 'दा' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप होता है? (2017 NK)
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन (ख) लङ् लकार, उत्तम पुरुष, बहुवचन
(ग) लोट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन (घ) विधिलिङ्, उत्तम पुरुष, एकवचन
उत्तर – (ग) लोट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन।

64. 'दधति' रूप 'धा' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन में होता है? (2017 NL)
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
(ग) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन (घ) लट् लकार्, प्रथम पुरुष, बहुवचन
उत्तर – (घ) लट् लकार्, प्रथम पुरुष, बहुवचन।

65. 'शी' धातु के लट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन का रूप होगा– (2017 NM)
(क) शेषे (ख) शेते (ग) शेरते (घ) शये
उत्तर – (घ) शये।

66. 'वर्धते' रूप 'वृध्' धातु के किस लकार एवं पुरुष व वचन का है? (2017 NN)
(क) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
(ग) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन (घ) विधिलिङ्, उत्तम पुरुष, एकवचन
उत्तर – (ख) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

67. 'याचन्तु' रूप 'याच्' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? (2017 NO)
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
(ग) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
उत्तर – (घ) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन।

68. 'अनयत्' रूप 'नी' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का होता है? (2017 NP)
(क) विधिलिङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लोट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन

(ग) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन
उत्तर – (ग) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

69. 'द्रक्ष्यामि' रूप किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? (2018 BK)
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लृट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन
(ग) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ग) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन।

70. 'ददति' रूप 'दा' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन में होता है? (2018 BN)
(क) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन
(ग) लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन (घ) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
उत्तर – (ग) लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन।

71. ''याच्'' धातु के विधिलिङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का रूप होगा– (2019 CZ)
(क) याचताम् (ख) याचेत् (ग) याचतु (घ) याचाम
उत्तर – (ख) याचेत्।

72. 'ग्रह्' धातु लट्लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन का रूप है– (2019 DA)
(क) गृह्णीतः (ख) गृह्णीयः (ग) गृह्णीवः (घ) गृह्णीथ
उत्तर – (क) गृह्णीतः।

73. 'वृध्' धातु लोट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन का रूप होगा– (2019 DB)
(क) वधे (ख) वधेव (ग) अवधे (घ) वर्धे
उत्तर – (घ) वर्धे।

74. 'नी' धातु के परस्मैपद लोट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन का रूप होगा– (2019 DC)
(क) नयामि (ख) नयानि (ग) नयाम (घ) नयतु
उत्तर – (ख) नयानि।

75. ''ग्रह्'' (ग्रहण करना) धातु के लोट् लकार, बहुवचन में रूप होता है– (2019 DF)
(क) गृहाण (ख) गृह्णन्तु (ग) गृह्णानि
उत्तर – (ख) गृह्णन्तु।

76. 'नी' धातु, लृट् लकार, उत्तम पुरुष एक वचन होगा– (2020 ZO)
(क) नेष्यति (ख) नेष्यसि (ग) नेस्यामि (घ) नयामि
उत्तर – (ग) नेस्यामि।

77. 'ग्रह' धातु, लृट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन का रूप है– (2020 ZP)
(क) ग्रह्णीतः (ख) ग्रह्णीयः (ग) ग्रहणीवः (घ) ग्रहणीय
उत्तर – (क) ग्रह्णीतः।

78. 'नी' धातु परस्यैपद में लोट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन का रूप होता है– (2020 ZQ)
(क) नयताम् (ख) नयतम् (ग) नयत (घ) नयाव
उत्तर – (क) नयताम्।

79. 'दा' धातु परस्यैपदी, लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन का रूप है– (2020 ZR)
(क) ददन्ति (ख) ददति (ग) ददामः (घ) दत्तः
उत्तर – (ख) ददति।

80. 'दा' धातु लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का रूप होगा– (2020 ZS)
(क) ददाताम् () अदद्ध्वम् (ग) ददीमहि (घ) दास्यते
उत्तर – (घ) दास्यते।

81. 'कृ' धातु लोट्लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन का रूप होता है– (2020 ZT)
(क) करोतु (ख) कुर्वन्ति (ग) करिष्यन्ति (घ) कुर्वन्तु
उत्तर – (घ) कुर्वन्तु।

●●

7 प्रत्यय

(अंक-2)

जो वर्ण या समूह किसी धातु या शब्द के अन्त में जुड़कर नये अर्थ की प्रतीति कराते हैं तथा शब्द की विश्वसनीयता में वृद्धि करते हैं, उसे प्रत्यय कहते हैं। प्रत्यय दो प्रकार के हैं– कृदन्त प्रत्यय, तद्धित प्रत्यय।

1. कृदन्त प्रत्यय — जो प्रत्यय क्रिया या धातु के अन्त में प्रयुक्त होकर नये शब्द बनाते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं और उनके मेल से बने शब्द कृदन्त कहलाते हैं।

2. तद्धित प्रत्यय — संज्ञा और विशेषण के अन्त में लगनेवाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं और बने हुए शब्दों को 'तद्धितान्त' कहते हैं।

नोट – पाठ्यक्रम में निर्धारित प्रत्यय नीचे दिये जा रहे हैं।

(1) ल्युट् प्रत्यय–'नपुंसके भावे क्तः ल्युट् च' अर्थात् भाववाचक अर्थ में ल्युट् प्रत्यय लगता है। इसका रूप नपुंसकलिङ्ग में ही बनता है। यह भूतकालिक 'क्त' प्रत्यय का विकल्प है। ल्युट् का 'यु' शेष रहता है तथा 'यु' का (युवोरनाकौ सूत्र से) 'अन' हो जाता है। यथा—

दा	+	ल्युट्	=	दानम्	लिख	+	ल्युट्	=	लेखनम्
अर्च	+	ल्युट्	=	अर्चनम्	ग्रह्	+	ल्युट्	=	ग्रहणम्
कथ्	+	ल्युट्	=	कथनम्	नम्	+	ल्युट्	=	नयनम्
पठ्	+	ल्युट्	=	पठनम्	अधि	+	ल्युट्	=	अध्ययनम्
ज्ञा	+	ल्युट्	=	ज्ञानम्	गम्	+	ल्युट्	=	गमनम्
याच्	+	ल्युट्	=	याचनम्	भू	+	ल्युट्	=	भवनम्
कृ	+	ल्युट्	=	करणम् (2018 BK)	दृश्	+	ल्युट्	=	दर्शनम्
नी	+	ल्युट्	=	नयनम् (2013 BM)	हन्	+	ल्युट्	=	हननम्

(2) णमुल् प्रत्यय — "आभीक्ष्ण्ये णमुल् च। नित्यवीप्सयोः।" अर्थात् यदि किसी क्रिया का बार-बार लगातार (आभीक्ष्ण्य) अर्थ में प्रयोग करना होता है तो वहाँ णमुल् प्रत्यय जोड़ा जाता है। इसका प्रयोग पूर्वकालिक क्रियावाचक धातु से अर्थात् क्त्वा के अतिरिक्त होता है। 'णमुल्' में अम् शेष रहता है। यह दो बार प्रयुक्त होता है और अव्यय रूप होने के कारण इसके रूप नहीं चलते। इसकी धातु के आदि 'अ' को 'आ' तथा अन्य स्वर को गुण हो जाता है। यथा—

तड्	+	णमुल्	=	ताडं ताडम्	भिद्	+	णमुल्	=	भेदं भेदम्

यदि धातु आकारान्त है तो णमुल् प्रत्यय के जुड़ने पर मध्य में य् जुड़ जाता है। यथा —

दा	+	णमुल्	=	दायं दायम्	पा	+	णमुल्	=	पायं पायम्
गम्	+	णमुल्	=	गामं गामम्	पच्	+	णमुल्	=	पाचं पाचम्
वृ	+	णमुल्	=	वारं वारम्	दृश्	+	णमुल्	=	दर्शं दर्शम्
छिद्	+	णमुल्	=	छेदं छेदम्	नश्	+	णमुल्	=	नाशं नाशम्
नम्	+	णमुल्	=	नामं नामम्	भिद्	+	णमुल्	=	भेदं भेदम्
पठ्	+	णमुल्	=	पाठं पाठम्	लभ्	+	णमुल्	=	लाभं लाभम्
रुद्	+	णमुल्	=	रोदं रोदम्	ग्रह	+	णमुल्	=	ग्राहं ग्राहम्

(3) तव्यत् अनीयर् प्रत्यय — तव्यत् में से 'तव्य' तथा अनीयर् में से 'अनीय' शेष रहता है। इनका प्रयोग साधारणतः विधिलिङ्ग लकार चाहिए अर्थ में होता है। यथा —

कथ्	+	अनीयर्	=	कथनीयम्	पठ्	+	अनीयर्	=	पठनीय

भू	+ अनीयर् =	भवनीयम्	पा	+ अनीयर् =	पानीयम्
दृश्	+ अनीयर् =	दर्शनीय	कृ	+ अनीयर् =	करणीयम् (2020 ZS)
गम्	+ अनीयर् =	गमनीय	हस्	+ अनीयर् =	हसनीयम्
रम्	+ अनीयर् =	रमणीयम्	घ्रा	+ अनीयर् =	घ्राणीयम् (2018 BK)

तव्यत् प्रत्यय के कुछ उदाहरण—

कृ	+ तव्यत् =	कर्त्तव्यः					
गम्	+ तव्यत् =	गन्तव्यः	दृश्	+ तव्यत् =	द्रष्टव्यः
पच्	+ तव्यत् =	पक्तव्यम्	पृच्छ्	+ तव्यत् =	प्रष्टव्यः

(4) टाप् प्रत्यय — **'अजाद्यतष्टाप्'** = यह स्त्री प्रत्यय है जिसके प्रयोग से पुंल्लिङ्ग शब्द स्त्रीलिङ्ग शब्द बन जाते हैं। टाप् प्रत्यय अजादिगण के शब्दों तथा अकारान्त शब्दों के साथ प्रयोग किया जाता है। इस प्रत्यय से बने हुए शब्दों के रूप रमा की भाँति चलते हैं। टाप् प्रत्यय में 'आ' शेष रहता है। अतः टाप् प्रत्ययान्त शब्द आकारान्त कहलाते हैं। यथा —

क्षत्रिय	+ टाप् =	क्षत्रिया	सुनयन	+ टाप् =	सुनयना (2020 ZU)
चटक	+ टाप् =	चटका	बाल	+ टाप् =	बाला
अश्व	+ टाप् =	अश्वा	अचल	+ टाप् =	अचला
अनुकूल	+ टाप् =	अनुकूला	कुशल	+ टाप् =	कुशला

टाप् प्रत्यय जोड़ते समय यदि शब्द के अन्त में 'क' हो और 'क' से पूर्व 'अ'हो तो 'अ' के स्थान पर 'इ' हो जाता है। यथा— कारक के 'क' से पूर्व र में अ होने से अ का इ होने पर 'कारिका' रूप बनेगा। यथा —

नाटक	+ प्रत्ययस्थात्कारत्पूर्वस्या इदाप्यसुथः	सूत्र	+ टाप् =	नाटिका
बालक	+ प्रत्ययस्थात्कारत्पूर्वस्या इदाप्यसुथः	सूत्र	+ टाप् =	बालिका
अध्यापक	+ प्रत्ययस्थात्कारत्पूर्वस्या इदाप्यसुथः	सूत्र	+ टाप् =	अध्यापिका
गायक	+ प्रत्ययस्थात्कारत्पूर्वस्या इदाप्यसुथः	सूत्र	+ टाप् =	गायिका

(5) ङीष् प्रत्यय — **'षिद् गौरादिभ्यश्च'** अर्थात् जिनमें 'ष' लुप्त हुआ है, ऐसा प्रत्यय जुड़कर बने हुए शब्दों से तथा गौरादिगण के शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए ङीष् प्रत्यय का प्रयोग होता है। इसका 'ई' शेष रहता है। जिन शब्दों के अन्त में 'य' है, किन्तु उससे पूर्व स्वर रहित व्यंजन भी हैं तो अन्त के 'य' का लोप हो जाता है। पहले से ही स्त्रीलिङ्ग शब्दों में ङीष् प्रत्यय नहीं लगता है। इस प्रत्यय से युक्त शब्दों के रूप 'नदी' की तरह चलते हैं। यथा —

नर्तक	+ ङीष् =	नर्तकी	गौर	+ ङीष् (ई) =	गौरी
मातामह	+ ङीष् =	मातामही	नट	+ ङीष् (ई) =	नटी
तट	+ ङीष् =	तटी	चन्द्रमुख	+ ङीष् (ई) =	चन्द्रमुखी
मनुष्य	+ ङीष् =	मनुषी	शिखण्ड	+ ङीष् (ई) =	शिखण्डी
शूद्र	+ ङीष् =	शूद्री					

(6) क्त्वा प्रत्यय– जब दो क्रियाओं का एक ही कर्ता होता है तब जो क्रिया पूरी हो चुकी होती है उसे बताने के लिए धातु के साथ 'क्त्वा' (त्वा) प्रत्यय जोड़ देते हैं। 'क्त्वा' का 'त्वा' शेष रहता है। 'क्त्वा' प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होता है।

यथा—अहं पुस्तकं पठित्वा तत्र गमिष्यामि। बालकाः कार्यं कृत्वा एव तत्र आगच्छन्ति।

भू	+ क्त्वा =	भूत्वा	कृ	+ क्त्वा =	कृत्वा
पठ्	+ क्त्वा =	पठित्वा	जि	+ क्त्वा =	जित्वा
गम्	+ क्त्वा =	गत्वा	श्रु	+ क्त्वा =	श्रुत्वा
पा	+ क्त्वा =	पीत्वा	नी	+ क्त्वा =	नीत्वा
स्था	+ क्त्वा =	स्थित्वा (2018 BN)	खाद	+ क्त्वा =	खादित्वा
दृश्	+ क्त्वा =	दृष्ट्वा	त्यज्	+ क्त्वा =	त्यक्त्वा
दा	+ क्त्वा =	दत्त्वा	कथ्	+ क्त्वा =	कथयित्वा

लभ् + क्त्वा = लब्ध्वा

(7) तुमुन् प्रत्यय– यह प्रत्यय, चतुर्थी विभक्ति के स्थान पर 'के लिए' के निमित्त के अर्थ में प्रयुक्त होता है। इस प्रत्यय का तुम शेष रहता है। यह अव्यय होता है, अतः इसके रूप नहीं चलते हैं।

ध्यातव्य बातें–(i) तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग वहीं होता है जहाँ दोनों क्रियाओं का कर्ता एक ही होता है; यथा–अहं पठितुम् इच्छामि। किम् अहं गन्तुं शक्नोमि?

(ii) जहाँ दोनों क्रिया के कर्ता भिन्न होते हैं वहाँ तुमुन् नहीं होता है।

भू	+	तुमुन्	=	भवितुम्	ज्ञा	+	तुमुन्	=	ज्ञातुम्
पठ्	+	तुमुन्	=	पठितुम्	हन्	+	तुमुन्	=	हन्तुम्
गम्	+	तुमुन्	=	गन्तुम्	कृ	+	तुमुन्	=	कर्तुम्
पा	+	तुमुन्	=	पातुम्	जि	+	तुमुन्	=	जेतुम्
स्था	+	तुमुन्	=	स्थातुम्	श्रु	+	तुमुन्	=	श्रोतुम्
दृश्	+	तुमुन्	=	द्रष्टुम्	पृच्छ	+	तुमुन्	=	प्रष्टुम्
दा	+	तुमुन्	=	दातुम्	त्यज्	+	तुमुन्	=	त्यक्तुम्
लभ्	+	तुमुन्	=	लब्धुम्					

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'दानीय' पद में धातु और प्रत्यय है– (2010 CH, 17 NJ)

(क) दा + नीय (ख) दा + तुमुन् (ग) दा + क्त (घ) दा + अनीयर्

उत्तर – (घ) दा + अनीयर्।

2. 'दृश्' धातु में 'तुमुन्' प्रत्यय का योग करने पर बनता है– (2020 ZR)

(क) दर्शितुम् (ख) पश्यतुम् (ग) दृष्टुम् (घ) दृष्टम्

उत्तर – (ग) दृष्टुम्।

3. 'गन्तव्यम्' शब्द में धातु और प्रत्यय है–

(क) गी + तुमुन् (ख) गृ + अनीयर (ग) गम् + तव्यत् (घ) गृह + शानच्

उत्तर – (ग) गम् + तव्यत्।

4. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प शुद्ध नहीं है?

(क) कृ + तव्यत् (ख) गृह + तुमुन् (ग) पश्य + तल् (घ) दा + यत्

उत्तर – (ग) पश्य + तल्।

5. 'नेतुम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति प्रत्यय है–

(क) ने + तुमुन् (ख) नी + तुमुन् (ग) नै + तुमुन् (घ) नय् + तुमुन्

उत्तर – (ख) नी + तुमुन्।

6. 'पठनीयम्' पद में धातु और प्रत्यय है–

(क) पठ् + अनीयर् (ख) पठ् + तुमुन् (ग) पठ + शतृ (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर – (क) पठ् + अनीयर्।

7. 'स्था' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगने पर बनता है– (2020 ZU)

(क) स्थाक्त्वा (ख) स्थित्वा (ग) तिष्ठित्वा (घ) स्थात्वा

उत्तर – (ख) स्थित्वा।

8. 'दृष्टिः' पद में प्रयुक्त प्रकृति प्रत्यय है–

(क) दृश् + क्तिन् (ख) दृष् + टि (ग) दृश् + ति (घ) दृष् + क्तिन्

उत्तर – (क) दिश् + क्तिन्।

9. 'गन्तुम्' पद में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है– (2010 CJ, CK, 19 DB)
(क) गम् + तुमन् (ख) गन् + तुम् (ग) गम् + तुम् (घ) गन् + तुमुन्
उत्तर – (क) गम् + तुमन्।

10. 'गमनम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है– (2011 IC, 17 NJ)
(क) गम् + ल्युट् (ख) गम् + युच् (ग) गम् + अन् (घ) गम् + शानच्
उत्तर – (क) गम् + ल्युट्।

11. 'शी' धातु में ल्युट् प्रत्यय लगाने पर रूप बनेगा–
(क) शयनम् (ख) शेनम् (ग) शील्युट् (घ) शील्यु
उत्तर – (क) शयनम्।

12. 'द्रष्टुम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(क) दृश् + शतृ (ख) दृश + शानच् (ग) दृश् + तुमुन् (घ) दृश् + क्त्वा
उत्तर – (ग) दृश् + तुमुन्।

13. 'पा' धातु में 'शतृ' प्रत्यय का योग करने पर बनता है–
'पा' धातु में 'शतृ' प्रत्यय प्रयुक्त होने पर बनता है– (2017 NJ)
(क) पातुम् (ख) पीत्वा (ग) पिबन् (घ) पीतम्
उत्तर – (ग) पिबन्।

14. 'पठितुम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है–
(क) पठ् + त्वा (ख) पठ् + क्त (ग) पठ् + तुमुन् (घ) पठ् + ल्यप्
उत्तर – (ग) पठ् + तुमुन्।

15. 'नी' धातु में ल्युट् प्रत्यय लगाने पर रूप होता है–
(क) नयनम् (ख) नयन् (ग) नयमानः (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (क) नयनम्।

16. 'गच्छन्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है–
(क) गम् + शतृ (ख) गच्छ + शानच् (ग) गच्छ् + शतृ (घ) गम् + क्त्वा
उत्तर – (क) गम् + शतृ।

17. 'भू' धातु में 'तुमुन्' 'प्रत्यय' करने पर रूप होता है– (2016 TK)
(क) भूतम् (ख) भवतुम् (ग) भवितुम् (घ) भवन
उत्तर – (ग) भवितुम्।

18. 'कृ + शतृ' का उचित कृदन्त रूप है–
(क) कर्ता (ख) कुर्वन् (ग) कर्तृ (घ) कृतम्
उत्तर – (ख) कुर्वन्।

19. 'गमनम्' का प्रकृति-प्रत्यय है–
(क) गम् + अन् (ख) गम् + शानच् (ग) गम् + ल्युट् (घ) गा + ल्युट्
उत्तर – (ग) गम् + ल्युट्।

20. 'पठित्वा' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है–
(क) पठ् + क्त (ख) पठ् + शतृ (ग) पठ् + क्त्वा (घ) पठ् + क्तवतु
उत्तर – (ग) पठ् + क्त्वा।

21. 'पठ्' धातु में तुमुन् प्रत्यय के प्रयोग करने पर होता है– (2011 IA)
(क) पठतुम् (ख) पठितुम् (ग) पाठतुम् (घ) पाठितुम्
उत्तर – (ख) पठितुम्।

22. 'गन्तुम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति प्रत्यय है– (2016 TO)
(क) गम् + क्त (ख) गम् + क्त्वा (ग) गम् + तुमुन् (घ) गम् + क्तवतु
उत्तर – (ग) गम् + तुमुन्।

23. 'गम्' धातु में क्त्वा प्रत्यय का प्रयोग करने पर होता है–
(क) गतः (ख) गतवान् (ग) गत्वा (घ) गमित्वा
उत्तर – (ग) गत्वा।

24. 'पठन्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति (धातु) एवं प्रत्यय है– (20 11 HX)
(क) पठ् + क्त्वा (ख) पठ् + शतृ (ग) पठ् + तुमुन् (घ) पठ् + ल्यप्
उत्तर – (ख) पठ् + शतृ।

25. 'लभ्' धातु में क्त्वा प्रत्यय का रूप होगा–
(क) लभित्वा (ख) लब्ध्वा (ग) लाभित्वा (घ) इनमें से कोई भी नहीं
उत्तर – (ख) लब्ध्वा।

26. 'पा' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगने पर क्या रूप बनेगा? (2010 CJ, 11 HX)
(क) पीतम् (ख) पीतः (ग) पीत्वा (घ) पातुम्
उत्तर – (ग) पीत्वा।

27. 'दा' धातु में अनीयर् प्रत्यय लगने पर रूप होता है– (2010 CK)
(क) दानीयः (ख) दयनीयम् (ग) दातुम् (घ) दातव्यम्
उत्तर – (क) दानीयः।

28. 'भू' धातु में तुमुन् प्रत्यय करने पर रूप होता है– (2010 CI)
(क) भूतम् (ख) भवतुम् (ग) भवितुम्
उत्तर – (ग) भवितुम्।

29. 'ददत्' पद में प्रयुक्त प्रकृति और प्रत्यय हैं– (2011 HZ)
(क) दा + शतृ (ख) दा + तव्यत् (ग) दा + अनीयर् (घ) दा + क्त्वा
उत्तर– (क) दा + शतृ।

30. 'गम्' धातु में शतृ प्रत्यय लगने पर रूप होगा– (2011 IA)
(क) गन्तुम् (ख) गमयितुम् (ग) गच्छन् (घ) गमितः
उत्तर– (ग) गच्छन्।

31. 'भुज्' धातु में 'क्त' प्रत्यय लगने पर रूप बनेगा– (2011 ID)
(क) भुक्त्वा (ख) भुक्तवान् (ग) भुक्तम् (घ) भोक्ता
उत्तर– (ग) भुक्तम्।

32. 'लब्धुम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है– (2011 ID)
(क) लभ् + क्त (ख) लभ् + क्त्वा (ग) लभ् + तुमुन् (घ) लभ् + क्तवतु
उत्तर– (ग) लभ् + तुमुन्।

33. 'गच्छन्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय है– (2012 HD, 15 DT)
(क) गम् + शतृ (ख) गम् + शानच् (ग) गम् + तुमुन् (घ) गम् + ण्मुल्
उत्तर– (क) गम् + शतृ।

34. 'धा' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगाने पर रूप होता है– (2012 HD, 19 DA, 20 ZQ)
(क) धात्वा (ख) हित्वा (ग) धूत्वा (घ) धोत्वा
उत्तर– (क) धात्वा।

35. 'गन्तुम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है– (2012 HE)
(क) गम् + क्त (ख) गम् + क्त्वा (ग) गम् + तुमुन् (घ) गम् + क्तवतु
उत्तर– (ग) गम् + तुमुन्।

36. 'हस्' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगने पर रूप होता है– (2012 HE)
(क) हसितवान् (ख) हसितुम् (ग) हसितम् (घ) हसित्वा
उत्तर– (घ) हसित्वा।

37. 'पठनीयम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है– (2012 HF, 19 DF)
(क) पठ् + क्तवतु (ख) पठ् + क्त्वा (ग) पठ् + अनीयर् (घ) पठ् + ल्यप्
उत्तर– (ग) पठ् + अनीयर्।

38. 'पठ्' धातु में 'शतृ' प्रत्यय लगाने पर रूप बनेगा– (2012 HF)
(क) पठिता (ख) पठन् (ग) पठित (घ) पठित्वा
उत्तर– (ख) पठन्।

39. 'भू' धातु में तुमुन् प्रत्यय लगाने पर रूप होगा– (2012 HG)
(क) भूतुम् (ख) भूतम् (ग) भवतुम् (घ) भवितुम्
उत्तर– (घ) भवितुम्।

40. 'पठ्' धातु में 'शतृ' प्रत्यय लगाने पर रूप होगा– (2012 HG, 17 NN)
(क) पठत् (ख) पठन् (ग) पठितुम् (घ) पठितः
उत्तर– (ख) पठन्।

41. 'ज्ञानम्' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय एवं प्रकृति है– (2012 HH)
'ज्ञानम्' पद में प्रकृति एवं प्रत्यय है– (2017 NN)
(क) ज्ञा + शतृ (ख) ज्ञा + ल्युट् (ग) ज्ञा + अनीयर् (घ) ज्ञा + क्त
उत्तर– (ख) ज्ञा + ल्युट्।

42. 'पानीयम्' पद में धातु और प्रत्यय है– (2012 HI)
(क) पा + अनीयर् (ख) पा + शतृ (ग) पा + शानच् (घ) पा + ल्यप्
उत्तर– (क) पा + अनीयर्।

43. 'पठ्' धातु में 'शतृ' प्रत्यय लगाने पर रूप बनेगा– (2013 BJ, 15 DU)
(क) पठितः (ख) पठन् (ग) पठित्वा (घ) पठिता
उत्तर– (ख) पठन्।

44. 'गायन्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय हैं– (2013 BL)
(क) गै + शतृ (ख) गै + शानच् (ग) गै + तुमुन् (घ) गै + यत्
उत्तर– (क) गै + शतृ।

45. 'रुद्' धातु से 'ल्युट्' प्रत्यय करने पर रूप होता है– (2013 BL)
(क) रुदनम् (ख) रोदनम् (ग) रोचनम् (घ) रोधनम्
उत्तर– (ख) रोदनम्।

46. 'पातुम्' पद में प्रकृति-प्रत्यय है– (2013 BK)
(क) पा + क्तिन् (ख) पा + तुमुन् (ग) पा + ल्युप् (घ) पा + क्त्वा
उत्तर– (ख) पा + तुमुन्।

47. 'ज्ञा' धातु में (क्त्वा) प्रत्यय लगाने पर रूप बनेगा– (2013 BO)
(क) ज्ञातुम् (ख) ज्ञात्वा (ग) ज्ञातम् (घ) ज्ञेयम्
उत्तर– (ख) ज्ञात्वा।

48. 'ज्ञा' धातु में 'तुमुन्' प्रत्यय के योग से रूप बनेगा– (2013 BN)
(क) ज्ञातम् (ख) ज्ञातुम् (ग) ज्ञानितुम् (घ) ज्ञातुमुन्
उत्तर– (ख) ज्ञातुम्।

49. 'द्रष्टुं' पद में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है– (2013 BN)
(क) दृश् + क्त (ख) दृश् + क्त्वा (ग) दृश् + तुमुन् (घ) दृश् + क्तवतु
उत्तर– (ग) दृश् + तुमुन्।

50. 'लभमानः' में प्रकृति प्रत्यय है– (2014 CS)
(क) लभ् + शतृ (ख) लभ् + शानच् (ग) लभ् + क्त्वा (घ) लभ् + अनीयर्
उत्तर– (ख) लभ् + शानच्।

51. 'ची + अनीयर्' में रूप बनता है– (2014 CS, 19 DD)
(क) चयनीयः (ख) चेयम् (ग) चयनम् (घ) चेयः
उत्तर– (क) चयनीयः।

52. 'गायन' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति प्रत्यय है– (2014 CT)
(क) गै + शतृ (ख) गै + शानच् (ग) गै + यत् (घ) गै + क्तः
उत्तर– (क) गै + शतृ।

53. 'ज्ञा' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगने पर रूप बनेगा– (2014 CT)
(क) ज्ञातुम् (ख) ज्ञातम् (ग) ज्ञात्वा (घ) ज्ञेयम्
उत्तर– (ग) ज्ञात्वा।

54. 'पठित्वा' पद में प्रकृति प्रत्यय है– (2014 CU)
(क) पठ् + क्तिन् (ख) पठ् + क्त्वा (ग) पठ् + क्त (घ) पठ् + ल्युट्
उत्तर– (ख) पठ् + क्त्वा।

55. 'नी' धातु में 'तुमुन्' प्रत्यय लगने पर रूप बनेगा– (2014 CU)
(क) नयनम् (ख) नीतिः (ग) नीतम् (घ) नेतुम्
उत्तर– (घ) नेतुम्।

56. 'पठन्' शब्द में प्रकृति-प्रत्यय है– (2014 CV)
(क) पठ् + ल्युट् (ख) पठ् + शतृ (ग) पठ् + अनीयर् (घ) पठ् + क्तिन्
उत्तर– (ख) पठ् + शतृ।

57. 'पा' धातु में 'तुमुन्' प्रत्यय लगने पर रूप बनेगा– (2014 CV, 17 NO)
(क) पानम् (ख) पीत्वा (ग) पातुम् (घ) पिबन्
उत्तर– (ग) पातुम्।

58. 'पठन्' पद में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है– (2014 CW)
(क) पठ् + शतृ (ख) पठ् + शानच् (ग) पठ् + तव्यत् (घ) पठ् + क्त्वा
उत्तर– (क) पठ् + शतृ।

59. 'दा' धातु में 'तुमुन्' प्रत्यय लगने पर रूप होगा– (2014 CW, 16 TJ)
(क) ददत् (ख) दत्त्वा (ग) दातुम् (घ) देयत्
उत्तर– (ग) दातुम्।

60. 'लभमानः' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय है– (2014 CX)
(क) लभ् + यत् (ख) लभ् + शतृ (ग) लभ् + शानच् (घ) लभ् + तुमुन्
उत्तर– (ग) लभ् + शानच्।

61. 'पठ्' धातु में तुमुन् प्रत्यय लगने पर रूप होता है– (2014 CX)
(क) पाठयित्वा (ख) पठनम् (ग) पठितुम् (घ) पठन्
उत्तर– (ग) पठितुम्।

62. 'गङ्गा' शब्द में प्रकृति-प्रत्यय है– (2014 CY, 15 DU)
(क) गङ्गा + अप् (ख) गङ्गा + प् (ग) गङ्ग + टाप् (घ) गङ्ग + अप्
उत्तर– (ग) गङ्ग + टाप्।

63. 'पठ्' धातु में 'शतृ' लगने पर रूप बनेगा– (2014 CY)
(क) पठमानः (ख) पठन् (ग) पठित्वा (घ) पठितुम्
उत्तर– (ख) पठन्।

64. 'पठ्' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगने पर रूप बनेगा– (2015 DT)
(क) पठितुम् (ख) पठन् (ग) पठित्वा (घ) पठनीयम्
उत्तर– (ग) पठित्वा।

65. 'गायन' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है– (2016 TJ)
(क) गै + शतृ (ख) गै + शानच् (ग) गै + यत् (घ) गै + क्तः
उत्तर– (क) गै + शतृ।

66. 'वर्धमानम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है– (2016 TK)
(क) वर्ध + शानच् (ख) वृध् + शानच् (ग) वध् + मानम् (घ) वर्धमान् + तुमुन्
उत्तर– (ख) वृध् + शानच्।

67. 'दृश्' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगने पर बनेगा– (2016 TO)
(क) पश्य (ख) दृष्ट्वा (ग) दृश्ट्वा (घ) दृश्ट्बा
उत्तर– (ख) दृष्ट्वा।

68. 'कृतवती' पद में प्रकृति-प्रत्यय है– (2016 TP)
(क) कृ + शतृ (ख) कृ + क्तवतु (ग) कृ + ल्युट् (घ) कृ + क्तिन्
उत्तर– (क) कृ + शतृ।

69. 'लिख्' धातु में 'अनीयर्' प्रत्यय लगने पर रूप बनेगा– (2016 TP)
(क) लिखन् (ख) लिखितुं (ग) लेखनीयम् (घ) लिखित्वा
उत्तर– (ग) लेखनीयम्।

70. 'याचनम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय है– (2017 NK)
(क) याच् + णमुल् (ख) याच् + ल्युट् (ग) याच् + अनीयर् (घ) याच् + ङीष्
उत्तर– (ख) याच् + ल्युट्।

71. 'दृश्' धातु में अनीयर् प्रत्यय लगने पर रूप होगा– (2017 NK)
(क) दर्शनीयम् (ख) दर्शनम् (ग) दृष्टी (घ) दर्शम्
उत्तर– (क) दर्शनीयम्।

72. अध्ययनम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय है– (2017 NL, 20ZS)
(क) अधि + णमुल् (ख) अधि + ल्युट् (ग) अधि + अनीयर् (घ) अधि + टाप्
उत्तर– (ख) अधि + ल्युट्।

73. 'कृ' धातु में अनीयर् प्रत्यय लगने पर रूप होगा– (2017 NL, 20 ZS)
(क) करणम् (ख) करणीयम् (ग) कृतम् (घ) क्रीतम्
उत्तर– (ख) करणीयम्।

74. 'नर्तनम्' पद में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय है– (2017 NM)
(क) नृत् + तुमुन् (ख) नृत् + ण्वुल् (ग) नृत् + ल्युट् (घ) नृत् + शतृ
उत्तर– (ग) नृत् + ल्युट्।

75. 'दृश्' धातु में 'अनीयर्' प्रत्यय लगाने पर शब्द बनेगा– (2017 NM)
(क) दर्शनीयः (ख) दृशनीयः (ग) दरशनीयः (घ) दरसनीयः
उत्तर– (क) दर्शनीयः।

76. 'भवितुम्' पद में प्रकृति-प्रत्यय है– (2017 NO)
(क) भू + शतृ (ख) भू + ल्युट् (ग) भू + तुमुन् (घ) भू + क्तवतु
उत्तर– (ग) भू + तुमुन्।

77. 'पाठं पाठम्' में प्रयुक्त प्रकृति और प्रत्यय है– (2017 NP)
(क) पठ् + घञ् (ख) पठ् + णमुल् (ग) पठ् + क्त (घ) पठ् + अनीयर्
उत्तर– (ख) पठ् + णमुल्।

78. 'तट' शब्द में 'ङीप्' प्रत्यय लगने पर रूप होगा– (2017 NP)
(क) तटा (ख) तटी (ग) तटिनी (घ) तटङी
उत्तर– (ख) तटी।

79. 'कृ' धातु में 'ल्युट्' प्रत्यय जोड़ने पर शब्द बनेगा– (2018 BK)
(क) करण (ख) करणम् (ग) कृणम् (घ) कृणनम्
उत्तर– (ख) करणम्।

80. 'शयनम्' में प्रयुक्त प्रकृति और प्रत्यय है– (2018 BN, 19 DA, 20 ZQ)
(क) शी + तुमुन् (ख) शी + ल्युट् (ग) शी + शतृ (घ) शी + शानच्
उत्तर– (ख) शी + ल्युट्।

81. 'स्था' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगाने पर रूप होगा– (2018 BN, 20 ZU)
(क) तिष्ठित्वा (ख) स्थित्वा (ग) स्थात्वा (घ) स्थाक्त्वा
उत्तर– (ख) स्थित्वा।

82. 'दर्शनीय' पद में प्रयुक्त प्रकृति प्रत्यय है– (2019 CZ)
(क) दृश् + ल्युट् (ख) दृश् + णमुल् (ग) दृश् + तव्यत् (घ) दृश् + अनीयर्
उत्तर– (घ) दृश् + अनीयर्।

83. 'गम्' धातु में तव्यत् प्रत्यय लगाने पर शब्द बनेगा– (2019 CZ)
(क) गन्तुम् (ख) गमनीय (ग) गन्तव्यम् (घ) गन्तव्यः
उत्तर– (घ) गन्तव्यः।

84. 'पठ्' धातु में 'क्त' प्रत्यय लगाने पर रूप होगा– (2019 DB)
(क) पठित्वा (ख) पठितः (ग) पठितुम् (घ) पाठः
उत्तर– (ख) पठितः।

85. 'गत्वा' पद में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय है– (2019 DC)
(क) गम् + क्त्वा (ख) गम् + तुमुन् (ग) गम् + ल्यप् (घ) गम् + ल्युट्
उत्तर– (क) गम् + क्त्वा।

86. 'पा' धातु में 'क्त' प्रत्यय लगाने पर रूप होगा– (2019 DC, 20 ZP)
(क) पीतः (ख) पीत्वा (ग) पानम् (घ) पिबन्
उत्तर– (क) पीतः।

87. 'पठनम्' में प्रकृति प्रत्यय है– (2019 DD)
(क) पठ् + ल्युट् (ख) पठ् + तुमुन् (ग) पठ्+ शानच् (घ) पठ्+ अनीयर्
उत्तर– (क) पठ् + ल्युट्।

88. 'गत्वा' पद में प्रयुक्त प्रकृति प्रत्यय है– (2019 DE)
(क) गम् + तुमुन् (ख) गम् + क्त्वा (ग) गम् + अनीयर् (घ) गम् + तत्वयत्
उत्तर– (ख) गम् + क्त्वा।

89. 'नी' धातु में ल्युट् प्रत्यय लगाने पर रूप होता है– (2019 DE)
(क) नयनम् (ख) नयन् (ग) नयमान् (घ) नीतः
उत्तर– (क) नयनम्।

90. 'लिख्' धातु में तुमुन् प्रत्यय लगाने पर रूप होगा– (2019 DF)
(क) लिखन् (ख) लेखनीयम् (ग) लिखितुं (घ) लिखित्वा
उत्तर– (ग) लिखितुं।

91. 'स्थित्वा' पद में प्रकृति प्रत्यय है– (2020 ZO)
(क) तिष्ठा + त्वा (ख) स्या + वत्त्वा (ग) स्थिति + त्वा (घ) स्थि + क्त्वा
उत्तर– (ख) स्या + वत्त्वा।

92. 'भू' धातु में तुमुन् प्रत्यय लगने पर बनेगा– (2020 ZO)
(क) भूतम् (ख) भोक्तुम् (ग) भवितुम् (घ) भावितुम्
उत्तर– (ग) भवितुम्।

93. 'पीत्वा' में प्रकृति प्रत्यक्ष है– (2020 ZR)
(क) पी + क्त्वा (ख) पा + त्वा (ग) पा + क्त्वा (घ) पी + त्वा
उत्तर– (ग) पा + क्त्वा।

94. 'कृतः' में प्रकृति प्रत्यय है– (2020 ZT)
(क) कृ + शतृ (ख) कृ + तुमुन् (ग) कृ + क्तवतु (घ) कृ + क्त
उत्तर– (घ) कृ + क्त।

95. चिञ् (चि) + अनीयर् में रूप बनता है– (2020 ZT)
(क) चेयम् (ख) चयनीयम् (ग) चयनम् (घ) चेतव्यम्
उत्तर– (ख) चयनीयम्।

●●

8 वाच्य-परिवर्तन

(अंक-2)

वाक्य की उस दशा को वाच्य कहा जाता है जिससे यह पता चल सके कि वाक्य के प्रयोग में कर्त्ता की प्रधानता है या कर्म की प्रधानता है या भाव की। अतः वाक्य के कहने की विधि को संस्कृत में वाच्य कहते हैं। वाच्य तीन प्रकार के होते हैं–

(1) कर्तृ वाच्य

(2) कर्म वाच्य

(3) भाव वाच्य

(1) कर्त्तृ वाच्य — कर्तृ वाच्य वाक्यों में क्रिया कर्त्ता के अनुसार प्रयोग होती है अर्थात् जिस वाक्य में कर्त्ता प्रधान हो और क्रिया कर्त्ता के पुरुष और वचन के अनुसार प्रयोग की जाती हो उसे कर्तृ वाच्य कहते हैं। जैसे— बालकः पत्रं लिखति।

इस वाक्य में चूँकि पत्र लिखने का कार्य बालक कर रहा है इसलिए बालक कर्त्ता है। अतः इसमें प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होगा। 'बालक' कर्त्ता के अनुसार विभक्ति के वचन तथा क्रिया का प्रयोग 'लिखति' हुआ है। कर्म 'पत्रं' में द्वितीया विभक्ति है।

सुरेशः पुस्तकं पठति।

राधा गृहं गच्छति।

वयम् आपणं गच्छामः।

उपर्युक्त वाक्यों में क्रियाएँ — पठति, गच्छति, गच्छामः अपने कर्त्ता — सुरेश, राधा, वयम् के अधीन हैं। कर्त्ता की प्रधानता के कारण कर्त्ता प्रथमा विभक्ति के हैं तथा क्रियाएँ उनके पुरुष एवं वचन के अनुसार प्रयुक्त हुई हैं। कर्म में द्वितीया विभक्ति है।

(2) कर्म वाच्य — कर्म वाच्य के वाक्यों में कर्त्ता के स्थान पर कर्म की प्रधानता रहती है और क्रिया कर्म के अधीन होती है, तदनुसार कर्म में प्रथमा विभक्ति यथा कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है। क्रिया का पुरुष और वचन कर्म के अनुसार होते हैं। यथा—

कृष्णेन कंसः हतः।	कर्तृ वाच्य	कृष्णः कंसं हतवान्।
मया पुस्तकानि पठ्यन्ते।	कर्तृ वाच्य	अहं पुस्तकानि पठामि।
त्वया पत्रं लिख्यते।	कर्तृ वाच्य	त्वं पत्रं लिखसि।

उक्त कर्तृवाच्य के वाक्य (1) कृष्णः कर्त्ता, कर्मवाच्य में तृतीया विभक्ति में प्रयुक्त हुआ है और कर्म '**कंसः**' को कर्मवाच्य में कर्त्ता का स्थान दिया है। इसी प्रकार वाक्य (2) में अहं कर्त्ता कर्मवाच्य में तृतीया विभक्ति में 'मया' तथा 'पुस्तकानि' कर्मकारक द्वितीया विभक्ति का रूप कर्मवाच्य में 'पुस्तकानि' प्रथमा विभक्ति के रूप में प्रयुक्त हुआ है। वाक्य (3) में त्वं कर्त्ता कारक है तथा कर्मवाच्य में त्वया तृतीया विभक्ति में प्रयुक्त हुआ है और इसी वाक्य में 'पत्रं' कर्म को कर्मवाच्य में कर्त्ता के रूप में प्रयोग किया है। कर्मवाच्य में क्रियाएँ कर्म के आधार पर लगाई जाती हैं।

(3) भाववाच्य— भाववाचक केवल अकर्मक धातुओं से ही होता है। इस वाच्य में भी कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है। यथा— त्वया गम्यते। अस्माभिः अत्र पठ्यते। बालकैः सदा परिश्रमपरैः भवितव्यम्।

भाववाच्य का कर्त्ता किसी भी लिंग और वचन का हो, उसकी क्रिया में एकवचन ही होगा। इसमें कर्म का अभाव रहता है। यथा— (1) मया हस्यते।

(2) रामाभ्यां हस्यते।

(3) तैः पठ्यते।

उपर्युक्त वाक्यों में भाव की प्रधानता तथा कर्म का अभाव है। यहाँ तीनों कर्त्ता तृतीया विभक्ति (मया–एकवचन) (रामाभ्याम् द्विवचन) तथा (तैः बहुवचन) के हैं लेकिन क्रियाएँ हस्यते, पठ्यते प्रथम पुरुष एक वचन की हैं। कर्त्ता का कोई प्रभाव इन क्रियाओं पर नहीं है।

कर्त्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाना

कर्मवाच्य की क्रिया सदैव आत्मनेपद में आती है।

कर्मवाच्य के कर्त्ता को तृतीया विभक्ति में तथा कर्म को प्रथमा विभक्ति में बदलकर रखा जाता है।

कर्म के पुरुष तथा वचन के अनुसार क्रिया का प्रयोग होता है।

कर्मवाच्य बनाने के लिए सार्वधातुक (लट्, लोट्, विधिलिङ्ग,लङ्) लकारों में धातु में 'यक्' प्रत्यय जोड़ते हैं जिसका 'य' शेष रहता है। जैसे पठ् धातु में 'य' जोड़कर 'पठ्य' बना और इसके रूप लट्लकार पठ्यते आदि, लोट् में पठ्यताम् आदि, विधिलिङ्ग में पठ्येत आदि तथा लङ्लकार में अपठयत् आदि रूप बनेंगे।

आकारान्त धातुओं में आ, ए, ऐ, ओ, औ, का ई बनाकर रूप बनाते हैं। यथा — पा, दा, धा, भा, स्था, ह्वा एवं गा के रूप होंगे — पी, दी, धी, भी, स्थी, ह्वी, गी से रूप बनाते हैं। जैसे — पीयते, दीयते, स्थीयते आदि।

यदि धातुओं के आदि में य, व, र आदि है तो कर्मवाच्य में 'य' का इ, 'व' का उ हो जाता है। यथा यज् से इज्यते, वस् से उष्यते।

जिन धातुओं के अन्त में ह्रस्व इ तथा ह्रस्व उ होता है, कर्मवाच्य में इ से ई, उ से ऊ हो जाता है। यथा जि = जीयते, चि = चीयते, श्रु = श्रूयते, स्तु = स्तूयते।

कर्मवाच्य में धातु के अन्त में आनेवाली ऋ को 'रि' और 'ईर' हो जाता है। यथा — 'कृ' से क्रियते, ह्वी से ह्वियते, जृ से जीर्यते, तृ से तीर्यते।

कर्त्तृवाच्य से भाववाच्य बनाना

भाववाच्य में क्रिया आत्मनेपद में आती है।

कर्त्ता में तृतीया विभक्ति तथा क्रिया सदैव लट् लकार प्रथम पुरुष एक वचन की ही प्रयुक्त होती है।

सार्वधातुक लकारों में धातु में 'यक्' प्रत्यय का प्रयोग होता है।

भाववाच्य में परिवर्तन को अन्य नियम तो प्रायः कर्मवाच्य परिवर्तन जैसे हैं लेकिन विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए। क्रिया के आधार पर वाक्य को दो प्रकार से बदलते हैं :

(1) सकर्मक क्रिया होने पर कर्त्तृवाच्य को कर्मवाच्य में ही बदला जा सकता है।

(2) अकर्मक क्रिया होने पर कर्त्तृवाच्य केवल भाववाच्य में परिवर्तित होगा।

सकर्मक क्रिया का उदाहरण — बालकः पत्रं लिखति = पत्रं बालकेन लिख्यते।

अकर्मक क्रिया का उदाहरण — अहं गच्छामि = मया गम्यते।

गत वर्ष की बोर्ड परीक्षाओं में पूछे गये वाच्य-परिवर्तन

[2011]

सः पुस्तकं पठति।	IA, 20ZU	तेन पुस्तकं पठ्यते।
अहं जलं पिबामि।	IA	मया जलं पीयते।
त्वं पत्रं लिखसि	IA	त्वया पत्रं लिख्यते।
बालिका पुस्तकं पठति।	IB	बालिकया पुस्तकं पठ्यते।
मया हस्यते।	IB	अहं हसामि।
रजकः गर्दभं ताडयति।	IB	रजकेन गर्दभं ताड्यते।
छात्रः पुस्तकं पठति।	IC	छात्रेण पुस्तकं पठ्यते।

अहं पत्रं लिखामि।	IC	मया पत्रं लिख्यते।
कृषकेण जलं पीयते।	IC	कृषकः जलं पिबति।
सः दुग्धं पिबति।	ID, 19 DE	तेन दुग्धं पीयते।
अहं गच्छामि।	ID, 19 DE	मया गम्यते।
लता गीतं गायति।	IX	लतया गीतं गीयते।
त्वं पत्रं लिखसि।	IX, 19 DA	त्वया पत्रं लिख्यते।

[2012]

बालिका गीतं गायति	HD	बालिकया गीतं गीयते।
कविः काव्यं करोति	HD, 17 NM	कविना काव्यं कुरुते।
तया गम्यते	HD, 19 DD	त्वं गच्छसि।
सः ग्रामं गच्छति	HE	तेन ग्रामं गम्यते।
तेन यत्रं पठयते	HE	सः पत्र पठति।
अहं पश्यामि	HE	मया दृश्यते।
सः पुस्तकं पठति	HF	तेन पुस्तक पठ्यते।
तेन जलं पीयते	HF	सः जलं पिबति।
अहं लिखामि	HF	मया लिख्यते।
रामः जल पिबति	HG,HJ	रामेण जलं पीयते।
त्वं किं लिखसि	HG	त्वया किं लिख्यते।
अहं पुस्तकं पठामि	HG	मया पुस्तकं पठ्यते।
सा विद्यालयं गच्छति	HJ	तया विद्यालयं गम्यते।
त्वयां पत्र लिख्यते	HJ	त्वं पत्रं लिखसि।
अहं गृहं गच्छामि	HI, 20ZT	मया गृहं गम्यते।
त्वया पुस्तकं पठ्यते	HI	त्वं पुस्तक पठसि।
सिद्धार्थः चित्रपटं पश्यति	HI	सिद्धार्थेन चित्रपटं दृश्यते।

[2013]

तेन दुग्धं पीयते	BJ, 20ZS	सः दुग्धं पिबति।
रामः पुस्तकं पठति	BJ	रामेण पुस्तकं पठ्यते।
रमा पत्रं लिखति	BJ	रमया पत्रं लिख्यते।
अहम् गच्छामि	BK	मया गम्यते।
रामेण पुस्तकं पठ्यते	BK	रामः पुस्तकं पठति।
मोहनः गीतं गायति	BL, 19 DC	मोहनेन गीतं गीयते।
सीता पत्रं लिखति	BL	सीतया पत्रं लिख्यते।
छात्रया पुस्तकं पठ्यते	BN	छात्रा पुस्तकं पठति।
माता ओदनं पचति	BN	मात्रा ओदन पच्यते।
सन्दीपः विद्यालयं गच्छति	BO	सन्दीपेन विद्यालयं गम्यते।
कोमलेन पत्रं लिख्यते	BO	कोमल पत्रं लिखति।

अहं पुस्तकं पठामि	BO, 19 DD	मया पुस्तकं पठ्यते।
अहं ग्रामं गच्छामि	BP	मया ग्रामं गम्यते।
रामेण ग्रामं गम्यते	BP	रामः ग्रामं गच्छति।
तेन पत्रं पठ्यते	BP	सः पत्रं पठति।

[2014]

बालकः मार्गे अधावत्।	CS	बालकेन मार्गे धावते।
रमा पत्रं लिखति।	CS	रमया पत्रं लिख्यते।
तेन पुस्तकं पठ्यते।	CS	सः पुस्तकं पठति।
रामेण पुस्तकं पठ्यते।	CT	रामः पुस्तकं पठति।
ते पत्रं पठन्ति।	CT	तैः पत्रं पठ्यन्ते।
अहम् गच्छामि।	CT	मया गम्यते।
सः ग्रन्थं पठति।	CU	तेन ग्रन्थं पठ्यते।
त्वया गृहं गम्यते।	CU, 19 DF	त्वम् गृहं गच्छसि।
अहं लेखं लिखामि।	CU	मया लेखं लिख्यते।
रामेण बाली हन्यते।	CV	रामः वाली हन्ति।
अहं जलं पिबामि।	CV	मया जलं पीयते।
सः हसति।	CV	तेन हस्यते।
सा रामायणं पठति।	CW	तया रामायणं पठ्यते।
रमेशः पुस्तकं पश्यति।	CW	रमेशेन पुस्तकं दृश्यते।
तेन गम्यते।	CW	सः गच्छति।
तया हस्यते।	CX	सा हसति।
गोपालः पुस्तकं पठति।	CX	गोपालेन पुस्तकं पठ्यते।
भक्तः ज्ञानम् प्राप्नोति।	CX	भक्तेन ज्ञानं प्राप्यते।
अहं पुस्तकं पठामि।	CY, 17 NJ	मया पुस्तकं पठ्यते।
त्वया ग्रामः गम्यते।	CY	त्वम् ग्रामं गच्छसि।
ते पत्राणि पठन्ति।	CY	तैः पत्राणि पठ्यन्ते।

[2015]

तेन दुग्धं पीयते।	DU	सः दुग्धं पिबति।
रामः विद्यालयं गच्छति।	DU, 20ZU	रामेण विद्यालयं गम्यते।
अहं पुस्तकं पठामि।	DU	मया पुस्तकं पठ्यते।
सः रामायणं पठति।	DT	तेन रामायणं पठ्यते।
अहं दुग्धं पिबामि।	DT, 19 DB	मया दुग्धं पीयते।
तया लिख्यते।	DT	त्वं लिखसि।

[2016]

तेन पुस्तकं पठ्यते।	TJ	सः पुस्तकं पठति।
अहं गच्छामि।	TJ	मया गम्यते।

छात्राः पत्रं लिखति।	TJ	छात्रया पत्रं लिख्यते।
अहं पुस्तकं पठामि।	TK	मया पुस्तकं पठ्यते।
मया जलं पीयते।	TK, 19 DD, 20 ZP	अहं जलं पिबामि।
तया गम्यते।	TK	त्वं गच्छसि।
रामेण ग्रामः गम्यते।	TO	रामः ग्रामं गच्छति।
बालकाः धावन्ति।	TO	बालकाभिः धावन्ते।
रामेण तीव्रं हस्यते।	TO	रामः तीव्रं हसति।
सः प्रयागं गच्छति।	TP	तेन प्रयागं गम्यते।
तेन पुस्तकं नीयते।	TP, 19 DB	सः पुस्तकं नयति।
अहं पुस्तकं लिखामि।	TP	मया पुस्तकं लिख्यते।

[2017]

भक्तेन ज्ञानं प्राप्यते।	NJ	भक्तः ज्ञानं प्राप्नोति।
रामः विद्यालयं गच्छति।	NJ	रामेण विद्यालयं गम्यते।
रामः धनं ददाति।	NK	रामेण धनं दीयते।
मया चित्रं दृश्यते।	NK, 20ZT	अहं चित्रं पश्यामि।
अहं संस्कृतं पठामि।	NK	मया संस्कृतं पठ्यते।
रामः अजां नयति।	NL	रामेण अजां नयते।
अहं चित्रं पश्यामि।	NL	मया चित्रं दृश्यते।
छात्रैः पुस्तकानि नीयन्ते।	NM	छात्राः पुस्तकानि नयन्ति।
मोहनः ग्रामम् गच्छति।	NN	मोहनेन ग्रामम् गम्यते।
विमला नाटकं पठति।	NN	विमलया नाटकं पठ्यते।
बालिकया पुस्तिका लिख्यते।	NN	बालिका पुस्तिका लिखति।
सीता जलं पिबति।	NO	सीतया जलं पीयते।
अनुसूया पत्रं लिखति।	NO	अनुसूयया पत्रं लिख्यते।
छात्रैः पुस्तकानि पठ्यन्ते।	NO	छात्राः पुस्तकानि पठन्ति।
त्वया पुस्तकं पठ्यते।	NP	त्वं पुस्तकं पठसि।
मल्लः व्यायामं करोति।	NP	मल्लेन व्यायायं कुरुते।
अहं गृहं गमिष्यामि।	NP	मया गृहं गमिष्यते।

[2018]

त्वं कुत्र गच्छसि।	BK	त्वया कुत्र गम्यते।
मया किं क्रियते।	BK	अहं किं करोमि।
त्वया पुस्तकं नीयते।	BK	सा पुस्तकं नयति।
सः दुग्धं पिबति।	BK	तेन दुग्धं पीयते।
कृष्णाः धेनुं नयति।	BN	कृष्णेन धेनुं नीयते।
त्वया किं पठ्यते।	BN	त्वं किं पठसि।
बालिका गीतं गायति।	BN	बालिकया गीतं गीयते।

[2019]

सा जलं पिबति।	(DA)	तया जलं पीयते।
मोहनः पुस्तकं पठति।	(DA)	मोहनेन पुस्तकं पठ्यते।
त्वं ग्रामं गच्छसि।भ	(DB)	त्वया ग्रामं गम्यते।
बालकः रामायणं पठति।	(DC)	बालकेन रामायणं पाठ्यते।
तेन वनं गम्यते।	(DC)	सः वनं गच्छति।
अहं पुस्तकं पठामि।	(DF)	मया पुस्तकं पठ्यते।
वयं विद्यालयं गच्छामः।	(DF)	अस्माभिः विद्यालयं गम्यते।

[2020]

त्वं पुस्तकं ददासि।	ZO	त्वया पुस्तकं दीयते।
अस्याभिः पुस्तकानि पढ्यन्ते।	ZO	वयं पुस्तकानि पठायः।
वयं हसायः।	ZO	अस्याभिः हस्यते।
रामः वनं गच्छति।	ZP	रामेण वनं गस्यते।
सिद्धार्थः गीतं गायन्ति।	ZP	सिद्धार्थेन गीतं गीयते।
रमेशः पुस्तकं पठति।	ZQ	रमेशेण पुस्तकं पठ्यते।
अहं पत्रं लिखामि।	ZQ	मया पत्रं लिख्येत।
मया ग्रामः गम्यते।	ZR	अहं ग्रामं गच्छामि।
त्वं दुग्धं पिबसि।	ZR	त्वया दुग्धं पीयते।
बालिकाभिः हस्यते।	ZT	बालिकाः हसन्ति।
बालकेन मोहनः दृश्यते।	ZU	बालकः मोहनं पश्यति।

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

संस्कृत
कक्षा-12

समय : तीन घण्टे 15 मिनट] *[पूर्णांक : 100*

***निर्देश** : प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं।*

1. निम्नलिखित गद्य खण्ड पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **5 × 2 = 10**

चन्द्रापीडोऽपि तत्रैव शिलातले, निरभिमानताम् अतिगम्भीरतां च कादम्बर्याः, निष्कारणवत्सलतां महाश्वेतायाः, अतिसमृद्धिं च गन्धर्वराजलोकस्य मनसा भावयन्, केयूरकेण संवाह्यमान चरणः, क्षणादिव क्षणदां क्षपितवान् । अथ समुद्गते सवितरि, शिलातलात् उत्थाय चन्द्रापीडः प्रक्षालितमुखकमलः कृतसन्ध्यानमस्कृतिः गृहीतताम्बूलः ''केयूरक! विलोकय, देवी कादम्बरी प्रबुद्धा वा न वा? क्व सा तिष्ठति? इत्यवोचत्। गतप्रतिनिवृत्तेन च तेन ''देव! मन्दरप्रासादस्य अधस्तात्, अङ्गणसौधवेदिकायां महाश्वेतया सह अवतिष्ठते'' इत्यावेदिते, ताम् आलोकितुम् आजगाम।

(i) प्रस्तुत गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?

(ii) चन्द्रापीडः केन संवाह्यमानचरणः, क्षणादिव क्षणदां क्षपितवान?

(iii) ''केयूरक ! विलोकय, देवी कादम्बरी प्रबुद्धा वा न वा? क्व सा तिष्ठति?'' इत्यवोचत् रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

(iv) 'महाश्वेतया' में कौन-सी विभक्ति है?

(v) 'गतप्रतिनिवृत्तेन' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।

अथवा

अथ च उदयगिरिशिखरम् आरूढे भगवति सप्तसप्तौ अग्रतः अर्धगव्यूतिमात्र एव आयातं स्कन्धावारम् अद्राक्षीत्। जवविशेषग्राहिणा इन्द्रायुधेन सत्वरम् आसाद्य, स्कन्धावारं प्रविश्य, 'क्व वैशम्पायनः' इत्यपृच्छत्। ततः ते स्कन्धावारवर्तिनः सर्वेजनाः सममेव अस्मिन् तरुतले अवतरतु तावत् देवः, ततः यथावस्थितं विज्ञापयामः'' इति न्यवेदयन्। चन्द्रापीडस्तु तेन कष्टतरेण वचसा अन्तःशल्य इव भूत्वा पुनः तान् अप्राक्षीत् ''किं वृत्तम् अस्य, येनासौ नागतः?''इति।

(i) उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?

(ii) चन्द्रापीडः स्कन्धावारं प्रविश्य किम् अपृच्छत्।

(iii) 'उदयगिरिशिखरम् आरूढे भगवति सप्तसप्तौ' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

(iv) 'इन्द्रायुधेन' में कौन-सी विभक्ति है।

(v) 'अन्तः शल्य इव भूत्वा' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।

2. अपनी पाठ्यपुस्तक के आधार पर किसी **एक** पात्र का हिन्दी में चरित्र-चित्रण कीजिए : (अधिकतम 100 शब्द) **4**

(i) कादम्बरी (ii) चन्द्रापीड (iii) चाण्डालकन्या।

3. 'बाणस्तु पञ्चाननः' उक्ति की विवेचना हिन्दी **अथवा** संस्कृत में कीजिए। (अधिकतम **100** शब्द) **4**

4. निम्नलिखित प्रश्नों का सही विकल्प लिखिए :

(अ) 'एष च दर्शनात् प्रभृति में निष्कारण बन्धुतां गतः' इति का वदति? **1**

(i) कादम्बरी (ii) महाश्वेता (iii) पत्रलेखा (iv) मदलेखा।

(आ) महाश्वेतायाः माता का आसीत्? 1

(i) विलासवती (ii) गौरी

(iii) मदिरा (iv) मदलेखा।

5. निम्नलिखित में से किसी **एक** श्लोक की हिन्दी में सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : **2 + 5 = 7**

(अ) एकातपत्रं जगतः प्रभुत्वं
नवं वयः कान्तमिदं वपुश्च।
अल्पस्य हेतोर्बहुहातुमिच्छन्
विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम्।।

(आ) तस्मिन् क्षणे पालयितुः प्रजाना-
मुत्पश्यतः सिंहनिपातमुग्रम् ।
अपाङ्मुखस्योपरि पुष्पवृष्टिः
पपात विद्याधरहस्तमुक्ता।।

6. अधोलिखित में से किसी **एक** श्लोक की सन्दर्भ सहित व्याख्या संस्कृत में कीजिए : **2 + 5 = 7**

(अ) प्रत्यब्रवीच्चैनमिषुप्रयोगे
तत्पूर्वभङ्गे वितथप्रयत्नः।
जडीकृतम्र्यम्बक वीक्षणेन
वज्रं मुमुक्षन्निव चक्रपाणिः।।

(आ) इत्थं क्षितीशेन वशिष्ठधेनु-
र्विज्ञापिता प्रीततरा बभूव।
तदन्विता हैमवताच्च कुक्षेः
प्रत्याययावाश्रममश्रमेण।।

7. कालिदास की काव्यशैली हिन्दी **अथवा** संस्कृत में लिखिए। (अधिकतम **100** शब्द) 4

8. निम्नलिखित दिये गये विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए :

(अ) नन्दिनी कस्य धेनुः अस्ति? 1

(i) दिलीपस्य (ii) वशिष्ठस्य

(iii) सुदक्षिणायाः (iv) अजस्य।

(आ) दिलीपस्य परीक्षार्थं नन्दिनी कुत्र प्रविष्टा? 1

(i) गृहे (ii) गिरिगुहायाम्

(iii) आश्रमे (iv) गौशालायाम्।

9. निम्नलिखित में से किसी **एक** अंश की हिन्दी में ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : **2 + 5 = 7**

(अ) यस्य त्वयाव्रणविरोपणमिङ्गुदीनां
तैलं न्यषिच्यत मुखे कुशसूचिविद्धे
श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितको जहाति
सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते।।

(आ) भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी,
दौष्यन्तिमप्रतिरथं तनयं निवेश्य।
भर्त्रा तदर्पितकुटुम्बभरेण सार्धं,
शान्ते करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन् ।।

10. निम्नलिखित में से किसी एक सूक्ति की सन्दर्भ सहित हिन्दी में व्याख्या कीजिए : **2 + 5 = 7**

(i) यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः।

(ii) अघप्रभृति दूरवर्तिनी ते खलु भविष्यामि।

(iii) वनौकसोऽपि सन्तःलैकिकज्ञा वयम्।

11. कालिदास का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों का नामोल्लेख कीजिए। (अधिकतम **100** शब्द) **4**

12. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर सही विकल्पों चुनकर दीजिए :

(अ) शकुन्तलया सह राजकुलं का गता? **1**

(i) अनसूया (ii) प्रियंवदा

(iii) गौतमी (iv) मेनका ।

(आ) शकुन्तलां कोऽपालयत् ? **1**

(i) वशिष्ठः (ii) कण्वः

(iii) विश्वामित्रः (iv) अगस्त्यः।

13. निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर संस्कृत में **10** पंक्तियों का निबन्ध लिखिए : **10**

(i) बाणस्तु पञ्चाननः

(ii) पर्यावरण-प्रदूषणम्

(iii) आचारः परमो धर्मः

(iv) जनसंख्या-विस्फोटः।

14. संस्कृत में उदाहरण देकर उपमा अलंकार को स्पष्ट कीजिए। **3**

अथवा

रूपक अलंकार का लक्षण लिखकर उदाहरण स्पष्ट करें।

15. अधोलिखित में से किन्हीं **चार** वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए : **4 × 2 = 8**

(i) गाँव के दोनों ओर नदी बहती है।

(ii) दुष्यन्त के साथ शकुन्तला जाती है।

(iii) ज्ञान के बिना मुक्ति संभव नहीं है।

(iv) सभी देवताओं को नमस्कार है।

(v) कवियों में कालिदास श्रेष्ठ कवि हैं।

(vi) देवदत्त अध्ययन के लिए शहर में रहता है।

16 (अ) अधोलिखित रेखांकित पदों में से किसी **एक** में नियम निर्देशपूर्वक विभक्ति का उल्लेख कीजिए : **2**

(i) पापात् निवारयति।

(ii) छात्रः अध्यापकाय द्रुह्यति।

(iii) गोषु नन्दिनी बहुक्षीरा।

(आ) 'शत्रुभ्यः क्रुध्यति वीरः' में रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है? 1

(i) चतुर्थी (ii) पंचमी

(iii) तृतीया (iv) षष्ठी

17. निम्नलिखित में से किसी **एक** पद में विग्रह कीजिए : 2

(अ) (i) पीताम्बरः (ii) उपसमुद्रम्

(iii) हरिहरौ।

(आ) 'जितेन्द्रियः' में प्रयुक्त समास का नाम है : 1

(i) बहुव्रीहिः (ii) कर्मधारयः

(iii) द्वन्द्वः (iv) तत्पुरुषः।

18. (अ) 'सच्चित्' का सन्धि विधायक सूत्र लिखिए। 2

(आ) 'षडाननः' का सन्धि-विच्छेद है : 1

(i) षड + आननः (ii) षट् + आननः

(iii) षडा + ननः (iv) ष + डाननः।

19. (अ) 'वारिणा' पद में वारि प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? 2

(आ) 'हरिभिः' पद 'हरि' प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? 1

(i) चतुर्थी विभक्ति, बहुवचन (ii) चतुर्थी विभक्ति, बहुवचन

(iii) तृतीया विभक्ति, बहुवचन (iv) पंचमी विभक्ति, बहुवचन।

20. (अ) 'नयामि' क्रियापद का पुरुष और वचन लिखिए। 2

(आ) 'ग्रह्' धातु लट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन का रूप है : 1

(i) गृह्णीतः (ii) गृह्णीयः

(iii) गृह्णीवः (iv) गृह्णीथ।

21. (अ) 'शयनम्' पद में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय है : 1

(i) शी + तुमुन् (ii) शी + ल्युट्

(iii) शी + शतृ (iv) शी + शानच्।

(आ) 'धा' धातु से क्त्वा प्रत्यय लगाने पर रूप बनेगा : 1

(i) धात्वा (ii) ध्यात्वा

(iii) धृत्वा (iv) धोत्वा।

22. अधोलिखित वाक्यों में से किसी **एक** का वाच्य परिवर्तन कीजिए : 2

(i) सा जलं पिबति। (ii) त्वं पत्रं लिखसि।

(iii) मोहनः पुस्तकं पठति।

●●